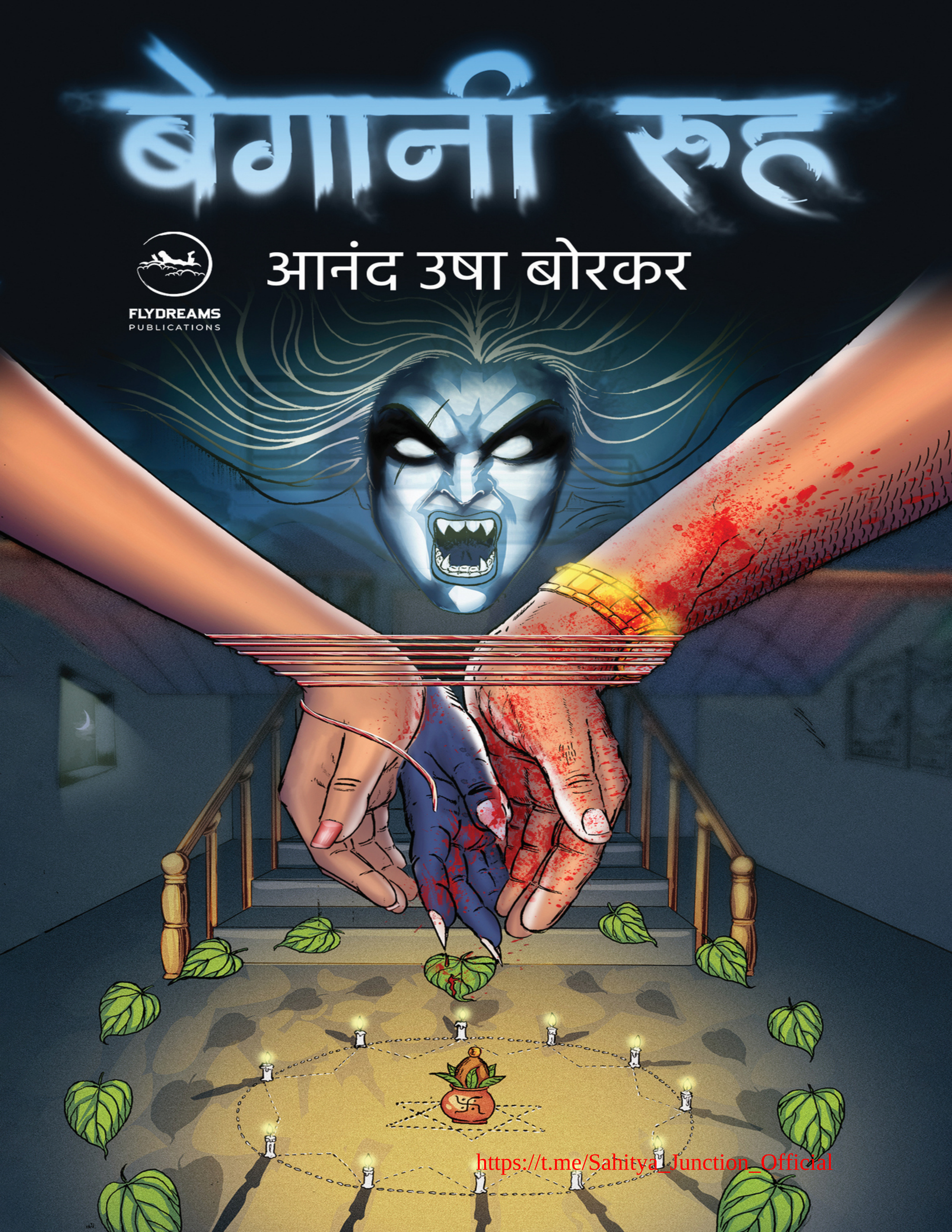
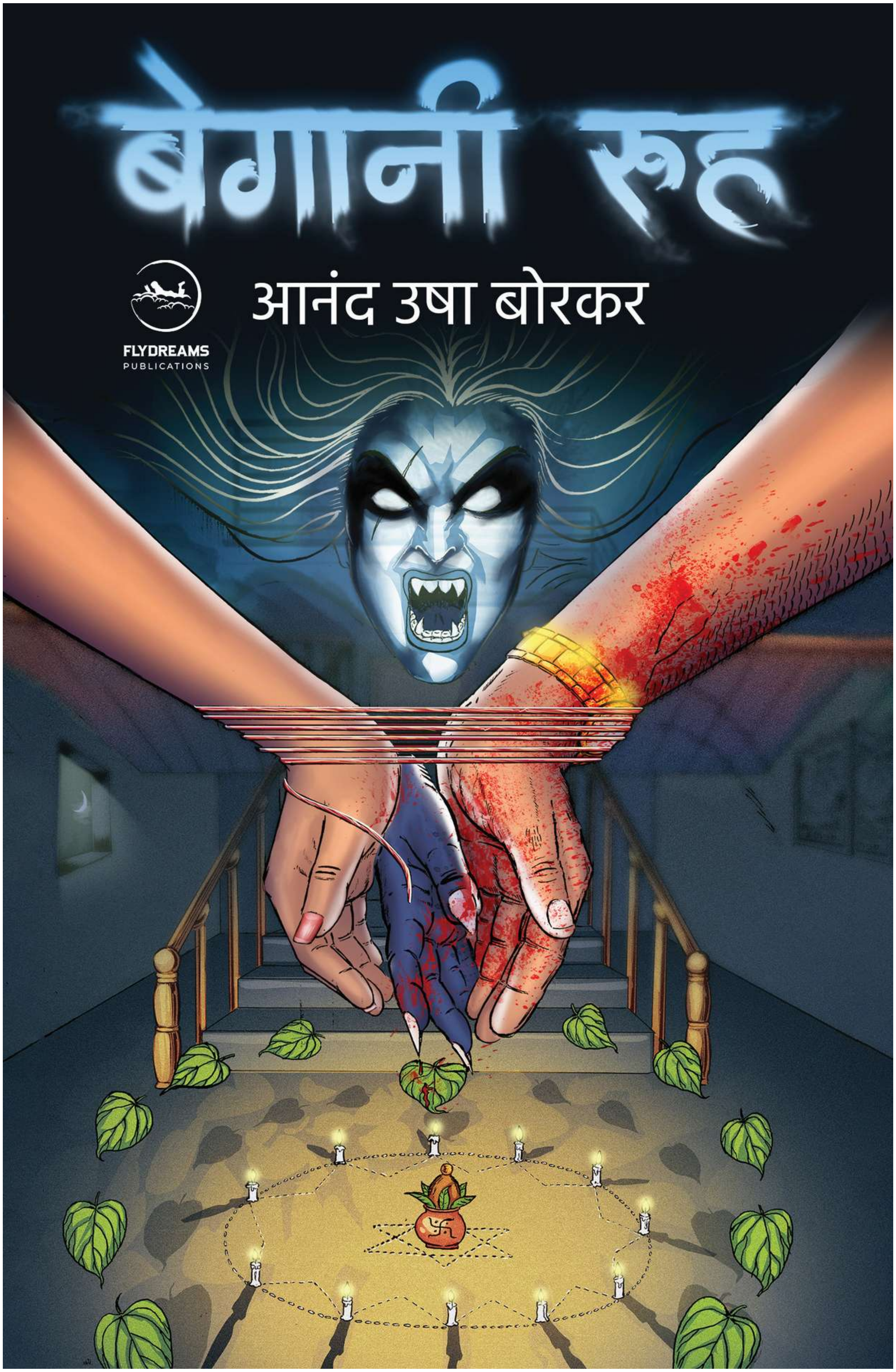

बेगानी रूह
आनंद उषा बोरकर
FLYDREAMS
PUBLICATIONS
https://t.me/Sahitya_Junction_Official


बेगानी रूह
आनंद उषा बोरकर
FLYDREAMS
PUBLICATIONS

आनंद उषा बोरकर (लेखक परिचय)



मेरा जन्म तब हुआ था, जब मेरी माँ का पुनर्जन्म हुआ था। कहते हैं जब बच्चे का जन्म होता है तब माँ का भी पुनर्जन्म होता है। तारीख थी 19 सितम्बर 1998 और जगह मध्य प्रदेश का भोपाल जिला। मैंने अपनी मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई भोपाल के यू.आई.टी. आर.जी.पी.वी. कॉलेज से पूरी की है।

वर्तमान में मैं पॉकेटएफएम के साथ पॉडकास्ट लेखक के रूप में कार्य कर रहा हूँ। पॉकेटएफएम पर मेरी 'मेघ-एक श्राप' ऑडियो बुक उपलब्ध है जो सतहत्तर घंटे, तीस मिनट (77:30) की है, जिसके लिए मुझे एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड का खिताब मिल चुका है। हाल में मेरी लिखी कहानी, 'यक्षिणी' पूरे भारत में सुनी जा रही हैं।

मुझे लिखने का शौक बचपन से था और यही शौक बना रहा। लिखते-ही-लिखते एक उपन्यास लिख दिया, जिसका नाम है 'बेवजह... एक कुर्बानी' जिसके लिए मुझे सौ इंस्पायरिंग ऑथर ऑफ इंडिया और टॉप सौ डेब्यू इंडियन ऑथर का अवार्ड भी मिल चुका है। इस किताब की ऑडियो बुक कुकूएफएम पर उपलब्ध है। स्टोरी मीरर द्वारा आयोजित कॉलेज लेवल राइटिंग कॉम्पटीशन का विजेता भी मैं रह चुका हूँ।

यह लिखने का जो गुण मिला है, वह मुझे मेरे पिता जी से मिला है। वह भी उपन्यास, नाटक, शायरी लिखा करते थे, पर कभी प्रकाशित नहीं करा पाए। अब वही सपने मैं सच कर रहा हूँ।

बेवजह...एक कुर्बानी के बाद मौका मिला *जिन्दगी एक सफर, बन्द लिफाफे, कवियों का मंथन, जिन्दगी... एक सफर 2, आई एम नॉट इन स्टोरीस ऑनली, द पेनिंग थॉट, अलफाज, रूबरू, मॉय सुपर हीरो डैड, जिन्दगी... एक सफर 3* और *लफ्जों का कारवां* किताब में हिस्सा बनने का जिसमें मेरी भी कुछ रचनाएँ दर्ज हैं।

लिखने के साथ-साथ मैं एक सामाजिक संस्था एन.एस.बी.एन. दिशांजलि के साथ भी जुड़ा हुआ हूँ। जिस तरह जिन्दगी का सफर जारी है, मेरे भी लिखने का सफर जारी है। जब तक दिल में आगोश और कलम में सरफरोश है, लिखते रहूँगा।

आनंद उषा बोरकर

बेगानी रूह

FLYDREAMS
PUBLICATIONS

~ मेरे पिताजी को समर्पित ~

मेरे चेहरे की मुस्कान है मेरे पापा
मेरे दिल की धड़कन है मेरे पापा
मैं कहता नहीं कभी उनसे पर
मेरी जिन्दगी की जान है मेरे पापा

आभार

एक किताब लिखना जितना आसान होता है, उससे कहीं ज्यादा मुश्किल होता है आभार व्यक्त करना, क्योंकि जिन्दगी में कई लोग हैं जो समय-समय पर मुझको हौसला और लिखने की प्रेरणा देते रहते हैं।

पहला शुक्रिया उस दोस्त का जिसने ख्वाब देखना नहीं बल्कि उस ख्वाब को हकीकत में तबदील करना सिखाया। शुक्रिया अमित साहू जिसने जिन्दगी के हर उस मोड़ पर मेरा साथ दिया जब मेरी परछाईं ने भी अंधेरे में मेरा साथ छोड़ दिया था। पात्रों का नाम रखना हो या किताब का, सारी प्रक्रिया इनके हाथों से ही होकर गुजरती है। अगर यह नहीं होते तो शायद, न ही ये किताबें होतीं और न ही यह जिन्दगी।

शुक्रिया विराट सिंह का जिसने मुझे तब सहारा दिया जब मुझे सहारे कि सख्त जरूरत थी। विराट जैसे दोस्त ऊपर वाला सबको दे।

शुक्रिया रूपम पराते और करण भिड़े का, जिन्होंने मुझे दोस्ती का अर्थ सिखाया।

शुक्रिया मेरी प्यारी बहन संध्या बोरकर का, जो मेरी हर कहानी को बड़े चाव से पढ़ती है और अगली कहानी आने का इंतजार करती है।

एक शुक्रिया पंकज कटरे का जो मुझे नयी-नयी जगह घुमाने ले जाता है जहाँ पर मेरी मुलाकात मेरी कहानियों से होती है।

अब सबसे अहम शुक्रिया फ्लाइड्रीम्स पब्लिकेशन्स की टीम का जिनके सहयोग के बिना यह कहानी कभी किताब का रूप नहीं ले पाती। शुक्रिया जयंत सर, ब्रजेश सर, अनुराग सर और अफजल सर का।

एक आखिरी शुक्रिया उस शख्स का जो कभी थी, शायद हमेशा रहेगी – साक़ी।

प्राक्कथन

कहानियाँ जो हम सब के पास होती हैं पर कुछ कहानियाँ ऐसी होती हैं जिसे हम बयान नहीं कर पाते। यह कहानी भी उन्हीं कहानी में से एक है। इस कहानी को बयान करना बहुत मुश्किल था, इसलिए इस कहानी को एक किताब का रूप देकर मैं आपके पास पहुँचा रहा हूँ।

यह कहानी है, विराट और नित्या की जिसमें नित्या के शरीर में एक बेगानी रूह ने अपना वास बनाया था जो उसके शरीर पर दिन-ब-दिन हावी होती जा रही थी। उसने नित्या को पूरी तरह अपने वश में कर लिया था। उसी बेगानी रूह ने विराट के कई अपनों की जान ली थी।

विराट, नित्या को जानते हुए भी उसके बारे में कुछ नहीं जानता। बिना नित्या के बारे में कुछ जाने विराट एक ऐसी बेगानी रूह को मुक्ति दिलाने निकल पड़ता है, जिसके अंजाम से वह वाकिफ था कि इस काम में वह अपनी जान से भी हाथ धो सकता है। फिर भी नित्या को उस बेगानी रूह से मुक्ति दिलाने के लिए विराट अपनी जान को खतरे में डालता है, क्योंकि प्यार इसी को कहते हैं, जिसमें आपको अपनी जान से ज्यादा अपने महबूब की जान प्यारी होती है।

आखिर किसे कहते हैं बेगानी रूह? और क्या चाहती है ये बेगानी रूह? क्या-क्या राज दफन है विराट और नित्या की इस बेगानी प्रेम कहानी में? जानने के लिए पढ़े बेगानी रूह… एक बेगानी प्रेम कथा।

तारीख 10 फरवरी 2016, रात 2 बजे

अमावस्या की काली रात में, एक लड़की जंगल के बीचोबीच अपनी पूरी जान लगाकर भाग रही थी। उसके पैर थमने का नाम नहीं ले रहे थे। उसके फटे कपड़े और उन पर लगे खून के धब्बों को देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे वह किसी से अपनी जान बचाकर भाग रही थी।

पर किससे? उसके पीछे तो कोई नहीं था, सिवाय डरावनी आवाजों के। ऐसी डरावनी आवाजें जिन्हें सुनकर किसी के भी दिल में खौफ़ पैदा हो जाए।

लड़की जैसे-जैसे भागती जा रही थी, ये डरावनी आवाजें और तेज होती जा रही थी, जैसे ये उसका पीछा कर रही हों। भागते-भागते लड़की की साँसें फूलने लगी, फिर भी वह रुकने का नाम नहीं ले रही थी, जैसे उसे पता हो कि यदि वह रुकी तो कोई हैं जो उसे मार देगा।

लड़की हाँफते-हाँफते, लड़खड़ाते हुए भाग ही रही थी कि तभी उसके पीछे से एक आदमी की डरावनी आवाज सुनाई दी।

“रुक जाओ एंजल! तुम मेरी हो, सिर्फ मेरी! तुम्हें मुझसे कोई अलग नहीं कर सकता। तुम्हारे जिस्म पर सिर्फ मेरा हक है, सिर्फ मेरा!”

यह डरावनी आवाज सुनकर लड़की सहम गयी। उसके रोंगटे खड़े हो गए। वह जहाँ पर थी वही पर रुक गई। वह पसीने से पूरी तरह भीग चुकी थी। वह डरते हुए धीरे-धीरे पीछे मुड़ने लगी।

आज अमावस्या की रात थी, यानी कृष्ण पक्ष की आखिरी रात, जिसे निशाचरी रात भी कहा जाता है। हमारी पृथ्वी पर दो तरह के इंसान होते हैं; एक अच्छे, दूसरे बुरे। ठीक उसी प्रकार, हमारी पृथ्वी पर दो तरह की शक्तियों का वर्चस्व होता है; एक देव, दूसरी दैत्य। वर्ष के मान से उत्तरायण में और माह के मान से शुक्ल पक्ष में, देव शक्तियाँ अधिक सक्रिय रहती हैं। ठीक उसी प्रकार, दक्षिणायन और कृष्ण पक्ष में, दैत्य शक्तियाँ अधिक सक्रिय रहती हैं। जिस समय दैत्य शक्तियाँ अधिक सक्रिय रहती हैं, उस समय मनुष्य में भी दानवी प्रवृत्ति का असर बढ़ जाता है, इसलिए कहा जाता है कि अमावस्या को देर रात घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए।

जब लड़की ने पीछे मुड़कर देखा तो सिवाय सुनसान जंगल के उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। लड़की वापस दौड़ने लगी। भागते-भागते लड़की के पैर के तलवों से खून निकलने लगा था, फिर भी वह रुकने का नाम नहीं ले रही थी।

वह डरावनी आवाज बार-बार उसे पीछे से सुनाई दे रही थी, “रुक जाओ, एंजल! रुक जाओ! तुम सिर्फ मेरी हो! तुम चाहकर भी मुझसे दूर नहीं भाग सकती। मैं तुम्हें ढूँढ लूँगा। तुम सिर्फ मेरी हो, सिर्फ मेरी!”

लड़की न दायें देख रह थी, न बायें; न ही वह इस आवाज पर ध्यान दे रही थी। वह सीधे-सीधे जंगल के सन्नाटे को चीरते हुए भागती जा रही थी।

सुनसान सड़क के अगल-बगल तीस किलोमीटर तक घना जंगल फैला हुआ था। ऐसे सन्नाटे में सुनाई दे रही थी तो सिर्फ जंगली जानवरों और भेड़ियों के चिल्लाने की आवाजें। सड़क के ऊपर काले बादलों के साये मंडरा रहे थे, जिन्हें देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे काले बादलों के साये ने सड़क को जकड़ रखा हो और ये काले बादल, और कोई न हो, बल्कि दैत्य आत्माएँ हों।

जितनी रफ्तार से लड़की भाग रही थी, उससे कई गुना ज्यादा रफ्तार से एक कार सुनसान सड़क पर भाग रही थी। सड़क पर कार हवाओं से बातें कर रही थी। करती भी कैसे नहीं, आखिर लाल रंग की फरारी जो थी।

फरारी की स्पीड करीब नब्बे किलोमीटर प्रति घंटे थी। फरारी को एक नौजवान लड़का चला रहा था, जिसकी उम्र उन्नीस वर्ष थी। उस लड़के के एक हाथ में फरारी की स्टेयरिंग थी तो दूसरे हाथ में मैकेलन की बोतल।

‘तुम साथ हो, या न हो, क्या फर्क है... बेदर्द थी... ज़िंदगी, बे...दर्द... है...’

अरिजीत सिंह की यह आवाज फरारी के अंदर लगे स्पीकर से आ रही थी, जो फरारी के अंदर गूँज रही थी।

यह गीत लड़का भी गुनगुना रहा था। वह शराब के नशे में इतना धुत्त था कि उसे यह भी नहीं पता था कि उसने पैरों में सिर्फ मोजे पहने थे, जूते नहीं।

“बेदर्द थी, जिन्दगी… बेदर्द है…” कहते हुए वह गाने की आवाज बढ़ाने के लिए नीचे झुका।

जब आवाज बढ़ाकर वह ऊपर उठा तो अचानक से उसे एक काला साया कार के बिल्कुल सामने से गुजरता हुआ दिखाई दिया। कहीं वह साया उसकी कार से न टकरा जाए इसलिए उसने जोर से ब्रेक लगाया। जैसे ही उसने ब्रेक लगाया, धड़ाम से आवाज आई। वह साया उसकी कार से टकरा गया।

“अरे!” लड़के ने अपने सिर पर हाथ रखते हुए कहा, “ये क्या हुआ?”

लड़का कार से बाहर निकला और नशे की हालत में लड़खड़ाते-लड़खड़ाते उस काले साये के पास गया। जब वह उस काले साये के पास पहुँचा तो उसने देखा, वह काला साया एक लड़की थी। उसकी कार से एक लड़की का एक्सीडेंट हो चुका था।

लड़का मन-ही-मन सोचने लगा, 'यह मुझसे क्या हो गया? ये मैंने क्या कर दिया?' वह बहुत डर गया था। डर के मारे उसके हाथ-पैर कँपकँपाने लगे थे।

लड़की कार से टकराकर कार के पास ही गिर गयी थी। उसके सिर से खून बहे जा रहा था।

लड़का धीरे-धीरे लड़की के करीब गया। जब वह लड़की के पास पहुँचा तो उसने देखा, लकड़ी के बाल लम्बे थे, जो उसके चेहरे पर बिखरे हुए थे, जिस कारण लड़के को उसका चेहरा नहीं दिख रहा था। लड़की ने सफेद सूट पहना हुआ था जिस पर खून के धब्बों के निशान थे। लड़की का सूट पसीने से भी भीगा हुआ था।

लड़का चारों तरफ देखकर सोचने लगा, 'यह लड़की इतनी रात में अचानक कार के सामने कहाँ से आ गई? और यहाँ पर क्या कर रही थी? यहाँ आस-पास तो कोई घर भी नहीं है। दूर-दूर तक सिर्फ जंगल फैला हुआ है। यह किसी से जान बचाकर भाग रही थी या क्या कर रही थी? कुछ समझ नहीं आ रहा है।'

लड़का आस-पास देखने लगा कि कहीं कोई है या नहीं, पर वहाँ पर उसे कोई दिखाई नहीं दिया। सड़क पर गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। वह सोचने लगा, 'इससे पहले मुझे कोई देखे, मुझे यहाँ से निकल जाना चाहिए, वरना मैं मुसीबत में पड़ सकता हूँ।'

लड़का वापस जाकर अपनी कार में बैठ गया। वह कार चालू करने ही वाला था कि तभी उसे 'हेल्प मी... हेल्प मी...' की आवाज सुनाई दी।

"यह आवाज कैसी है! कहीं मैंने ज्यादा पी ली, इस वजह से मेरे कान तो नहीं बज रहे हैं।" लड़के ने खुद से कहा।

उस आवाज़ की तरफ ध्यान न देकर, लड़का वापस अपनी कार चालू करने लगा, पर जैसे ही उसने कार चालू की, उसे फिर से 'हेल्प मी, हेल्प मी!' की आवाज सुनाई दी।

"यह आवाज तो बाहर से आ रही है। पर बाहर तो वो..." बड़बड़ाते और डरते हुए लड़का कार से बाहर निकला।

उसने देखा, आवाज उस लड़की के पास से आ रही थी जिसका कार से एक्सीडेंट हुआ था। लड़की की साँसें अभी भी चल रही थीं। उसके होंठ अभी भी कुछ फुसफुसा रहे थे जिसकी आवाज लड़के के कानों तक आ रही थी।

लड़का अभी लड़की के पास पहुँचा ही था कि बादल जोर-जोर से गरजने लगे, जैसे संकेत दे रहे हो कि दैत्य आत्माओं को अमावस्या की रात, उनका शिकार मिल गया था। वे सारी शैतानी ताक़तें, जो काले बादलों के रूप में आसमान में मंडरा रही थीं, बारिश की बूँदों का रूप लेकर धरती पर आने लगें।

मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी। बारिश की बूँदें एक-एक करके उस लड़की के शरीर पर गिरने लगी थीं।

जब लड़का, लड़की को उठाने के लिए नीचे झुका और उसे हाथ लगाया ही था, तभी आसमान में जोर से बिजली चमकी जिसकी रोशनी से कुछ पल के लिए ऐसा लगा जैसे सवेरा हो गया हो। लड़का भी यह सब देखकर कुछ पल के लिए चौंक गया था। लड़के ने लड़की को उठाया और कार में लाकर बैठा दिया। इससे पहले कोई उसे देख पाता, लड़का लड़की को लेकर वहाँ से चला गया था।

👻 👻 👻 👻 👻

भाग ०१
तलाश

तारीख 05 अगस्त 2017, रात 01 बजे

बंगाल के 'वादी-ए-हुसैन' श्मशान में, विराट न जाने क्या कर रहा था। उसकी आँखें बता रही थी कि वह किसी की तलाश कर रहा था, पर किसकी? वह भी इतनी रात को? जहाँ पर लोग दिन में जाने से घबराते थे, वह रात में वहाँ पर क्या कर रहा था? वह श्मशान में करीब आधे घंटे से चल रहा था। उसकी लड़खड़ाती हुई चाल बता रही थी कि वह पूरी तरह थक गया था पर वह रुकने का नाम नहीं ले रहा था। शायद वह किसी को ढूँढ़ रहा था?

वह श्मशान से गुजर ही रहा था तभी उसे एक चिता जलती हुई दिखाई दी। उस चिता के पास कोई नहीं खड़ा था। शायद, वक्त की कमी के कारण उसके अपने उसे अकेला ही जलता छोड़ गये थे।

कितनी मतलबी है न यह दुनिया, ना जीते जी लोगों के पास किसी के लिए वक्त होता है, न ही उनके मरने के बाद।

श्मशान में तेज हवाएँ चल रही थी। अगर एक पत्ता भी हिलता तो ऐसा लगता जैसे कोई फुसफुसा रहा हो।

विराट आगे बढ़ा ही था कि उसने देखा, उसके सामने एक स्त्री ध्यान में बैठी हुई थी। वह स्त्री एक बड़े से पत्थर पर बैठी थी। उसके चारों तरफ कंकाल की खोपड़ियाँ रखी हुई थी। स्त्री ने काले रंग का सूट और माथे पर एक बड़ा सा काले रंग का टीका लगाया हुआ था।

स्त्री ने ध्यान में रहते हुए कहा, "जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो, वह मैं नहीं हूँ।"

विराट यह सोचकर हैरान हो गया था कि उस स्त्री को उसकी मौजूदगी का कैसे पता चला, उसकी आँखें तो बंद थी?

विराट इस गुत्थी को सुलझा पाता, इससे पहले ही उस स्त्री ने अपने दायें हाथ से बायीं तरफ इशारा करते हुए कहा, "जिसे तुम ढूँढ रहे हो, वह तुम्हें वहाँ पर मिलेगी।"

विराट स्त्री के बताए हुए रास्ते की तरफ जाने लगा। करीब पन्द्रह मिनट चलने के बाद अचानक से उसे सकारात्मक शक्तियों की अनुभूति होने लगी।

विराट कुछ देर पहले डर के मारे काँप रहा था पर अब वह निडर होकर चल रहा था। श्मशान में यदि एक तरफ घना अंधेरा था तो दूसरी तरफ जगह-जगह पर रोशनी के लिए कुछ स्तंभ लगे हुए थे। उन्हीं रोशनी के स्तंभ के सहारे विराट आगे बढ़ रहा था।

करीब पांच मिनट और चलने के बाद उसने देखा, उसके सामने एक स्त्री एक बड़े से पत्थर के ऊपर बैठी हुई थ, जिसकी उम्र अट्ठाईस वर्ष थी। उसने सफेद रंग का सूट और गले में सफेद मोतियों की माला पहनी हुई थी। माला के हर एक मोती के ऊपर ॐ लिखा हुआ था। उसके माथे पर चंदन का गोल टीका लगा था।

इससे पहले जो स्त्री उसे मिली थी, वह इस स्त्री से बिलकुल विपरीत थी। पहली वाली स्त्री को देखकर लगता था कि वह राक्षसों की पूजा करती थी और यह स्त्री देवताओं की।

इस स्त्री के सामने पच्चीस वर्ष की एक लड़की, भगवा रंग की चादर के ऊपर बैठी थी। उस लड़की के बाल खुले और बिखरे हुए थे। वह लड़की कभी दायें तो कभी बायें होते हुए बार-बार हिल रही थी और जोर-जोर से चीखे जा रही थी। वह कह रही थी, "छोड़ दो मुझे... छोड़ दो...।"

हैरान करने वाली बात यह थी कि उस लड़की को किसी ने पकड़ कर नहीं रखा था, तो फिर वह किससे कह रही थी कि छोड़ दो मुझे। उस लड़की की आवाज आदमियों की आवाज की तरह निकल रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे उस लड़की के अंदर कोई प्रेत आत्मा समाई हुई थी।

उस स्त्री ने लड़की से कहा, "बहुत सता लिया तुने इस लड़की को, अब इसको छोड़ दे वरना...।"

"नहीं... नहीं छोड़ूँगा... यह मेरी है... मुझे इससे कोई अलग नहीं कर सकता।" उस लड़की ने आदमियों की आवाज में कहा।

"तो तू नहीं मानेगा...? इस लड़की का शरीर छोड़कर नहीं जाएगा...?" उस स्त्री ने गुस्से में पूछा।

"नहीं! मैं इसका शरीर छोड़कर कभी नहीं जाऊँगा, अब यही मेरा घर है इसे मुझसे अब कोई अलग नहीं कर सकता।" इतना कहकर वह लड़की और जोर-जोर से चीखने लगी। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उसके जिस्म को कोई नोच रहा हो।

स्त्री ने अपने दोनों हाथों को जोड़ते हुए कहा, "हे ईश्वर! इस मासूम की रक्षा करो... इसे इस दुष्ट आत्मा से बचाओ।"

स्त्री ने बाएँ हाथ की मुट्ठी बाँधते हुए कहा।

"ॐ पूव्रकपिमुखाय पच्चमुख हनुमते, सकल शत्रु सहंरणाय।।"

जैसे ही मंत्र खत्म हुआ, स्त्री ने अपनी बंद मुट्ठी उस लड़की पर फूँक दी।

लड़की जोर-जोर से चीखने लगी। उसकी चीख आसमान में गूँजने लगी थी। स्त्री ने तीन बार मंत्र पढ़कर लड़की पर फूँका और वह लड़की शांत हो गयी। लड़की अब हिल तक नहीं पा रही थी, न ही कुछ बोल रही थी। उस लड़की को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उसके अंदर जान न हो।

स्त्री अपनी जगह से उठी और भगवा रंग की चादर को उस लड़की पर डाल दिया। चादर से लड़की पूरी तरह ढक गयी थी। जब स्त्री ने दोबारा मंत्र पढ़ना शुरू किया तब लड़की फिर से जोर-जोर से चिल्लाने लगी। लड़की ऐसे तड़प रही थी, जैसे कोई उसे गरम-गरम लोहे के सरिये लसा रहा था। तभी वह चादर अपने आप बीच में से धीरे-धीरे फटने लगी। एक काला साया धुएँ की तरह उसमें से निकला और आसमान की तरफ चला गया।

इसके बाद लड़की शांत हो गयी और बेहोश होकर जमीन पर गिर गयी। वह स्त्री जिस बड़े पत्थर पर बैठी थी, वापस जाकर उस पर बैठ गयी।

विराट यह सब देखकर बहुत डर गया था, फिर भी वह बड़ी हिम्मत से उस स्त्री से पूछता है, "क्या आपका नाम सौम्या है?"

"बड़ा अजीब सवाल है यह तो! जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो, यह भी नहीं जानते कि वह कैसी दिखती है...? हाँ, मेरा ही नाम सौम्या है। तुम कौन हो?" उस स्त्री ने पूछा।

"मैं विराट हूँ, मुझे आपकी मदद चाहिए।"

"यहाँ सभी मदद ही माँगने आते हैं। कहो, क्या मदद कर सकती हूँ मैं तुम्हारी?"

"मेरी मदद करने के लिए आपको मेरे साथ चलना होगा।"

"माफ करना मुझे, पर मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकती। इससे पहले कई लोग यहाँ आये और मुझे अपने साथ ले गये, पर डर के मारे खुद अपनों को अकेला छोड़कर भाग गये।" सौम्या ने कहा।

"पर मैं उनमें से नहीं हूँ, जो मुसीबत के वक्त अपनों को अकेला छोड़ देते हैं... मुझे किसी भी कीमत पर मेरी नित्या की जान बचानी है, चाहे उसके लिए फिर मुझे मेरी जान ही क्यों न देनी पड़े...। मुझे जानना है, मेरी नित्या के अंदर किसकी रूह है और वह क्यों नित्या के पीछे पड़ी है?"

"जिन रूहों के बारे में तुम जानना चाहते हो, उस दुनिया के बारे में जानना आसान नहीं है...! न वहाँ पर तुम्हें कुछ दिखाई देगा, ना ही कुछ सुनाई देगा...! बस, हर पल डर सताता रहेगा। वे तुम्हें हर वह तकलीफ देंगे जो तुमने कभी सपने में भी नहीं सोची होगी। तुम्हारे अपनों को तुम्हारे सामने इतना सतायेंगे कि तुम खुद उन्हें, उन आत्माओं के साथ छोड़कर भाग जाओगे।"

“नहीं! मैं अपनी नित्या का साथ कभी छोड़कर नहीं जाऊँगा, चाहे मेरी जान ही क्यों न चले जाए। भले ही मैंने उसके साथ सात फेरे न लिए हो पर उसके साथ सात जन्मों तक जीने मरने का वादा जरूर किया है।”

“वादा...? वह तो दिख ही रहा है, तुम्हारे पैर जो इतने कंप-कंपा रहे हैं। डर तुम्हारी निगाहों में साफ-साफ दिख रहा है।” सौम्या ने विराट के पैरों की तरफ देखते हुए कहा।

“हाँ, डर लगता है मुझे पर मरने से नहीं... डर लगता है कि कहीं मैं उसे खो न दूँ... डर लगता है कि कहीं उसे कुछ हो न जाए... डर लगता है कि कहीं हम जुदा न हो जाए।” विराट ने सौम्या के सामने हाथ जोड़ते हुए कहा, “मैं बहुत दूर से आया हूँ, इस उम्मीद के साथ कि आप मेरी मदद करोगी। प्लीज! मेरी मदद कीजिए।”

“कहाँ से आए हो तुम?” सौम्या ने विराट कि आँखों में देखते हुए पूछा।

“राजस्थान के दबकन से आया हूँ मैं। मुझे पण्डित वेदव्यास जी ने भेजा है और उन्होंने ही आपका पता बताया था।”

“क्या कहाँ? पण्डित वेदव्यास जी ने!” सौम्या ने चौंककर कहा।

कुछ पल के लिए सौम्या चुप हो गयी, ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने अतीत की यादों में खो गयी थी। पता नहीं उसने अपने अतीत की यादों में क्या देखा। उसने कुछ सोचा और अगले ही पल वह विराट के साथ चलने के लिए राज़ी हो गयी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 05 अगस्त 2017, सुबह 10:30 बजे

विराट और सौम्या स्टेशन पर खड़े हुए थे। स्टेशन पर बहुत भीड़ थी जिस कारण बहुत शोर हो रहा था। वह दोनों आपस में ज्यादा कुछ बाते नहीं कर पा रहे थे। दोनों खड़े ही थे कि तभी उनकी ट्रेन की अनाउन्स्मेन्ट होती है।

"यात्रीगण कृपया ध्यान दे, गाड़ी संख्या एक, तीन, शून्य, दो, सात हावड़ा-जोधपुर एक्सप्रेस कुछ ही देर में प्लेटफार्म नम्बर एक पर आने वाली है।"

अनाउन्स्मेन्ट होने के कुछ ही देर बाद उनकी ट्रेन, स्टेशन पर आकर रुक गयी। दोनों ट्रेन के अंदर जाकर बैठ गये।

सौम्या खिड़की के पास बैठी और विराट उसके सामने बैठा हुआ था। सौम्या के बगल में एक पोटली रखी हुई थी, जिसमें उसका सामान रखा था। वह पोटली भगवा रंग की थी और उसके ऊपर स्वस्तिक का चिह्न बना हुआ था। उस पोटली को देखकर ऐसा लग रहा था कि उसमें कुछ कीमती सामान रखा हुआ था।

विराट, सौम्या के सामने बैठकर उसके चेहरे पर दायीं आँख के पास बने, काले गहरे गोल निशान को देखे जा रहा था। वह निशान काफी गहरा था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी चीज के छींटे हो। उस निशान ने सौम्या के चेहरे की खूबसूरती बिगाड़ दी थी।

सौम्या हमेशा उस निशान को अपनी जुल्फों से छुपाकर रखती थी, पर इस वक्त उसका ध्यान स्टेशन पर लगी भीड़ पर था। जब सौम्या को लगा कि विराट उसका निशान देख रहा है तो सौम्या ने वापस से अपनी जुल्फों से वह निशान छुपा लिया।

"पण्डित वेदव्यास जी ने तुम्हें मेरे पास क्यों भेजा? उनके पास भी तो दैवीय शक्ति है, वह तो मुझसे भी ज्यादा अच्छे तरीके से बुरी शक्तियों से लड़ सकते हैं। मेरी शक्तियाँ उनके सामने कुछ नहीं है।" सौम्या ने विराट की तरफ देखते हुए कहा।

"यह सब तो मुझे नहीं पता कि पण्डित वेदव्यास जी ने मुझे आपके पास क्यों भेजा पर उन्होंने इतना कहा था कि अब सही वक्त आ गया है, सौम्या को बुलाने का। और हाँ, यह भी बताया था कि नित्या के अंदर जो रूह है वह बहुत ताक़तवर है, वह अघोरिय प्रवृत्ति की रूह है। मतलब, उसके पास चुड़ैल, डायन, पिशाच, नरपिशाच, भूत, दैत्य, ब्रह्मपिशाच जैसी, और कई शैतानी ताक़तें है।"

"क्या कहा? अघोरिय प्रवृत्ति की!" सौम्या ने चौंककर कहा।

फिर से सौम्या अपने अतीत की यादों में खो गयी।

सौम्या ने थोड़ी देर बाद कहा, “हाँ, शायद अब वक्त आ गया है पुराने ज़ख्मों को भरने का।”

“आप कैसे जानती है पण्डित वेदव्यास जी को?” विराट ने उत्सुकता से पूछा।

“यह सब छोड़ो तुम। पहले तुम, अपने और नित्या के बारे में मुझे बताओ, मुझे तुम्हारी परेशानी जाननी है, तभी मैं तुम्हारी मदद कर पाऊँगी।” सौम्या ने विराट की बातों को काटते हुए कहा।

“ठीक है, मैं आपको बताता हूँ।”

विराट के इतना कहते ही ट्रेन स्टेशन से रवाना हो गयी।

* * *

मेरे बचपन के बारे में ज्यादा कुछ तो याद नहीं पर जब भी बचपन के बारे में याद करता हूँ तो बस एक बच्चा और एक बच्ची याद आते हैं, जिनकी उम्र लगभग बारह साल थी। उस बच्ची के लम्बे-लम्बे बाल थे और वह नीले रंग की फ्रॉक पहने हुई थी। वह बच्चा और बच्ची दोनों एक नदी के पास थे। वहीं पर एक बड़ा सा बरगद का पेड़ भी था, जिससे रस्सी का एक झूला बँधा हुआ था। उसी झूले पर वह बच्ची झूला झूलती और वह बच्चा उसे झूला झुलाता। उस बच्ची की हँसी बार-बार मेरे कानों में गूँजती रहती है।

वह बच्ची उस बच्चे से कहती है, “और तेज राज... और तेज झुला दो...”

और वह बच्चा कहता, “निमू! इससे तेज नहीं दे सकता।”

बस, बचपन का एक यही सपना है जो मुझे आज तक याद है और हमेशा यही सपना मुझे दिखता है। मुझे तो यह भी नहीं पता, सपने में जो बच्चा मुझे दिखता है, वह मैं हूँ या कोई और? मुझे कभी उन दोनों बच्चों का चेहरा नहीं दिखा, हर बार मैं उन्हें सपने में पीछे से देखता हूँ।

जब मेरा जन्म हुआ, उसी वक्त मेरी माँ की मृत्यु हो गयी। मैं जब थोड़ा बड़ा हुआ, तब पापा ने मुझे हॉस्टल में भेज दिया। वहाँ पर वे महीने में एक बार मुझसे मिलने आ जाया करते थे, शायद यह याद दिलाने कि वे ज़िन्दा है और मेरा इस दुनिया में एक पिता भी है। माँ के बचपन में ही गुजर जाने और पापा का अपने कामों में व्यस्त हो जाने के कारण, प्यार क्या होता है यह मुझे नहीं पता। हाँ, नफरत किसे कहते हैं, यह जरूर पता चल गया था। इससे गहरा रिश्ता हो गया था मेरा।

हॉस्टल में एक दोस्त भी मिला था मुझे, जिसने मेरे दिल में थोड़ी-सी मुहब्बत जगा रखी थी। करण! ‘करण भिड़े’ नाम था उस दोस्त का। दोस्त कहना गलत होगा, असल में वह भाई था मेरा।

करण अनाथ था। जब कभी मैं अपने पापा पर गुस्सा करता या भगवान को कोसता था, तो वह हमेशा कहता, "तुम्हें तो भगवान का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि तुमने अपने माता-पिता को देखा तो है, मुझे तो मेरे माता-पिता का नाम भी नहीं पता।"

करण हमेशा मेरा ख्याल रखता था। हॉस्टल में मेरे लिए खाना लेने की लाइन में वही लगता था। मेरी सारी शरारतों के इल्ज़ाम अपने ऊपर ले लेता था। जब मुझे बुखार होता था तो पापा फोन करने पर भी नहीं आते थे, तब करण रातभर जागकर मेरा ख्याल रखता था। हाँ, पापा पैसे समय-समय पर भेज देते थे। भेजते भी कैसे नहीं, हमारा हीरो का व्यापार जो था। जो धीरे-धीरे काफी बढ़ गया था, पापा ने विदेशों में भी व्यापार करना शुरू कर दिया था।

मैं अठारह साल का हुआ ही था कि पापा की एक सड़क हादसे में मौत हो गयी। पापा के गुजर जाने के बाद करण ने ही मुझे सँभाला था।

पापा का व्यापार काफी बड़ा था इसलिए मुझे पापा का व्यापार सँभालने के लिए अपनी आगे की पढ़ाई और हॉस्टल छोड़ना पड़ा। करण व्यापार में भी मेरी मदद करने लगा। वह मेरी कम्पनी का मैनेजर बन गया था। सच तो यह था कि मैं तो बस नाम मात्र का मालिक था, पूरी कम्पनी का ज़िम्मा तो करण ने अपने सिर पर उठाकर रखा था। हाँ, कुछ काम मैं भी कर लेता था, जैसे कागज़ों पर दस्तख़त करना।

पापा का व्यापार सँभालने के साथ-साथ मैंने उनकी कुछ बुरी आदतें भी अपना ली थी, जैसे शराब पीना, सिगरेट पीना, देर रात तक घर आना, और भी बहुत कुछ...। पर हाँ, कभी किसी लड़की को गलत नज़र से नहीं देखा, न छेड़ा, भले ही कितने भी नशे में रहता पर नारी को हमेशा देवी की तरह पूजता।

करण ने मुझे कई बार टोका की सिगरेट, शराब पीना बंद कर दूँ। इसी बात पर कई बार हमारे बीच झगड़े भी हुए पर मैं कहाँ किसी की सुनने वाला था। शराब और सिगरेट की लत धीरे-धीरे और बढ़ने लगी थी।

मैं करता भी तो क्या करता, मेरी जिंदगी में तन्हाइयाँ बहुत थी और उन्हीं तन्हाइयों को मिटाने की ज़िम्मेदारी शराब और सिगरेट ने ले रखी थी। जिंदगी में सिर्फ दर्द ही दर्द भरा हुआ था। देर रात तक ऑफिस में काम करना और घर लौटते वक्त शराब पीना यह आदत बन गयी थी मेरी। मुझे तनहाइयाँ पसंद आने लगी थी। इन तन्हाइयों से अब अपनापन सा लगता था।

तन्हाइयों में ही रहने के लिए मैंने दबकन शहर से चालीस किलोमीटर दूर एक बँगला ले लिया, जहाँ पर मैं अपनी तन्हाइयों के साथ रहता था। मेरे बंगले और शहर के

बीच एक बड़ा सा जंगल था जो तीस किलोमीटर तक फैला हुआ था। दबकन शहर से मेरे बंगले को जाने के लिए मात्र एक सड़क थी जो काँची जंगल के बीच से गुजरती थी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 18 अप्रैल 2017, रात 02:00 बजे

हमारे अतीत में कई ऐसे हादसे होते हैं, जिन्हें भुलाने के लिए हम नशे का सहारा लेते हैं। मैंने भी उसी का सहारा लिया था। हर रात की तरह उस रात भी मैंने कुछ ज्यादा ही शराब पी हुई थी। मैं मयखाने से वापस अपने घर जा रहा था। मेरी कार नब्बे कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार पार कर चुकी थी।

इस दुनिया में अगर आपको मौत से खेलना है तो आप रफ्तार के साथ खेलिये क्योंकि रफ्तार आपको मौत के करीब ले जाती है।

मैं अपनी मौत के साथ खेल ही रहा था तभी मुझे सामने एक काला साया आता हुआ दिखाई दिया। मैंने अपने होश सँभालते हुए कार के ब्रैक लगाये पर तब तक काफी देर हो गयी थी। वह काला साया मेरी कार से टकरा चुका था। नशे में धुत्त होने के बावजूद भी मैं समझ गया था कि मेरी कार से किसी का एक्सीडेंट हो चुका था। मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहता था इसलिए मैं कार से नीचे नहीं उतरा।

आपका अतीत आपको बहुत कुछ सिखा देता है। मैंने भी अपने अतीत से एक सीख ले ली थी कि जिन्दगी में चाहे कुछ भी हो जाए, कभी किसी की मदद नहीं करूँगा। मैं बहुत खुदगर्ज़ इंसान बन गया था।

मैं कार रिवर्स लेने लगा। मैं कार रिवर्स ही ले रहा था तभी कार के दायें आईने में मुझे वह काला साया दिखाई दिया जिसका मेरी कार से एक्सीडेंट हो गया था। जब मैंने गौर से उसे देखा तो वह काला साया किसी और का नहीं बल्कि एक लड़की का था। अंधेरा ज्यादा होने की वजह से मुझे उस लड़की का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था। मैं कार फिर से रिवर्स लेने लग गया। मैं कार रिवर्स ही ले रहा था कि तभी हवाएँ तेज चलने लगी और उस लड़की के बाल हवा में उड़ने लगे। जब मैंने दोबारा कार के आईने में देखा तो पता चला, वह लड़की कोई और नहीं, बल्कि मेरी नित्या थी।

'नित्या', जिसे मैं अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करता था। नित्या दो महीने पहले मुझे ठुकराकर चली गयी थी, पर मैं आज भी उससे प्यार करता था। प्यार होता ही ऐसा है जिसे आप चाहकर भी कभी भूला नहीं पाते हैं। नित्या को देखकर मैं झट से कार से नीचे उतर गया और उसे उठाकर कार में बैठाया।

मेरी आँखों से आँसू बहते जा रहे थे। मेरे समझ नहीं आ रहा था कि यह भगवान की कैसी नियति है। नित्या को मिलाया भी तो इस हालत में; इससे तो अच्छा होता कि वह मुझे नित्या से कभी नहीं मिलाते।

जब मैंने कार चालू की, तो कार चालू नहीं हो रही थी। पता नहीं क्या हो गया था। मैंने करण को फोन करना चाहा पर वहाँ नेटवर्क नहीं मिल रहा था। शायद मेरी किस्मत ही खराब थी। वह कहते हैं न, 'जब इंसान का वक्त खराब चल रहा होता है तो उसकी किस्मत भी उसका साथ नहीं देती है।'

मैंने कार चालू करने की बहुत कोशिश की पर कार चालू नहीं हुई। मेरी समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ, तभी मेरी नज़र नित्या के पैरो पर पड़ी। उसके पैरो पर गीली मिट्टी लगी हुई थी। मैंने ज़मीन पर देखा तो नित्या के पैरो के निशान जमीन पर छपे हुए थे जो कि जंगल के अंदर जा रहे थे।

मैंने नित्या को उठाया और उसके पैरों के निशान का पीछा करने लग गया। पैरों के निशान का पीछा करते-करते मैं जंगल के अंदर तक पहुँच गया।

करीब आधे घंटे पैदल चलने के बाद मुझे पीले रंग की रोशनी दिखाई दी। पूरे जंगल में सिर्फ एक वही जगह थी जहाँ पर रोशनी नज़र आ रही थी, बाकी चारों तरफ दूर-दूर तक अंधेरा छाया हुआ था। मुझे पूरा यकीन था वहाँ पर कोई न कोई मेरी मदद करने वाला जरूर मिल जाएगा। जब मैं और आगे बढ़ा तो वहाँ पर मुझे एक सफेद रंग का बंगला दिखाई दिया। वह बंगला ज्यादा पुराना नहीं था। जब मैं उस बंगले के दरवाज़े के पास पहुँचा तो देखा, उस बंगले का दरवाज़ा पहले से खुला हुआ था। मैंने आवाज लगाई, "कोई है... कोई है...?"

कोई जवाब नहीं आया। रात का वक्त था, इस वजह से वहाँ पर जंगली-जानवरों के चिल्लाने की आवाजें सुनाई दे रही थी। उस वक्त मुझे नित्या को बंगले के अंदर ले जाना ही ठीक लगा। मैं नित्या को लेकर बंगले के अंदर चला गया और फिर आवाज दी, "कोई है... कोई है...?"

फिर कोई जवाब नहीं आया।

बंगले के अंदर फर्श पर कई सारे सूखे पत्ते बिखरे पड़े हुए थे। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कई महीनों से झाड़ू नहीं लगाई गयी थी। दीवारों पर मकड़ी के जाले और धूल जमी हुई थी।

मैंने नित्या को बंगले के सीढ़ियों के ऊपर वाले कमरे में सुला दिया। नित्या के शरीर पर कई सारे घाव थे। उसके हाथ-पैरों पर, चेहरे पर खरोंच के निशान थे, जैसे किसी ने उसे नोचा हो। मेरी कार से टकरा जाने के कारण नित्या के पैरो से लगातार खून बहते जा रहा था।

मैंने नित्या के ज़ख्मों की मरहम पट्टी भी कर दी थी ताकी उसका खून बहना रुक जाए। उसका पीले रंग का सूट खून से लथपथ हो गया था।

मेरे समझ में नहीं आ रहा था, नित्या इतनी रात में काँची जंगल के पास क्या कर रही थी और वह बिना बताए दो महीने से कहाँ गायब थी? मेरे ज़ेहन में बहुत सारे सवाल थे पर सारे सवालों के जवाब नित्या के पास थे जो इस वक्त बेहोश थी।

कुछ देर बाद जब मैंने अपना मोबाइल चेक किया तो उसके अंदर नेटवर्क आ गया था। मैंने करण को फोन करके कहा, वह अभी इसी वक्त डॉक्टर रूपम पराते को लेकर मेरे पास आ जाए।

वह मुझसे जानना चाह रहा था कि हुआ क्या है? पर मैंने उसके किसी सवाल का जवाब नहीं दिया, "बस तू जल्दी से जल्दी मेरे पास आ जा।"

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 18 अप्रैल 2017, सुबह 6 बजे

नित्या की हालत और खराब होती जा रही थी। रातभर मैं नित्या के बारे में सोचते रहा कि आखिर वह किससे अपनी जान बचाकर भाग रही थी। मैं जानना चाहता था कि वह मुझे छोड़कर क्यों चली गयी थी। अगर उसे मैं पसंद नहीं था तो बता देती, यूँ छोड़कर जाने की क्या जरूरत नहीं थी।

मैं नित्या के होश में आने का इंतजार कर रहा था पर नित्या को अभी तक होश नहीं आया था। उसकी फिक्र मुझे सताए जा रही थी।

मैं नित्या के पास बैठकर उसका माथा सहला ही रहा था, तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैंने दरवाजा खोला तो देखा डॉक्टर रूपम पराते और करण आए थे।

डॉक्टर रूपम पराते की उम्र पैंतालीस साल थी पर उनका दिल अभी भी जवान था। किसी ने कहा था न, 'इमारत भले ही पुरानी हो जाए, पर नींव हमेशा मजबूत रहती है।" यह शायद इनके लिए ही कहा गया था। डॉक्टर साहब का वजन करीब एक सौ पांच किलो था। जब वह अपना मुँह फाड़कर हँसते थे तो उनकी तोंद हिलने लग जाती थी, उनकी हँसी इतनी फेमस थी कि उसकी आवाज सुनकर हर कोई समझ जाए कि यह हँसी डॉक्टर साहब की है।

डॉक्टर साहब ने शादी अभी तक नहीं की थी। कहते थे, "शादी एक कैद की तरह होती है और यदि शादी के बाद बच्चा हो जाए तो वह कैद उम्र कैद में तब्दील हो जाती है।"

मैंने सफेद रंग की शर्ट पहनी थी, इसलिए नित्या को उठाते वक्त उसके खून के कुछ निशान मेरी शर्ट के ऊपर लग गये थे।

खून के निशान देखकर करण बहुत घबरा गया और पूछने लगा, "तू ठीक तो है न विराट... सब ठीक तो है... और यह खून कैसा है तेरी शर्ट पर?"

मैं, करण के सारे सवालों का जवाब देता पर वह मेरी बात सुनने को तैयार ही नहीं था। वह बस घबराए जा रहा था। घबराता भी कैसे नहीं, आखिर उसने उसकी जान से भी ज्यादा प्यारे भाई के शर्ट पर खून के निशान जो देखे थे।

मैंने करण का हाथ पकड़ा और उसे उस कमरे में ले गया जहाँ पर नित्या थी। हमारे पीछे-पीछे डॉक्टर साहब भी आ गये। जब करण और डॉक्टर साहब ने नित्या को देखा तो दोनों का मुँह खुला का खुला रह गया।

करण ने मुझसे हैरानी के साथ पूछा, "यह तो नित्या है ना... इसे इतनी सारी चोट कैसे लगी और यह कहाँ चली गयी थी?"

“सवाल-जवाब बाद में होते रहेंगे, पहले मुझे नित्या का इलाज करने दो, इसे बहुत चोटें आई है।” डॉक्टर साहब ने कहा।

तीन-चार घंटों में डॉक्टर साहब ने नित्या का इलाज कर दिया। अब बस इंतजार था तो उसके होश में आने का।

मैंने, करण और डॉक्टर साहब को सारा किस्सा बता दिया था कि नित्या, मुझे कब और कैसे मिली।

तारीख 20 अप्रैल 2017

दो दिन बीत गये थे पर अभी तक नित्या को होश नहीं आया था। यह दो दिन सिर्फ मैं ही जानता था कि मैंने कैसे काटे थे। मेरे अंदर सवालों का एक पहाड़ बन गया था।

हम तीनों हॉल में बैठे थे तभी नित्या के कमरे से उसके चिल्लाने की आवाज सुनाई दी, "आ...!"

मैं भागते हुए नित्या की कमरे की तरफ जाने लगा। मेरे पीछे-पीछे करण और डॉक्टर साहब भी आ गए।

जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा, नित्या होश में आ चुकी थी।

नित्या ने मेरी तरफ उंगली करते हुए पूछा, "कौन हो तुम?"

नित्या के मुँह से यह शब्द सुनकर मैं हैरान हो गया था। करण और डॉक्टर साहब भी नित्या को गंभीरता के साथ देखने लग गये।

नित्या अपने आस-पास देखने लगी। कुछ देर बार उसने अपनी तरफ उंगली करते हुए पूछा, "मैं कौन हूँ? मैं यहाँ पर क्या कर रही हूँ?"

डॉक्टर साहब सब समझ गये थे कि मामला क्या था, "तुम दोनों बाहर चले जाओ, मुझे नित्या का चेकअप करने दो।"

करण और मैं कमरे से बाहर चले आए।

एक घंटे बाद डॉक्टर साहब नित्या का चेकअप करके बाहर निकले। जैसे ही डॉक्टर साहब बाहर निकले, मैं बौखलाहट के साथ उनके पास गया और पूछने लगा, "क्या हुआ डॉक्टर साहब, मेरी नित्या ठीक तो है ना?"

डॉक्टर साहब ने मेरे कंधों पर हाथ रखते हुए कहा, "विराट, बात यह है कि नित्या अपनी याददाश्त खो चुकी है और उससे भी बुरी बात यह है कि तुम्हारी कार से एक्सीडेंट हो जाने के कारण नित्या के दोनों पैर पैरालाइज हो गये है, अब वह शायद ही ज़िंदगी में कभी चल पाए।"

"क्या? यह आप क्या बोल रहे हैं डॉक्टर साहब।" मैंने चौंककर कहा।

मेरे पैरो तले जमीन खिसक गयी थी।

"विराट, यही हकीक़त है। सच को कोई झुठला नहीं सकता, उसे एक-न-एक दिन हम सबको कबूल करना ही पड़ता है।" डॉक्टर साहब ने हमदर्दी भरे लहज़े में कहा।

“हे भगवान! ये मेरे हाथों क्या हो गया। जिससे मैं प्यार करता था उसका ही एक्सीडेंट तुने मेरे हाथों करवा दिया!” मेरे आँसू फुट पड़े।

मुझे रोता देखकर करण पास आया और मुझे सँभालने लगा।

“यह मैंने क्या कर दिया...? क्या नित्या अब कभी भी नहीं चल पाएगी?” मैंने रोते हुए डॉक्टर साहब से पूछा।

“नहीं विराट! नित्या चलेगी, बस इंतजार करो। नित्या ठीक हो जाएगी, देखना तुम।” करण ने दिलासा देते हुए कहा।

“नित्या को हमें मेरे अस्पताल में भर्ती करवा देना चाहिए और पुलिस को भी खबर कर देनी चाहिए। हो सकता है कि वे नित्या के बारे में कुछ पता लगा पाए।” डॉक्टर साहब ने कहा।

“नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते। आप लोग देख रहे हो न नित्या की हालत... वह अपनी याददाश्त के साथ अपने पैर भी खो चुकी है। पता नहीं जब पुलिस आएगी तो उससे क्या-क्या सवाल पुछेगी। मैं, नित्या को अब किसी परेशानी में नहीं देख सकता। वैसे भी नित्या की हालत का जिम्मेदार मैं ही हूँ।”

मेरी यह बात सुनकर करण को गुस्सा आ गया, “क्या कहा? तू है जिम्मेदार! कैसे विराट? तू समझ नहीं रहा है, ये नित्या नाटक कर रही है।”

“ये क्या बोल रहा है तू करण। सूरत देख उस बेचारी की, उसे तो खुद नहीं पता कि उसके साथ क्या हो रहा है। जिसके साथ खुद भगवान नाटक कर रहे हो, वह किसी और के साथ क्या नाटक करेगी।” मैंने भी गुस्से में कहा।

“विराट, तू मेरी बात को समझ। ये नित्या भरोसा करने लायक लड़की नहीं है। तू जानता है न, ये तुझे छोड़कर चली गयी थी, फिर क्यों तू इसपर भरोसा कर रहा है।”

“करण, प्यार भरोसे पर ही तो टिका होता है न। और जरूरी थोड़ी है, जो एक बार दिल तोड़े, वह बार-बार दिल तोड़ेगा। हो सकता है, नित्या की कोई मजबूरी रही हो।”

“क्या मजबूरी रही होगी विराट?” करण ने पूछा।

करण का सवाल सुनकर मैं चुप हो गया क्योंकि मेरे पास करण के सवाल का कोई जवाब नहीं था। मैं खुद नहीं जानता था कि नित्या मुझे छोड़कर क्यों गयी थी।

कुछ देर बाद करण ने फिर कहा, “विराट, मुझे तो लग रहा है, तू पागल हो गया है नित्या के प्यार में।”

"हाँ! हो गया हूँ मैं पागल। अगर नित्या के लिए मुझे पागल भी बनना पड़े तो मैं वह भी बनने के लिए तैयार हूँ।" मैंने गुस्से में कहा।

"विराट, करण की बात समझने की कोशिश करो। तुम जानते ही क्या हो नित्या के बारे में?" डॉक्टर साहब ने भी मुझे समझाते हुए कहा।

"हाँ, मानता हूँ कि मुझे नित्या बारे में कुछ नहीं पता, पर इतना पता है कि मेरे सीने में जो दिल है, वह सिर्फ नित्या के लिए धड़कता है। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं नित्या का साथ किसी भी हालत में नहीं छोड़ूँगा। करण, तूने ही कहा था न, हमें प्यार किसी की सूरत व दौलत देखकर नहीं होता, वह बस हो जाता है। वही प्यार मुझे हुआ है... आप लोग समझ क्यों नहीं रहे हैं, नियति हमें मिलाना चाहती है। क्यों हर बार नित्या मुझे ही मिलती है? क्योंकि हम दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने है।"

"यह सिर्फ इत्तेफ़ाक़ है, और कुछ नहीं। कुछ दिन नित्या से दूर रहेगा तो सब भूल जाएगा।" करण ने कहा।

"वाह करण, क्या बात कही, कुछ दिन...? पूरे दो महीने से गायब थी नित्या। देखा था न तुने, क्या हालत हो गयी थी मेरी नित्या के बगैर, ज़िन्दा लाश बन गया था मैं। मैं नित्या के बिना नहीं जी सकता यार, वह मेरे दिल की धड़कन बन गयी है। समझ मेरी बात को, अगर वह मेरे पास नहीं रहती है तो मेरा दिल धड़कता नहीं है। अब कैसे समझाऊँ मैं तुझे।"

मेरी बातें सुनकर करण और डॉक्टर साहब समझ गये थे कि मैं नित्या से बहुत प्यार करता हूँ और उनके समझाने पर भी समझने नहीं वाला। मैं नित्या के लिए पूरी दुनिया से लड़ सकता हूँ और प्यार इसी को कहते है, जहाँ पर आप सिर्फ दुनिया से नहीं बल्कि भगवान से भी लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।

डॉक्टर साहब ने हार मानते हुए कहा, "ठीक है विराट, यदि तुम चाहते हो कि हम नित्या को अस्पताल में भर्ती न करे, तो हम नहीं करेंगे, पर उसके लिए तुम्हें उसका पूरा ख्याल रखना पड़ेगा। मैं बीच-बीच में आता रहूँगा, नित्या का चेकअप करने के लिए। और हाँ, उसका ख्याल रखने के लिए एक नर्स भी भेज दूँगा।"

"लेकिन डॉक्टर साहब, यदि उस नर्स ने पुलिस को खबर कर दी तो?" करण ने पूछा।

"तुम उसकी फ्रिक मत करो, हम उसपर भरोसा कर सकते हैं। पर याद रहे, नित्या को यह बात पता नहीं चलनी चाहिए कि उसका एक्सीडेंट विराट के हाथों हुआ है और न ही यह कि विराट उसे पहले से जानता है, वरना दिक्कत हो सकती हैं।"

करण ने हैरानी के साथ डॉक्टर साहब से पूछा, “पर डॉक्टर साहब, यदि हम नित्या का अतीत उसे याद दिलाने की कोशिश नहीं करेंगे, न ही उसके सामने कभी उसके अतीत का जिक्र करेंगे, तो उससे क्या कहेंगे जब वह हमसे पूछेगी कि हम उसकी मदद क्यों कर रहे हैं?”

डॉक्टर साहब ने कुछ सोचते हुए कहा, “हम बस उससे यह कहेंगे कि हम इंसानियत के नाते उसकी मदद कर रहे हैं।”

“ठीक है डॉक्टर साहब, मैं आपकी बात समझ गया। जैसा आपने कहा है, हम वैसा ही करेंगे।” मैंने कहा।

“हम नित्या को तेरे बंगले में ले चलते हैं, नित्या वहाँ पर ज्यादा अच्छे से रह सकेगी। वहाँ पर काम करने के लिए नौकर भी है, यहाँ पर तू अकेला पड़ जाएगा। वैसे भी पता नहीं यह बंगला किसका है?” करण ने बंगले के चारों तरफ देखते हुए कहा।

“नित्या का... यह बंगला नित्या का है।” मैंने जवाब दिया।

यह बात सुनकर सभी लोग हैरान हो गये थे।

“क्या कहा! तुझे कैसे पता?” डॉक्टर साहब और करण ने एक साथ चौंककर पूछा।

मैंने सामने की दीवार की तरफ इशारा करते हुए कहा, “वह देखो।”

जब डॉक्टर साहब और करण ने दीवार की तरफ देखा तो दोनों के होश उड़ गये। उस दीवार पर एक तस्वीर लगी हुई थी, जिसमें नित्या एक आदमी के साथ थी। वह आदमी नित्या के कंधों पर हाथ रखे हुए था। दोनों ही बहुत खुश दिख रहे थे। देखने से लग रहा था वह नित्या के पिता थे।

करण ने वह तस्वीर वहाँ से निकालकर अपने हाथ में लेते हुए कहा, “इसका मतलब तो यह हुआ कि यह बंगला नित्या का है।”

“हाँ करण, तुने एकदम सही कहा।” मैंने कहा।

“पर नित्या के पिता अभी कहाँ पर है?” डॉक्टर साहब ने हैरानी के साथ पूछा।

“यही तो अब हमें पता करना है। करण, तू यह तस्वीर ले जा और आस-पास के पुलिस स्टेशन में पता कर, किसी आदमी के लापता होने की किसी ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है क्या…? पर याद रहे, किसी को तुझ पर शक न हो। जब तक मैं नित्या का ख्याल रखूँगा, हो सकता है नित्या को इस बंगले में कुछ याद आ जाए।” विराट ने कहा।

“ठीक है।” करण ने कहा।

डॉक्टर साहब और करण वहाँ से चले गये। मैंने डॉक्टर साहब और करण को अलविदा कहकर अभी दरवाज़ा लगाया ही था तभी नित्या के कमरे से बर्तन गिरने की आवाज सुनाई आई।

भागते हुए मैं नित्या के कमरे की तरफ जाने लगा। जब वहाँ पर पहुँचा तो देखा कि नित्या बेड के बीच में लेटी हुई थी। नित्या के हाथ-पैर और सिर पर पट्टी बँधी हुई थी। नित्या के बगल में टेबल पर पानी का जग रखा हुआ था।

नित्या पानी पीना चाहती थी पर हाथ में पट्टी बँधी होने के कारण गिलास नहीं उठा पा रही थी। नित्या अपनी जगह से हिल तक नहीं पा रही थी। उसे बहुत दर्द हो रहा था, इस दर्द के कारण वह रोने लगी।

नित्या को ऐसी हालत में देखकर मैं भी अपने आँसुओं को बहने से रोक नहीं पाया और दरवाज़े पर खड़े होकर रोने लग गया।

अपने आँसू पोंछकर नित्या के पास गया और टेबल पर से गिलास उठाकर, अपने हाथों से उसको पानी पिलाने लगा। नित्या को मेरे हाथों से पानी पीना बहुत अजीब लग रहा था। लेकिन वह क्या करती, उसके पास और कोई चारा नहीं था, वह मजबूर थी। नित्या ने रोते-रोते पानी पी लिया।

नित्या ने मेरी तरफ देखते हुए पूछा, "कौन हूँ मैं और मेरी ऐसी हालत कैसे हुई?"

एक पल के लिए मुझे लगा कि नित्या को सारी सच्चाई बता दूँ, पर फिर डॉक्टर साहब की बात याद आयी। उन्होंने नित्या को कुछ भी बताने के लिए मना किया था।

मैंने नित्या से झूठ बोलते हुए कहा, "किसी ने आपका एक्सीडेंट कर दिया था। मैं अपने घर जा रहा था और रास्ते में आप मुझे मिल गयी तो मैं आपको यहाँ अपने घर ले आया। मुझे नहीं पता आप कौन है और कहाँ से आई है।"

"मैं कब से यहाँ पर हूँ?"

"आप दो दिन से यहाँ पर है।"

"क्या? दो दिन से...! शुक्रिया आपका मेरी जान बचाने के लिए, पता नहीं यदि आप नहीं होते तो मेरा क्या होता। क्या कुछ दिनों के लिए मैं यहाँ रह सकती हूँ, जब तक मैं ठीक नहीं हो जाती?"

"हाँ, क्यों नहीं... आप जब तक चाहे यहाँ पर रह सकती है, इसे आप अपना ही घर समझिये।"

मैंने मन-ही-मन सोचा कि पता नहीं तब क्या होगा, जब नित्या को पता चलेगा कि उसका एक्सीडेंट किसी और की नहीं बल्कि मेरी ही कार से हुआ था और मैं उसे पहले से जानता हूँ। मेरे ज़ेहन में उस वक्त बहुत सारे सवाल थे पर मैं, नित्या से कुछ नहीं पूछ सकता था, उसकी ज़िंदगी तो खुद उसके लिए एक सवाल बन गयी थी।

नित्या दिनभर रोती रही और मैं चाहकर भी उसके आँसू नहीं रोक सका। मैंने सोच लिया था, आज के बाद मैं नित्या की आँखों में कभी आँसू नहीं आने दूँगा।

मैंने नित्या के लिए उसकी मनपसंद सब्जी 'भिण्डी' बनाई थी, यह सोचकर कि नित्या को भले ही अपना अतीत याद न आये पर बस यह याद आ जाए कि हम पहले भी मिल चुके है, मेरे लिए यही बहुत था।

मैंने खाना ले जाकर नित्या के कमरे में रख दिया था। एक घण्टे बाद जब मैं वापस आया तो देखा, खाना वैसा का वैसा रखा हुआ था।

नित्या रोटी तोड़ने की कोशिश तो कर रही थी पर तोड़ नहीं पा रही थी, उसके दोनों हाथों में पट्टियाँ जो बंधी हुई थी। जब नित्या को यह एहसास हुआ कि मैं उसके कमरे में आ गया हूँ तो वह सीधे बैठ गयी।

मैं, नित्या के पास जाकर बैठ गया, फिर अपने हाथों से उसे खाना खिलाया। जब मैंने उसे पहला निवाला खिलाया तो वह मेरी तरफ देखने लगी। मैं उसकी आँखों में डूब गया और वह मेरी आँखों में डूब गयी। कुछ पल के लिए मुझे लगा उसे सब कुछ याद आ गया पर शायद यह मेरा बस एक वहम था।

नित्या की निगाहों में मुझे साफ नज़र आ रहा था कि उसके मन में बहुत सारे सवाल थे जो वह मुझसे पूछना चाहती थी पर वह नहीं पुछ रही थी। और मैं कहाँ उसके किसी भी सवाल का जवाब दे पाता।

नित्या ने खाना खा लिया था, उसने अपनी दवाई खायी और सो गयी।

मैं भी नित्या के पास कुर्सी लगाकर सो गया, यही सोचकर यदि रात में नित्या को प्यास लगी तो वह पानी कैसे पीयेगी?

तारीख 21 अप्रैल 2017, रात 03 बजे

मेरा सिर दर्द के मारे फटा जा रहा था और जब भी मेरा सिर दर्द होता था, मैं सिगरेट के एक-दो कश मार लिया करता था। मेरी जेब में सिगरेट के तीन-चार पैकेट हमेशा रखे हुए रहते थे। मैंने सिगरेट जलाई और पीने लगा। अभी मैंने बस दो-तीन कश खींचें ही थे कि नित्या के खांसने की आवाज सुनाई देने लगी। शायद यह खाँसी नित्या को मेरी सिगरेट के धुएँ के कारण ही आ रही थी।

मैं, नित्या के पास गया और उसे पानी पिलाया। मेरे दूसरे हाथ में सिगरेट थी जिस कारण नित्या और जोर-जोर से खांसने लगी। मुझे मेरी गलती का एहसास हो गया था। मैं उसी वक्त नीचे गया और सारे सिगरेट के पैकेट फेंक दिए। मैंने उस दिन से फैसला कर लिया था कि आज के बाद जिंदगी में कभी सिगरेट नहीं पीऊँगा। जब मैं, नित्या से सॉरी बोलने वापस उसके कमरे में गया तो तब तक वह सो चुकी थी।

नित्या के कपड़े और पट्टियाँ बदलने के लिए नर्स सुबह-शाम आ जाती थी जिसका नाम था रूबी खान। रूबी, डॉक्टर साहब ही बहुत अच्छी दोस्त थी, डॉक्टर साहब ने उसे सब समझा दिया था। रूबी शादीशुदा स्त्री थी जिस कारण वह दिनभर नित्या का ख्याल नहीं रख सकती थीं। वह सिर्फ दो वक्त आती थी और एक घण्टे में चली जाती थी।

जिस नित्या से पहले मेरी मुलाकात हुई थी, वह इस नित्या से बिल्कुल अलग थी। पहले वाली नित्या के चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी और अब वाली नित्या के चेहरे पर हमेशा उदासी। मैं चाहकर भी उसकी उदासी को दूर नहीं कर पा रहा था। मैं रोज उसे तनहाइयों से घिरा देखता था। रोज वह खुद से लड़ती थी। पूरा दिन वह अपनी खामोशियों के साथ, अपने कमरे में बिताती थी। नित्या हमेशा डरी-डरी रहती थी जैसे उसे किसी से खतरा था।

एक महीना बीत चुका था पर मैंने कभी नित्या को हँसते हुए नहीं देखा था। लेकिन उस दिन मैंने पहली बार नित्या को हँसते हुए देखा।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 22 मई 2017, रात 12:00 बजे

नित्या बेड पर सो रही थी और मैं पास रखी कुर्सी पर सो रहा था। दोनों गहरी नींद में थे कि तभी जोर-जोर से दरवाज़ा खटखटाने की आवाज सुनाई देने लगी, खट...खट...खट...।

कोई दरवाजा इतनी जोर-जोर से खटखटा रहा था कि नित्या की नींद खुल गयी थी, “विराट... विराट उठो।” नित्या ने मुझे आवाज लगाते हुए कहा।

मैं इतनी गहरी नींद में सो रहा था कि मुझे नित्या की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी।

नित्या के बगल में ही तकिया रखा हुआ था, “उठो, विराट! उठो!” नित्या ने वह तकिया मेरी तरफ फेंकते हुए कहा।

जैसे ही वह तकिया मुझ पर गिरा, मेरी झट से नींद खुल गयी।

“कौन है? कौन है?” मैंने बौखलाहट के साथ कहा।

“मैं हूँ, विराट।” नित्या ने धीरे से कहा।

नित्या को देखकर मैं शांत हो गया।

“क्या हुआ? आपको नींद नहीं आ रही क्या?” मैंने नित्या से पूछा।

“कोई नीचे दरवाज़ा खटखटा रहा है।”

“क्या कहा? कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है, वह भी इतनी रात को!” मैंने हैरानी के साथ कहा।

कोई अभी भी जोर-जोर से दरवाजा खटखटाए जा रहा था।

“इतनी रात में कौन होगा?” नित्या ने डरते हुए कहा।

“पता नहीं कौन होगा? आप यहीं पर रुकिए, मैं देखकर आता हूँ।”

“आप मुझे भी अपने साथ नीचे ले चलिये, अकेले मुझे यहाँ घुटन सी होती है।”

मैंने नित्या को अपने सहारे से उठाया और धीरे-धीरे अपने साथ सीढ़ियों से नीचे ले आया। जब हम दोनों नीचे पहुँचे, कोई तब भी जोर-जोर से दरवाज़ा खटखटाए जा रहा था।

मैं धीरे से दरवाज़े के पास गया। दरवाज़ा खोला तो देखा दरवाज़े पर डॉक्टर साहब और करण खड़े हुए थे।

“आप दोनों... इतनी रात में यहाँ क्या कर रहे हैं, सब ठीक तो है न?” मैंने हैरानी के साथ पूछा।

“हैप्पी बर्थ डे टु यू... हैप्पी बर्थडे टु यू...!” डॉक्टर साहब और करण दोनों एक साथ गाने लग गये, फिर मुझे याद आया कि आज तो मेरा बर्थ डे है।

“तू भूल सकता है विराट, पर मैं नहीं भूल सकता।” करण ने मुझे गले लगाते हुए कहा।

“शुक्रिया मेरे भाई।” मैंने भी कारण को गले लगते हुए कहा।

डॉक्टर साहब ने अपने हाथ में केक का डिब्बा पकड़ा हुआ था। उन्होंने केक को टेबल पर रख दिया और उसके चारों तरफ मोमबत्तियाँ लगा दी पर उन्हें जलाया नहीं।

“इन्हें आप जलाइये।” डॉक्टर साहब ने नित्या की तरफ देखते हुए कहा।

“नहीं डॉक्टर साहब, मैं नहीं... आप ही जला दीजिए।” नित्या ने घबराते हुए कहा।

“क्यों भाई, क्या आप अपने दोस्त के जन्मदिन पर कुछ नहीं करोगी; हमारा काम था केक लाना, अब आगे का काम आपका है।”

डॉक्टर साहब के दबाव देने पर नित्या ने उनके हाथ से माचिस ले ली और मोमबत्तियां जलाने लगी।

नित्या मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठी हुई थी। मैं मोमबत्ती फूँकने ही वाला था, तभी करण ने मुझे रोकते हुए कहा, “रुक जा भाई... रुक जा। इतनी जल्दी किस बात की है, मोमबत्ती फूँकने से पहले कुछ माँग तो ले। कहते हैं, जन्मदिन के अवसर पर मोमबत्ती फूँकने से पहले जो माँगते हैं, वह जरूर मिलता है।”

मैं माँगता भी तो क्या माँगता, मेरी दुनिया तो मेरे सामने ही बैठी हुई थी, नित्या। बस नित्या को खुश देखना चाहता था। मैंने वही माँगा और नित्या की तरफ देखने लगा।

“विराट, केक सामने नहीं, नीचे रखा है।” करण ने मेरी टाँग खींचते हुए कहा।

मैंने केक काटा और सबसे पहले करण को खिलाने लगा तभी मेरी नज़र करण के हाथ पर पड़ी। करण अपने हाथ में पीठ के पीछे कुछ छुपा रहा था।

“करण, ये तू पीठ के पीछे क्या छुपा रहा है?” मैंने हैरानी के साथ करण से पूछा।

“नहीं यार, कुछ भी तो नहीं छुपा रहा।” करण ने मना करते हुए कहा।

“कुछ तो है… बता ना!” मैंने करण का हाथ पकड़ते हुए कहा।

“नहीं यार, कुछ नहीं है।” करण ने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा।

करण ने अपने हाथ में एक गिफ्ट पकड़ा हुआ था। मैंने वह गिफ्ट करण के हाथ से छीन लिया, “अच्छा, तो तू मेरे लिए गिफ्ट लाया था, फिर देने में इतना नाटक क्यों कर रहा था?”

“बस यार, ऐसे ही... तुझे सताने में मजा आता है।” करण ने अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए कहा।

जब मैंने उस गिफ्ट को खोला तो देखा उसके अंदर एक घड़ी रखी हुई थी। दिखने में वह आम घड़ी की तरह लग रही थी पर वह आम घड़ी नहीं थी। उसमें सुई के पीछे डिस्प्ले में एक आयताकार जगह थी जिसमें तारीख दिख रही थी।

“यह कैसी घड़ी है करण?” मैंने हैरानी के साथ करण से पूछा।

“यह कोई ऐसी-वैसी घड़ी नहीं है, इसमें आज से पचास साल पहले और आज से पचास साल बाद तक का वक्त और दिन देख सकते हैं।” करण ने बताया।

“वाह यार, यह तो बहुत अच्छी घड़ी है।” मैंने खुश होते हुए कहा।

मेरे चेहरे की खुशी देखकर साफ था कि मुझे वह घड़ी बहुत पसंद आई थी।

“चलो भाई, केक तो कट गया और गिफ्ट भी मिल गया। अब कुछ गाना बजाना हो जाए?” डॉक्टर साहब ने फरमाइश की।

“हाँ डॉक्टर साहब, ठीक कहा आपने।” करण ने डॉक्टर साहब का साथ देते हुए कहा।

“नहीं-नहीं, रहने दीजिए डॉक्टर साहब।” मैंने मना करते हुए कहा।

“क्यों रहने दे, तुम्हारा बर्थडे थोड़ी रोज-रोज आता है। वैसे भी, बहुत कम मौके होते हैं जब हम सब मिल पाते हैं।” करण ने कहा।

“हाँ, सही कहा करण, कल से तो वैसे भी सब अपने-अपने काम में व्यस्त हो जायेंगे; मैं अस्पताल में और तुम ऑफिस में।”

करण अपने साथ गिटार लेकर आया था। करण ने गिटार मेरे हाथ में रखते हुए कहा, “चल, अब शुरु हो जा, अरिजीत सिंह के फैन।”

“अरे नहीं-नहीं! मैं...?”

मैं अपनी बात पूरी कर पाता उससे पहले ही करण ने कहा, “अरे! ऐसे कैसे नहीं... अब ज्यादा नाटक मत कर, ठीक है न। चुप-चाप गाना गा, समझा।”

मुझे गिटार बजाना तो आता था पर गाना-गाने के लिए साथ में कोई साथी चाहिए था। मैं जानता था, डॉक्टर साहब और करण के गले में से फटे हुए ढोल की आवाज निकलती थी। इसलिए मैंने नित्या से गाना गाने के लिए पूछा पर नित्या ने मना कर दिया, फिर मुझे अकेले ही गाना-गाना पड़ा।

"तेरा मुझसे... है पहले का नाता कोई... यूँ ही नहीं दिल लुभाता कोई..."

मैं नित्या की सूरत देख-देखकर गाना गा रहा था, फिर एकदम से रुक गया। नित्या की सूरत में कुछ ऐसा देखा कि मेरे लबों से एक भी अल्फ़ाज़ नहीं निकल पा रहे थे।

मुझे अचानक यूँ रुकता हुआ देखकर नित्या ने प्यार कहा, "गाओ न! आप रुक क्यों गये?"

नित्या की आवाज सुनकर मैंने वहीं से गाना-गाना शुरू कर दिया जहाँ से छोड़ा था। जैसे ही मैंने गाना गाना शुरू किया, नित्या भी मेरे साथ गाना गाने लग गयी।

"जाने तू या जाने ना... तेरा मुझसे है पहले का नाता कोई..."

नित्या गाना गा रही थी और मैं गिटार बजा रहा था। हम दोनों साथ-साथ जुगलबंदी करने लगे। नित्या सिर्फ गाना नहीं गा रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने दिल की बात गाने के जरिये मुझसे कह रही थी।

गाने होते ही ऐसे है जो कभी-कभी हमारी परिस्थितियों पर बिल्कुल फिट बैठते है। वैसे भी गाने हमारी असल जिन्दगी के एहसासों को महसूस करके ही तो बनाये जाते है तो उनसे एक अपनापन सा लगना लाजमी है।

गाना खत्म होने के बाद करण ने अपनी नादानियों से नित्या के चेहरे पर मुस्कान लाना शुरु कर दिया। उस दिन पहली बार मैंने नित्या को हँसते हुए देखा था। ऐसा लग रहा था कि मेरी पुरानी नित्या वापस आ गयी। वही मुस्कान, वही रौनक वापस लौट आई थी।

अगर ख़ुदा ने वक्त की डोर मेरे हाथों में दी होती तो मैं उन पलो को वहीं रोक लेता, कहीं कैद करके रख लेता उन लम्हों को।

मैं नित्या को ज़िंदगी भर ऐसे ही हँसते हुए देखना चाहता था और उसके लिए मैं कुछ भी क़ुर्बान करने के लिए तैयार था।

तारीख 26 मई 2017, सुबह 07:30

करण मुझसे मिलने के लिए बंगले में आया हुआ था और उस वक्त नित्या ऊपर वाले कमरे में सो रही थी।

"तुझे कुछ पता चला करण, नित्या के पिता के बारे में?"

"नहीं, कुछ पता नहीं चला। आस-पास के सभी इलाकों में पता कर लिया लेकिन किसी भी पुलिस स्टेशन में किसी भी आदमी के लापता होने की खबर नहीं मिली, यहाँ तक कि मुर्दा घरों में भी पता कर लिया पर उन्हें कोई भी लावारिस लाश नहीं मिली।"

"हमें कुछ दिन और तहकीकात करनी चाहिए, हो सकता है हमें कुछ पता चल जाए। सिर्फ नित्या के पिता ही है जो हमें नित्या के बारे में कुछ बता सकते हैं, वरना हमें नित्या के बारे में कभी कुछ पता नहीं चलेगा। हम कभी नहीं जान पायेंगे कि नित्या मुझे छोड़कर क्यों गयी थी?"

"हाँ विराट, तू ठीक कह रहा है। मैं पता करता हूँ, तू फिक्र मत कर।"

करण की बात सुनकर मैंने अपना सिर हाँ में हिला दिया।

कुछ देर रुकने के बाद करण ने कहा, "मैं तुझे देखकर बहुत खुश हूँ, विराट। मुझे मेरा छः महीने पहले वाला दोस्त वापस मिल गया। हे भगवान! शुक्रिया आपका जो आपने मेरे दोस्त की ज़िन्दगी में नित्या को वापस भेज दिया।"

"शुक्रिया बाद में करना करण, पहले मेरा एक काम कर दे।"

"हाँ बोल न, क्या काम है?"

"आज से कम्पनी के सारे काम तुझे ही सँभालने है, अब तू ही मालिक है। मैं कम्पनी में अब नहीं आऊँगा।"

"ये क्या बोल रहा है तू विराट! मैं इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी कैसे उठा सकता हूँ?"

"प्लीज करण, समझने की कोशिश कर। अब नित्या ही मेरी दुनिया है, मैं ज्यादा से ज्यादा वक्त अब नित्या के साथ बिताना चाहता हूँ।"

"हाँ, मैं समझ सकता हूँ विराट, पर यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी। तुझे लगता है मैं इतनी बड़ी कम्पनी सँभाल सकता हूँ?"

"हाँ करण, मुझे तुझ पर पूरा भरोसा है, तू कर सकता है।"

"ठीक है! फिर मेरी भी एक शर्त है?"

“कैसी शर्त?”

“पहले वादा कर शर्त पूरी करेगा।”

“हाँ भाई, पहले बता तो क्या शर्त है?”

“पहले वादा कर।”

“हाँ भाई, किया वादा!”

“तू वादा कर कि अब तू कभी नशा नहीं करेगा।”

“अरे पागल, नशा करना तो मैंने कब से छोड़ दिया। तभी से जब से नित्या मुझे मिली है। वैसे भी, जिस शख्स को मुहब्बत का नशा होता है, उसे कोई नशा करने की जरूरत नहीं होती है।”

* * *

मैंने, नित्या के लिए ऑटोमैटिक चलने वाली दो व्हीलचेयर ला दी थी, जिस पर नित्या के हाथ के पास बटन लगी थी, जिसे नित्या अपने हाथों से नियंत्रित कर सकती थी। वह जब चाहे उससे आगे-पीछे हो सकती थी, सोने के लिए बेड भी बना सकती थी। दो व्हीलचेयर इसलिए, अगर एक खराब हो गयी तो दूसरी उसी वक्त हाज़िर हो जाए। मैं नित्या का ख्याल रखने में कोई कमी नहीं रखना चाहता था।

नित्या की पट्टियाँ खुल गयी थी, अब वह अपने हाथों से खाना खा सकती थी। नर्स आज ही उसके हाथ-पैरो की पट्टियाँ खोलकर गयी थी।

मैंने खाना ले जाकर नित्या के पास रख दिया था। जब मैं वापस आया तो देखा खाना वैसा का वैसा ही रखा हुआ था। नित्या ने कुछ नहीं खाया था।

“आपने खाना क्यों नहीं खाया?” मैंने हैरानी के साथ नित्या से पूछा।

नित्या ने मेरे सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया, वह चुप-चाप खाने की थाली की ओर देख रही थी।

नित्या को यूँ चुप देखकर मैंने धीरे से पूछा, “क्या हुआ?”

नित्या ने फिर कुछ जवाब नहीं दिया।

“आपके हाथों में दर्द हो रहा है क्या?”

नित्या ने कहा कुछ नहीं, बस अपना हाँ में सिर हिला दिया। मैं समझ गया कि नित्या के हाथ में दर्द हो रहा था इसी वजह से उसने खाना नहीं खाया।

मैं रोटी का निवाला तोड़कर अपने हाथों से नित्या को खिलाने लग गया।

पत्ता गोभी की सब्जी बहुत तीखी बनी थी। जैसे ही नित्या ने पहला निवाला खाया, उसकी आँखों में से आँसू निकलने लगे। नित्या ने झट से पास में रखी पानी की गिलास उठायी और एक ही बार में घटा-घट पूरा पानी पी गयी।

मैं हैरान था यह सोचकर कि जब नित्या को रोटी तोड़ने में इतना दर्द हो रहा था तो उसने पानी की गिलास इतनी फुर्ती से कैसे उठा ली।

जब नित्या की प्यास बूझ गयी तो वह धीरे-धीरे अपना सिर ऊपर करने लगी क्योंकि उसे पता था कि उसकी चोरी पकड़ी गयी। मैं नित्या का मासूम चेहरा देखकर मन-ही-मन हँसने लगा। मैंने नित्या को रोटी खिलाना बंद कर दिया। नित्या और मैं, दोनों ही एक दूसरे की आँखों में देखने लगे।

“मैं क्या करती, आदत हो गयी है आपके हाथों से खाने की। अब मैं वह आदत बिगाड़ना नहीं चाहती।” नित्या ने प्यार से कहा।

नित्या की बात सुनकर मैंने वापस से उसे खाना खिलाना शुरू कर दिया।

मुझे यह तो पता चल गया था कि नित्या मुझे पसंद करने लगी थी पर यह नहीं पता था कि यह पसंद सिर्फ पसंद थी या प्यार। पसंद और प्यार में बहुत फर्क होता है। मैं चाहता था नित्या अपने प्यार का इज़हार खुद करें। मैं इस बार अपनी तरफ से कोई गलती नहीं करना चाहता था।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 06 अगस्त 2017, शाम 04 बजे

विराट अपनी जिंदगी की कहानी सुना ही रहा था कि उनकी ट्रेन रायगढ़ स्टेशन पर आकर रुक गयी। एक ग्यारह साल का बच्चा जिसके एक हाथ में चाय की केतली और दूसरे हाथ में चाय के कप थे, "चाय... चाय... " चिल्लाता हुआ सौम्या के पास आया और कहने लगा, "मैम, चाय दूँ क्या?"

सौम्या कुछ बोलती उससे पहले ही विराट ने कहा, "हमारा स्टेशन आ गया है, हमें यहीं उतरना है।"

सौम्या और विराट ट्रेन से उतरकर स्टेशन के बाहर खड़े हो गये। वहीं पर सामने बस स्टैंड था।

"आप यहीं रुकिये, मैं बस की टिकट लेकर आता हूँ।" विराट ने कहा।

"क्या? बस की टिकट!" सौम्या ने चौंककर कहा।

"हाँ, बस की टिकट। दबकन जाने के लिए हमें बस पकड़नी होगी और फिर वहाँ से काँची जंगल का सफर पैदल तय करना पड़ेगा क्योंकि उस रास्ते से कोई बस नहीं जाती।"

"मेरा कहने का मतलब यह नहीं था विराट। मेरा मतलब यह था कि तुम तो हीरे की कम्पनी के मालिक थे न और तुम्हारे पास फरारी और कई कार भी थी, तो हम बस से क्यों जाएंगे?"

"सौम्या जी, अभी तो आपने मेरी जिंदगी का आधा किस्सा सुना है, पूरा सुनना बाकी है। अभी मेरी बेगानी प्रेम कहानी खत्म नहीं हुई है। आप चलिए, मैं रास्ते में आपको सब बताता हूँ।"

विराट और सौम्या बस में बैठ गये थे। सौम्या खिड़की के पास बैठी हुई थी और विराट उसके बगल में। खिड़कियों से हवाएँ बस के अंदर आ रही थी जिस कारण सौम्या के चेहरे का आँख के पास का निशान, जिसे सौम्या हमेशा अपनी ज़ुल्फों से ढककर रखा करती थी, वह विराट को साफ-साफ नज़र आ रहा था।

विराट उसी निशान को घूरे जा रहा था। उसके मन में यही सवाल घूम रहा था कि इतने खूबसूरत चेहरे पर यह निशान कहाँ से आया?

उस निशान को देखकर विराट बेचैन हुए जा रहा था, उससे रहा नहीं गया और उसने सौम्या से पूछ ही लिया, "यदि आपको कोई परेशानी नहीं हो तो क्या आप मुझे बता सकती है, आपके चेहरे पर यह निशान कैसा है?"

“आखिर तुमने देख ही लिया।” सौम्या ने अपने चेहरे का निशान वापस से अपनी ज़ुल्फ़ों से छुपाते हुए कहा।

सौम्या ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा, “कितनी भी कोशिश करो अपना अतीत भुलाने की, पर कुछ घाव ऐसे होते हैं जो आपको आपका अतीत याद दिला ही देते हैं।”

“अगर आपको कोई परेशानी है तो रहने दीजिए।”

“नहीं, इसमें परेशानी किस बात की, पर पता नहीं सच्चाई जानने के बाद तुम मुझ पर भरोसा करोगे भी या नहीं। कहीं तुम यह न समझ बैठो कि यह अंधी, मेरी नित्या की मदद कैसे करेगी, इसे तो खुद मदद की जरूरत है।”

“क्या कहा आपने, अंधी...!” विराट ने चौंककर पूछा।

“हाँ अंधी, देखकर लगता नहीं है न कि जो लड़की अपने सब काम खुद कर लेती है यहाँ तक की प्रेत-आत्माओं का सामना भी कर लेती है, वह अंधी कैसे हो सकती है।”

“हाँ, नहीं होता यकीन!” विराट ने अपना मुँह फाड़ते हुए कहा।

“उस वक्त मैं सोलह साल की थी और स्कूल की छुट्टियों में दादी के घर महाराष्ट्र गयी हुई थी। मम्मी, पापा और मेरा छोटा भाई (चीकू) राजस्थान के दबकन में ही थे। हमारा दबकन में ही हीरो का व्यापार था।

मुझे दादी के पास गये हुए अभी पन्द्रह दिन ही हुए थे कि मम्मी और पापा का फोन आना बंद हो गया। पहले मम्मी-पापा रोज फोन किया करते थे पर अब एक हफ्ते से ज्यादा वक्त हो गया था, उनका कोई फोन नहीं आया था। मुझे और दादी को उनकी फिक्र होने लगी।

एक रात मैंने एक बुरा सपना देखा जिसमें मम्मी और पापा मुसीबत में थे। इसलिए मैं, अपनी दादी और मामा जी के साथ दबकन आ गयी।

जब हम हमारे बंगले पर पहुँचे तो देखा वहाँ पर न मम्मी थी, न पापा और न ही मेरा छोटा भाई। वहाँ पर कोई नहीं था।

हमारा बंगला काँची जंगल के अंदर था। हमारे बंगले के आस-पास कोई नहीं रहता था, जिससे हम मम्मी-पापा और छोटे भाई के बारे में पूछ सकते। हमें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मम्मी और पापा, ऐसे बिना बताए कहाँ जा सकते थे?

हम लोग जंगल में मम्मी-पापा और छोटे भाई को ढूँढ़ ही रहे थे कि मामा जी को एक बड़े से पीपल के पेड़ के ऊपर मम्मी-पापा और छोटे भाई की लाशें उल्टी लटकी हुई मिली।

उनकी मौत से ज्यादा हैरानी इस बात की थी कि उनके शरीर पर एक भी खरोंच के निशान नहीं थे। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में भी कुछ पता नहीं चला था। डॉक्टर भी इस बात का पता नहीं लगा पा रहे थे कि उनकी मौत कैसे हुई?

लोग बातें कर रहे थे कि किसी ने उन्हें जादू टोने से मारा है क्योंकि उन तीनों का शरीर पूरी तरह काला पड़ गया था। जिस पीपल के पेड़ के पास से हमें मम्मी, पापा और छोटे भाई की उल्टी लटकी हुई लाशें मिली थी, उसी के नीचे तीन नींबू भी मिले थे। तीनों नींबूओं पर एक-एक कील घुसी हुई थी। कहा जाता है कि नींबू में कील तभी घुसाई जाती है जब हमें किसी को बहुत ही बेरहमी से मारना हो और उस हालत में कोई भी शक्ति उनकी मदद नहीं कर सकती।

उसी दिन मामा, दादी को बता रहे थे कि जिस वक्त वह मम्मी, पापा और छोटे भाई का अंतिम संस्कार कर रहे थे, उस वक्त पण्डित वेदव्यास जी वहाँ पर आए थे और उन्होंने कहा था, "वह बंगला खाली करके चले जाओ। वरना वो सब को मार देगा।" उन्होंने बस इतना ही कहा और वे वहाँ से चले गये।

"हाँ, मुझे भी यही लगता है हमें यह बंगला बेच देना चाहिए और यहाँ से चले जाना चाहिए। मुझे तो यह कोई शापित बंगला लगता है।" दादी ने मामा को समझाते हुए कहा।

लेकिन मामा ने दादी की बात नहीं मानी।

मम्मी, पापा और छोटे भाई के अंतिम संस्कार को अभी बस दो ही दिन हुए थे। मैं अपने कमरे में सो रही थी, तभी दादी की जोर-जोर से रोने की आवाज सुनाई देने लगी, जिस कारण मेरी नींद खुल गयी।

जिस कमरे से दादी के रोने की आवाज आ रही थी जब मैं वहाँ पर पहुँची तो देखा मामा ज़मीन पर मरे पड़े थे। मामा के गले से खून बहे जा रहा था। ऐसा लग रहा था किसी ने तेज धार वाले चाकू से उनका गला रेत दिया था।

वहीं पर दादी खड़ी थी, जिनके हाथों में खून से सना हुआ चाकू था। दादी रोये जा रही थी और रोते-रोते कह रही थी, "देख सौम्या... यह तेरे मामा को क्या हो गया? कुछ बोल ही नहीं रहे, कब से मैं बात करने की कोशिश कर रही हूँ।"

जब मैं रोते-रोते मामा की लाश के पास गयी तो देखा, दादी की आँखों की काली पुतलियाँ गायब हो गयी थी, उनका बर्ताव और आवाज भी बदल गयी थी। उनके अंदर से किसी आदमी की आवाज आ रही थी। मुझे, दादी को देखकर डर लगने लगा था। उनकी आँखों में मुझे मारने का जुनून नज़र आ रहा था।

मैं अपनी जान बचाकर वहाँ से भागने लगी और भागते-भागते सीढ़ियों से गिर गयी, जिस कारण मेरे सिर से खून निकलने लगा।

जो दादी, पहले लड़खड़ाकर चलती थी, वह मुझे मारने के लिए ऐसे भाग रही थी जैसे वह अभी भी जवान हो। मैं जल्दी से सीढ़ियों पर से उठी और दरवाज़े की ओर भागने लगी। मैं दरवाज़े तक पहुँची ही थी कि मेरा सिर दरवाज़े से टकरा गया और दरवाज़े का कुंदा मेरी आँख पर लग गया। मैं वहीं पर गिरकर तड़पने लगी थी। मेरी आँखों से खून बह रहा था।

दादी मुझे मारने आ ही रही थी तभी वह एक दम से रुक गयी जैसे वह किसी को देखकर डर गयी हो। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वहाँ मम्मी-पापा, छोटे भाई और मामा की आत्माएँ थी, जो मेरे साथ थी। फिर मैंने जब दोबारा दादी की तरफ देखा तो उन्होंने अपने हाथ का चाकू नीचे फेंक दिया था। जब मैंने वापस मम्मी-पापा की तरफ देखा तो वहाँ पर पण्डित वेदव्यास जी खड़े थे।

पण्डित वेदव्यास जी बार-बार मंत्र पढ़े जा रहे थे। वह दादी पर गंगा जल फेंकने ही वाले थे तभी दादी ने हँसते हुए अपने हाथ से अपना गला काट लिया। उनके हाथ चाकू की तरह पैने हो गये थे। उस वक्त उनका खून लाल नहीं, काला था और वही खून मेरी आँखों पर आकर गिर गया।

जब अगली सुबह मैंने अपनी आँखें खोली तो सब तबाह हो चुका था। मेरा पूरा परिवार खत्म हो चुका था। मेरी आँखों की रोशनी जा चुकी थी और यह बदसूरत निशान मेरी आँख के नीचे चेहरे पर आ गया था।

इस निशान के साथ कुछ अदृश्य शक्तियाँ भी मुझे मिल गयी थी। पण्डित वेदव्यास जी ने मुझे बताया कि मेरी दादी पर किसी ने काला जादू किया था।

मैंने उनसे पूछा, “किसने किया था?”

उस वक़्त उन्होंने कहा, “सही समय आने पर तुम्हें खुद पता चल जाएगा।”

उस हादसे के बाद मुझे कुछ अजीब आवाजें सुनाई देने लग गयी थी, कोई मुझसे कहता रहता, “बचाओ-बचाओ, मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है।”

जब इस बारे में मैंने पण्डित वेदव्यास जी को बताया तो उन्होंने कहा, “यह दूसरी दुनिया की आवाजें है... काली दुनिया की... जहाँ पर प्रेत आत्माओं का वास होता है। तुम्हें इन पर काबू करना सीखना होगा।”

उन्होंने मुझे बंगाल के अराध्य विश्वविद्यालय में भेज दिया जहाँ पर मैंने तंत्र-मंत्र और अपनी शक्तियों का उपयोग करना सीखा।

मैंने कई बार बोला पण्डित वेदव्यास जी से मैं वापस आना चाहती हूँ और अपने परिवार की मौत का पता लगाना चाहती हूँ पर वे हमेशा कहते, “जब सही वक्त आएगा, मैं तुम्हें बुला लूँगा।”

👻 👻 👻 👻 👻

उसी रात 10:30 बजे

"दबकन... दबकन... यहाँ से बस वापस मुड़ने वाली है। जिसे भी उतरना है, जल्दी उतर जाओ।" बस कंडक्टर ने कहा।

"हाँ भईया, यहीं पर रोक दीजिए, हमें यही उतरना है।" विराट ने हाथ से इशारा करते हुए कहा।

विराट और सौम्या बस से नीचे उतर गये।

"यह कहानी छुपी थी मेरे इस निशान के पीछे।" सौम्या ने अपने चेहरे के निशान पर हाथ रखते हुए कहा।

कुछ पल के लिए विराट निःशब्द हो गया था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था वह क्या बोले। जिन्दगी में कई बार हमारे सामने ऐसी परिस्थितियाँ आती है जब हम सामने वाले से हमदर्दी तो जताना चाहते हैं पर नहीं जता पाते, क्योंकि हमें पता होता है हमारे लफ्ज उसके घावों को नहीं भर सकते।

सौम्या और विराट सड़क पर चलते जा रहे थे। सड़क के दोनों तरफ दूर-दूर तक काँची जंगल फैला हुआ था। आबादी का कही नामों निशान नहीं था।

सौम्या ने सड़क पर चलते-चलते विराट से पूछा, "विराट, फिर क्या हुआ? तुमने नित्या से अपने प्यार का इज़हार किया या नहीं?"

"सौम्या जी, प्यार का इज़हार करने से पहले ही हमारी जिन्दगी में एक बहुत बड़ा भूचाल आ गया। सोचा था, वह सच नित्या को कभी नहीं बताऊँगा पर उसे बताना पड़ा।" विराट ने सौम्या के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"कैसा सच विराट?" सौम्या ने हैरानी के साथ पूछा।

विराट वापस से सौम्या को अपनी बेगानी प्रेम कहानी सुनाने लगा।

भाग ०२

[illegible] और नित्या

तारीख 28 मई 2017, रात 11 बजे

डॉक्टर साहब, नित्या का चेकअप करने के लिए, बंगले पर आए हुए थे। चेकअप करते-करते रात बहुत हो गयी इसलिए विराट ने उन्हें वहीं पर रुकने के लिए कह दिया।

नित्या सो चुकी थी। डॉक्टर साहब अपने साथ हमेशा अपनी खुराक रखते थे और उस रात भी उन्होंने दो-तीन खुराक लगा ली थी।

“लो विराट, एक तुम भी लगा लो।” डॉक्टर साहब ने शराब का प्याला विराट की तरफ करते हुए कहा।

“नहीं-नहीं, डॉक्टर साहब! अब मैं नहीं पीता।” विराट ने मना करते हुए कहा।

“कब से भाई! तुम ही थे न जो दिन-रात नशे में डूबे रहते थे।” डॉक्टर साहब ने हँसते हुए कहा।

“हाँ डॉक्टर साहब, पर अब मुझे किसी और चीज का नशा है।” विराट ने शर्माते हुए कहा।

“हाँ, समझ गया।” इतना कहकर डॉक्टर साहब और जोर-जोर से हँसने लगे, “ये मुहब्बत भी कमाल की चीज है, मिल जाए तो आबाद कर देती है और यदि न मिले तो बर्बाद कर देती है।”

उस दिन डॉक्टर साहब ने कुछ ज्यादा ही पी ली थी। वे बात-बात पर गाली दे रहे थे। आलतू-फालतू बातें तो इतनी कर रहे थे कि क्या ही बताया जाए। लेकिन अच्छा ही हुआ जो उन्होंने उस दिन ज्यादा पी ली। इसी कारण उनके मन का पाप ज़ुबान पर तो आया। कहते हैं न, नशे में इंसान सिर्फ सच कहता है। और वही सच उन्होंने उस दिन उगला।

डॉक्टर साहब शराब पी रहे थे तभी उन्होंने बड़बड़ाते हुए नशे में कहा, “यार विराट, जिन्दगी हो तो तुम्हारी तरह हो।”

“क्यों डॉक्टर साहब?”

“भाई, बिना शादी के शादीशुदा जिन्दगी का मजा ले रहे हो, और क्या चाहिए जिन्दगी में।”

“क्या कहा डॉक्टर साहब आपने, मैं कुछ समझा नहीं... आप साफ-साफ कहेंगे...?”

“यही कि लड़की के साथ दिन-रात रहते हो, कुछ तो हुआ होगा दोनों के बीच।”

यह बात सुनकर विराट का खून जलने लगा। उसने डॉक्टर पर भिन्नाते हुए कहा, “इससे पहले कि मैं कुछ कर बैठूँ, प्लीज डॉक्टर साहब, आप यहाँ से चले जाइए।”

“मैंने गलत क्या कह दिया! भला कौन इस दुनिया में ऐसा होगा जो एक अंजान लड़की की इतनी मदद करें, कुछ तो फायदा हो रहा होगा न तुम्हारा। हमें भी वही फायदा करवा दो…! उसके साथ रह रहे हो तुम… उसके साथ... खा रहे हो तुम… तो जाहिर सी बात है न... उसके साथ... सो भी रहे होगे न! हमें भी सुलवा दो।”

इतना सुनते ही विराट ने डॉक्टर साहब की गर्दन पकड़ ली।

“तुम तो नाराज़ ही हो गये, यार! पहले तुमने खुद नशे की हालत में जिससे तुम प्यार करते हो, उसका गुस्से में अपनी कार से एक्सीडेंट कर दिया, फिर अंजान बनकर उसकी मदद करके, उसकी हमदर्दी पाकर, उसके करीब आ गये। यदि मैंने कुछ माँग लिया तो क्या गलत कर दिया।”

डॉक्टर साहब और विराट आपस में बातें ही कर रहे थे तभी सीढ़ियों के ऊपर से व्हीलचेयर की आवाज सुनाई देने लगी। जब विराट की नज़र ऊपर पड़ी तो उसने देखा, सीढ़ियों के ऊपर नित्या थी, जो रो रही थी। नित्या ने विराट और डॉक्टर साहब की सारी बातें सुन ली थी।

“जरूरी नहीं यदि एक लड़का-लड़की एक साथ रहते हो तो उनके बीच कुछ हुआ हो। वे दोनों अच्छे दोस्त भी हो सकते हैं। गलती आपकी नहीं है डॉक्टर साहब, गलती आपकी घटिया सोच की हैं। गंदगी तो आपके दिमाग में भरी हुई है।” विराट ने गुस्से में डॉक्टर साहब की आँखों में देखते हुए कहा।

इतना कहकर विराट, डॉक्टर साहब को धक्के मारकर घर से बाहर निकालने लगा, “आज के बाद यहाँ पर कभी कदम मत रखना, समझा!”

विराट पीछे मुड़ा तो उसने देखा, नित्या जहाँ पहले व्हीलचेयर पर बैठी थी, अब वहाँ पर नहीं थी। विराट भागते हुए नित्या के कमरे में गया और उसने देखा कि नित्या व्हीलचेयर पर बैठकर रो रही थी।

“आप रोइए मत, मैंने जान बूझकर आपका एक्सीडेंट नहीं किया था। यह सब गलती से हो गया था, मुझे माफ कर दीजिए।” विराट ने नित्या के पास जाते हुए धीरे से कहा।

“मैं इस वजह से नहीं रो रही हूँ विराट।” नित्या ने रोते हुए कहा।

“तो फिर आप क्यों रो रही हो?”

"आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि आप मुझे पहले से जानते थे। जिस अतीत के बारे में मैं जानना चाहती हूँ, वह अतीत आपने मुझसे क्यों छुपाकर रखा?"

विराट ने नित्या के सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया। वह मूर्ति बनकर खड़ा हुआ था।

"बताइए, विराट! आपने मुझसे मेरा अतीत क्यों छुपाकर रखा था। बताइए मेरा अतीत क्या था, मैं जानना चाहती हूँ?" नित्या ने फिर विराट से पूछा।

नित्या बार-बार विराट से अपने अतीत के बारे में पूछ रही थी पर विराट उसके किसी सवाल का कोई जवाब नहीं दे रहा था।

नित्या ने विराट के सामने हाथ जोड़ते हुए कहा, "प्लीज! बताइए विराट, मेरा अतीत क्या है। मैं आपके सामने हाथ जोड़ती हूँ। भगवान के लिए बताइए, मेरा अतीत क्या था?"

विराट, नित्या की ज़िद के सामने हार गया था, "मुझे आपका अतीत नहीं पता। मुझे तो आपका असली नाम तक नहीं पता है।" विराट ने रोते हुए कहा।

"क्या!" नित्या ने हैरानी के साथ कहा।

"हाँ, मैं सच कह रहा हूँ। मुझे आपका अतीत नहीं पता, मेरी बात पर भरोसा कीजिए।"

"नहीं! आप झूठ बोल रहे हैं। अभी मैंने खुद डॉक्टर साहब के मुँह से सुना था कि पहले आप मुझसे प्यार करते थे। यदि आप मेरा नाम तक नहीं जानते थे तो फिर मुझसे प्यार कैसे कर सकते हैं।" नित्या ने रोते हुए कहा।

"अब मैं आपको कैसे समझाऊँ, किसी से प्यार करने के लिए उसका नाम जानने की जरूरत नहीं होती है, बस यह पता होना चाहिए कि सामने वाला आपसे प्यार करता है या नहीं।" विराट ने भी रोते हुए कहा।

"प्लीज विराट, आप बाते मत बनाइये और मुझे सीधे-सीधे बताइए। आप मेरे बारे में क्या जानते हैं… हम लोग कैसे मिले थे... मैं जानना चाहती हूँ। प्लीज, बताइए! डॉक्टर साहब क्या बातें कर रहे थे?"

"ठीक है, मैं आपको सब कुछ बताता हूँ।" विराट ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा।

तारीख 10 फरवरी 2016, रात 02 बजे

हर रोज की तरह, मैं देर रात को ऑफिस का काम खत्म कर, शराब पीते हुए अपनी फरारी से घर जा रहा था। मेरे एक हाथ में स्टेरिंग थी, तो दूसरे हाथ में मैकेलन की बोतल। अरिजीत सिंह मेरा फेवरेट सिंगर है, इसलिए हमेशा की तरह उसके ही गाने मेरी फरारी में बज रहे थे।

साथ में मैं भी गुनगुनाए जा रहा था, "तुम साथ हो या न हो क्या... फर्क है..., बे दर्द थी जिन्दगी बे दर्द है... अगर तुम साथ हो... "

मैंने कुछ ज्यादा ही शराब पी रखी थी। मैं गाने की आवाज बढ़ाने के लिए नीचे झुका और जब आवाज बढ़ाकर ऊपर उठा तो देखा, अचानक कार के सामने एक लड़की आ गयी। वह लड़की और कोई नहीं बल्कि नित्या तुम थी। मैंने होश सँभालते हुए ब्रेक लगाये पर तब तक काफी देर हो गयी थी। तुम मेरी कार से टकरा चुकी थी।

मैं उसी वक्त कार से बाहर निकला और तुम्हारे पास आ गया। तुम कार से टकराकर, कार के पास ही गिर गयी थी। तुम्हारे सिर से खून निकल रहा था। मैंने अपने चारों तरफ देखा और सोचा, इससे पहले कि मुझे कोई देखे, मुझे यहाँ से निकल जाना चाहिए वरना मैं मुसीबत में पड़ सकता हूँ। मैं वापस जाकर अपनी कार में बैठ गया।

मैं कार चालू कर ही रहा था तभी मुझे "हेल्प मी। हेल्प मी।" की आवाज सुनाई दी। वह आवाज तुम्हारे पास से आ रही थी। जब कार से उतरकर मैं तुम्हारे पास आया तो मैंने देखा तुम्हारे हाथ की उंगलियाँ हिल रही थी। तुम्हारी साँसे चल रही थी, तुम ज़िन्दा थी।

मैंने तुम्हें हाथ लगाया ही था तभी आसमान में जोर से बिजली चमकने लगी और बारिश होने लगी। मैंने तुम्हें उठाया और बिना तुम्हारा चेहरा देखे ही अपनी कार में बैठा दिया। मैंने सोचा, ऐसी हालत में तुम्हें अपने घर ही ले जाना ठीक होगा। अगर हॉस्पिटल ले गया तो पुलिस केस हो सकता है। मैंने शराब भी पी रखी थी इसलिए पुलिस वाले कभी मेरी बात पर यकीन नहीं करते। मैं जितनी जल्दी तुम्हें वहाँ से लेकर निकल सकता था, निकल गया।

मैं, तुम्हें लेकर अपने घर चला गया। जब मैं तुम्हें कार से उतार रहा था तो उस वक्त भी तुम्हारी घनी जुल्फों ने तुम्हारा चेहरा ढक रखा था। मैं अभी तक तुम्हारा चेहरा नहीं देख पाया था। मेरे मन में तुम्हारा चेहरा देखने की इच्छा बढ़ती जा रही थी।

मैंने तुम्हें अपने कमरे के बेड पर लेटा दिया। उस वक्त भी तुम्हारी जुल्फों ने तुम्हारे चेहरे को ढक कर रखा था। तुम्हारी काली-काली जुल्फों में से मुझे बस तुम्हारी दो आँखें नज़र आ रही थी।

फिर मेरा ध्यान तुम्हारे चेहरे से हटकर तुम्हारे शरीर के घावों पर चला गया था। तुम्हारे सिर पर जो घाव था, वह तो मेरी कार से टकराने के कारण आया था, पर बाकी के घाव कैसे आए थे? तुम्हारे हाथ-पैरो में खरोंच के निशान थे जो पुराने लग रहे थे। मेरी समझ नहीं आ रहा था कि इतने गहरे घाव तुम्हें कैसे लगे होंगे? तुमने खुद अपने आप को दिए होंगे या किसी और ने? मेरे ज़ेहन में बहुत सारे सवाल थे।

मैंने डॉक्टर रूपम पराते को फोन कर दिया था और वह जल्द ही आने वाले थे।

तारीख 10 फरवरी 2016, सुबह 5 बजे

मैं अपने कमरे में तुम्हारे पास बैठा हुआ था, तभी बेड के पास लगी खिड़की में से जोर से एक हवा का झोंका अंदर आया, जिस कारण तुम्हारे चेहरे पर बिखरे बाल हवा में उड़ने लग गये। जब मैंने तुम्हारा चेहरा देखा तो मैं बस तुम्हें देखते ही रह गया। तुम्हारे चेहरे में न जाने क्या जादू था, जो मुझे तुम्हारी तरफ खींच रहा था। तुम्हारे चेहरे को देखकर एक अपनापन-सा लग रहा था मुझे। लग रहा था कि कोई गहरा रिश्ता है मेरा तुम्हारे साथ। मैं, तुम्हारा चेहरा देखकर सब कुछ भूल गया था।

मैं तुम्हारा चेहरा देख ही रहा था तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा डॉक्टर साहब आए थे। मैंने डॉक्टर साहब को कुछ नहीं बताया, बस इतना कहा, "जिसका आपको इलाज करना है, वह ऊपर है।"

डॉक्टर साहब मेरे परिवार के सदस्य की तरह थे, इस वजह से उन्होंने मुझसे उस वक्त कुछ नहीं पूछा और सीधे मेरे कमरे में चले गये।

डॉक्टर साहब ने तुम्हारी मरहम पट्टी कर दी थी और कुछ दवाइयाँ मँगवाई थी जो मैं उसी वक्त ले आया था। वैसे सुबह-सुबह दवाइयों की दुकान नहीं खुलती पर डॉक्टर साहब की एक परिचित की दुकान थी, उन्होंने उनसे फोन पर बात कर ली थी।

जब मैं कार से दवाइयाँ लेने जा रहा था, उस वक्त भी मैं भगवान से बस यही दुआ कर रहा था कि तुम्हें कुछ न हो। पता नहीं यह ख्याल मेरे मन में बार-बार क्यों आ रहा था। बस मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता था।

लेकिन मैंने तुम्हें पाया ही कब था जो तुम्हें खोने से डर रहा था। मुझे तो तुम्हारा नाम तक नहीं पता था। शायद इसी को पहली नज़र का प्यार कहते हैं, जिसे भले ही आपने पाया नहीं हो, पर उसे खोने का डर आपको पहले सताने लगता है।

तारीख 10 फरवरी 2016, सुबह 11 बजे

मैं और डॉक्टर साहब, हॉल में सोफे पर बैठकर चाय पी रहे थे। चाय मुझे ही बनानी पड़ी क्योंकि मैंने घर में बस एक ही नौकर रखा था और वह भी उस वक्त छुट्टी पर अपने गाँव गया था। इसी कारण मुझे रोज होटल से खाना मंगवाना पड़ता था। चाहता तो नया नौकर रख लेता पर क्या करता, नये लोगों से ज्यादा मुझे तनहाइयाँ ज्यादा पसंद थी और जल्दी किसी पर भरोसा भी नहीं होता था।

"यह लड़की कौन है?" डॉक्टर साहब ने मुझसे पूछा।

मैं इस सवाल का कुछ जवाब देता, इससे पहले ही जिस कमरे में तुम थी वहाँ से मुझे तुम्हारे चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। डॉक्टर साहब और मैं भागते-भागते उस कमरे में गये। वहाँ पर जाकर हमने देखा, तुम्हें होश आ गया था।

डॉक्टर साहब ने तुम्हें ग्लूकोज की बोतल चढ़ाई थी, जिससे धीरे-धीरे ग्लूकोज, आईवी पाइप में से होकर, तुम्हारे शरीर में जा रहा था। उस बोतल में से ग्लूकोज लगभग खत्म होने वाला था।

शायद यह ग्लूकोज का ही कमाल था कि जैसे ही डॉक्टर साहब ने तुम्हारे हाथ में से ग्लूकोज की सुई निकाली, तुम मुझ पर जोर से चिल्लाकर कहने लगी, "कौन हो तुम... और मेरे घर में क्या कर रहे हो?"

एक पल के लिए तो मुझे समझ नहीं आया कि तुम कहना क्या चाहती हो। मुझे लगा, सिर पर गहरी चोट लगने के कारण तुम पागल हो गई हो।

तुम मुझसे बार-बार यही कहे जा रही थी, "बाहर निकलो मेरे घर से... बाहर निकलो।"

तुम्हें, मुझे देखकर इतना ज्यादा गुस्सा आ रहा था कि मैं बता नहीं सकता, ऐसा लग रहा था जैसे तुम मुझे कच्चा चबा जाओगी।

"विराट, मुझे लगता है, इस वक्त तुम्हारा इस कमरे से बाहर चले जाना ही ठीक होगा।" डॉक्टर साहब ने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

डॉक्टर साहब की बात मानकर मैं उस कमरे से बाहर चला गया। डॉक्टर साहब काफी देर तक तुम्हारे कमरे में थे। जैसे-जैसे वक्त बढ़ता जा रहा था, मेरा मन बेचैन होते जा रहा था। यह सोचकर कि डॉक्टर साहब तुम्हें क्या समझा रहे होंगे, उन्हें तो तुम्हारे बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैं यह सब सोच ही रहा था, तभी डॉक्टर साहब कमरे से बाहर आ गये।

“वह ठीक तो है न, डॉक्टर साहब?” मैंने डॉक्टर साहब के पास जाते हुए पूछा।

“अभी नींद का इंजेक्शन दे दिया है। सिर पर गहरी चोट लगने के कारण वह अपनी याददाश्त खो चुकी है। उसे लगता है, यह घर उसी का है।” डॉक्टर साहब ने कहा।

“क्या उसे कुछ भी याद नहीं है?”

“नहीं, उसे कुछ याद नहीं है।”

“क्या हम उसे उसका अतीत याद दिलाने की कोशिश नहीं कर सकते?”

“नहीं, बिल्कुल नहीं... यदि हमने ऐसा किया तो हो सकता है कि वह कोमा में चली जाए और फिर कभी कोमा से बाहर न आए।”

“ठीक है डॉक्टर साहब, पर अब आगे क्या करना है?”

“उसकी हालत देखते हुए मुझे लगता है कि वह लड़की जैसा समझ रही है, उसे वैसा समझने देना चाहिए। बहुत से केसेस में कई मरीज़ों को यही लगता है, फिर धीरे-धीरे वक्त के साथ उनकी याददाश्त खुद वापस आने लगती है।”

“पर तब तक मैं क्या करूँ?”

“यह मुझे नहीं पता... देखो, मैं एक डॉक्टर हूँ और मेरा काम है मरीज़ को होश में लाना, वह मैंने कर दिया है। अब तुम देखो, तुम्हें आगे क्या करना है। मुझे तो मेरे मरीज़ों को देखने जाना है।” डॉक्टर साहब ने अपनी घड़ी में देखते हुए कहा, “वैसे भी पौने बारह (11:45) बज गये है... मैं पहले ही अस्पताल जाने के लिए लेट हो चुका हूँ।”

इतना कहकर डॉक्टर साहब अस्पताल जाने के लिए रवाना होने लगे। वे दरवाज़े तक पहुँचे ही थे कि उन्होंने पलटकर पूछा, “वैसे यह लड़की है कौन, आज से पहले तो मैंने इसे कभी नहीं देखा?”

“कल रात मेरी कार से इसका एक्सीडेंट हो गया था और उस वक्त मैंने इसे अपने घर लाना ही ठीक समझा इसलिए मैं इसे अपने घर ले आया।” मैंने डॉक्टर साहब को सारा किस्सा सुना दिया।

कुछ देर के लिए डॉक्टर साहब चुप हो गये फिर उन्होंने हैरानी के साथ कहा, “आज से पहले तो मैंने तुम्हें किसी की मदद करते हुए नहीं देखा, और आज की तो वह भी इतनी बड़ी!”

मैंने डॉक्टर साहब की बात का कुछ जवाब नहीं दिया क्योंकि मुझे पता था डॉक्टर साहब बिल्कुल ठीक कह रहे थे। इस दुनिया के साथ-साथ मैं खुद भी बहुत ख़ुदग़र्ज़ बन गया था। न किसी के दुःख दिखते थे, न दर्द, मैं बहुत मतलबी बन गया था।

“वैसे यदि तुम्हें इसे अपने घर में रखने में कोई परेशानी हो तो मैं इसे अपने अस्पताल ले जाता हूँ... वहाँ पर इसकी अच्छे से देखभाल भी हो जाएगी।” डॉक्टर साहब ने सुझाव दिया।

“नहीं-नहीं डॉक्टर साहब, वहाँ पर पुलिस आ सकती है और फिर वे तरह-तरह के सवाल पूछेगी। मैं मुसीबत में पड़ सकता हूँ। वैसे भी पुलिस वालों का काम होता है, बाल की खाल उतारना, सच को झूठ और झूठ को सच बनाना।” विराट ने बौखलाहट के साथ कहा।

“ठीक है, जैसा तुम ठीक समझो, यदि मेरी कोई जरूरत हो तो जरूर बताना।” इतना कहकर डॉक्टर साहब वहाँ से चले गये।

डॉक्टर साहब को गये हुए एक घंटा बीत चुका था और मुझे अपने ही घर से वनवास मिल चुका था। मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मैं अपने घर में कैसे घुसे?

मैं अपने घर के सामने बगीचे में रखी बेंच पर बैठा हुआ था, तभी मुझे एक आइडिया आया।

👻 👻 👻 👻 👻

कुछ देर बाद

नित्या होश में आ गयी थी और उसको बहुत भूख लग रही थी। नित्या खाना खाने के लिए किचन में जा ही रही थी, तभी किसी ने दरवाज़े की बेल बजाई। जब उसने दरवाजा खोला तो देखा, दरवाजे पर विराट खड़ा हुआ था।

"तुम!" नित्या ने विराट को घूरते हुए कहा।

"हाँ मैं...!" विराट ने अपना सिर हिलाते हुए जवाब दिया।

"चले जाओ यहाँ से! तुम्हें एक बार में समझ में नहीं आता क्या? मना किया था न यहाँ पर मत आना।"

"हाँ जानता हूँ पर एक बार मेरी बात तो सुन लीजिए।"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं सुनना।" नित्या ने गुस्से में कहा।

"प्लीज, एक बार।"

"मैंने कहा ना... मुझे कुछ नहीं सुनना।"

"देखिए, मैं बहुत मुसीबत में हूँ, मुझे नौकरी की सख्त जरूरत है।"

"लेकिन मुझे नौकर की कोई जरूरत नहीं है।" नित्या ने जोर से दरवाज़ा विराट के मुँह पर बंद करते हुए कहा।

ऐसा लग रहा था जैसे नित्या ने विराट के मुँह पर एक जोर से तमाचा मारा हो। वैसे विराट बहुत गुस्से वाला इंसान था, वह चाहता तो उसी वक्त नित्या को अपने घर से निकाल सकता था, पर उसने ऐसा नहीं किया। शायद इसलिए, क्योंकि विराट, नित्या को पहली नज़र में ही पसंद करने लगा था। इसे ही प्यार की शुरुआत कहते हैं जो झगड़े से शुरु और मुहब्बत पर खत्म होती है।

* * *

नित्या की भूख और बढ़ने लग गयी थी, उसके पेट में चूहे कूदने लगे थे। वह किचन में गयी और खाने का सामान ढूँढ़ने लगी पर उसे कुछ भी ऐसा नहीं मिला जिसे वह खा सकती हो। हाँ, वहाँ पर सब्जियाँ जरूर रखी थी पर वह क्या करती, खाना तो उसे बनाना ही नहीं आता था।

नित्या वापस अपने कमरे में चली गयी। जब उसने खिड़की से बाहर झाँका तो देखा विराट अभी भी उसके गार्डन में बेंच पर बैठा हुआ था।

देखते ही देखते, नित्या के सिर में दर्द होने लगा, उसे अजीब सी आवाजें सुनाई देने लगी, "एंजल, तुम सिर्फ मेरी हो! तुम्हें मुझसे कोई अलग नहीं कर सकता, एंजल।"

ये आवाजें विराट को बाहर सुनाई नहीं दे रही थी। कोई नित्या के कानों में बार-बार कह रहा था, "वापस आओ, वापस आओ एंजल। तुम सिर्फ मेरी हो, तुम्हारा जिस्म सिर्फ मेरा है... सिर्फ मेरा।"

नित्या से यह आवाजें सही नहीं गयी और वह बेड पर ही बेहोश हो गयी।

👻 👻 👻 👻 👻

🔴 BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL 🔴

साहित्य/उपन्यास संग्रह

Join Here

Global Book House

Join Here

Hindi Comics Library

Join Here

Digital Art Library

Join Here

Audio Books Museum

Join Here

Global Books Museum

Join Here

Indian Comics Museum

Join Here

Movie Junction

Join Here

Global Comics Museum

Join Here

Radha Bhakti Sagar

Join Here

Sahitya Junction Official

Join Here

Nisha Music Library

Join Here

तारीख 10 फरवरी 2016, शाम 5 बजे

जब नित्या होश में आयी तो वापस से नॉर्मल हो गयी। अब उसे आवाजें सुनाई नहीं दे रही थी पर अब चूहे नित्या के पेट में तांडव करने लगे थे।

"यदि अब मेरे पेट में कुछ नहीं गया तो मैं मर जाऊँगी... काश, मैंने उस लड़के की बात सुन ली होती और उसे नौकरी पर रख लिया होता तो कम से कम मुझे भूखे पेट तो नहीं मरना पड़ता।" नित्या ने खुद से कहा।

नित्या अपने बेड से उतरकर उदास चेहरा लेकर खिड़की के पास चली गयी। जब उसने खिड़की से बाहर झाँककर देखा तो उसके चेहरे पर मुस्कान आ गयी। विराट अभी भी गार्डन में बेंच पर बैठा हुआ था।

नित्या भागते-भागते सीढ़ियों से नीचे आई और दरवाज़ा खोलकर विराट को देखने लगी। विराट भी जमीन से अपनी नज़रें ऊपर उठाकर उसे देखने लगा। नित्या ने विराट को अपने हाथ से इशारा करके अपने पास बुलाया पर विराट को उसका इशारा समझ में नहीं आया और वह वहीं पर बैठा रहा।

"ऐ लड़के, इधर आओ...।" नित्या ने जोर से विराट को आवाज देते हुए कहा।

विराट भागते हुए नित्या के पास जाने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे विराट इसी पल का इंतजार रहा था कि कब नित्या उसे पुकारे और कब वह उसके पास जाए।

"तुम्हें नौकरी चाहिए थी न?" नित्या ने कुछ सोचने का दिखावा करते हुए कहा।

"हाँ मैम।" विराट ने झट से कहा।

"क्या-क्या काम कर लेते हो तुम?"

"मैम, मैं सब काम कर लेता हूँ जैसे खाना बनना, कपड़े धोना, कार चलाना, सब कुछ। सब काम आता है मुझे, आप बस काम बोलिये क्या काम करना है मुझे?"

"वैसे तो तुम्हें ये सारे काम करने होंगे पर तुम्हें मेरे मनोरंजन के लिए भी कुछ करना होगा। क्या तुम्हें कुछ करना आता है जैसे गाने गाना, डांस करना या फिर स्टैण्डअप कॉमेडी करना, ऐसा कुछ?"

विराट अपने सिर पर हाथ रखकर कुछ सोचने लगा फिर एकदम से बच्चों की तरह हाथ उठाते हुए जैसे किसी शिक्षक ने कोई सवाल पूछा हो कहने लगा, "हाँ... हाँ... कर सकता हूँ न। मैं आपके लिए शायरियाँ बोल सकता हूँ।"

"अच्छा, तो तुम शायर हो।"

"शायर तो नहीं पर हाँ, कभी-कभी तनहाइयों को मिटाने के लिए लफ्जों का सहारा ले लेता हूँ और उन्हें पन्नों में उकेर देता हूँ।"

"ठीक है, पर तुम्हारी सैलरी सिर्फ दस हजार होगी।"

"ठीक है मैम।" इतना कहकर विराट घर में घुसने लगा, तो नित्या ने अपना हाथ दरवाज़े पर रखते हुए विराट का रास्ता रोक लिया।

"अरे रुको-रुको! अंदर कहाँ जाते हो... जाने से पहले, कुछ अर्ज तो कर दो।"

विराट सोचने लगा कि वह क्या बोले, तभी उसके दिमाग में कुछ लाइनें आई और वह कहने लगा,

"ना ही चाँद लाकर दे सकता हूँ, ना ही ताजमहल बनाकर दे सकता हूँ,

मैं एक छोटा सा शायर हूँ, रोज एक नई गज़ल बनाकर दे सकता हूँ।"

"वाह... वाह... वाह...।" नित्या ने विराट को दाद देते हुए कहा।

विराट और नित्या, साथ-साथ घर के अंदर चले आए।

जैसे ही विराट ने घर के अंदर कदम रखा, नित्या उससे कहने लगी, "देखो, सबसे पहले तुम्हें मेरे लिए खाना बनाना है, मुझे बहुत तेज भूख लगी है।"

"ठीक है मैम।" विराट ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

विराट को ऑर्डर देने के बाद, नित्या सीढ़ियों से ऊपर चलते हुए कमरे में चली गयी।

विराट किचन में गया और मन में सोचने लगा, 'खाना बनाने के लिए हाँ तो बोल दिया पर कमबख़्त खाना बनाना आता किसे है। मेरा खाना तो खुद होटल से आता है।'

कुछ देर तक विराट ऐसे ही खड़ा रहा, फिर न जाने उसके दिमाग में क्या आया, वह जोर से चिल्लाते हुए कहने लगा, "आइडिया... यूट्यूब! आज के युग के गुरु तो यूट्यूब है, जो हमें सब सिखा देते हैं।"

विराट ने अपनी पेंट की जेब में से मोबाइल निकाला और यूट्यूब से भिण्डी की सब्जी बनाना सीखने लगा। जैसा-जैसा विडिओ में दिखाते जा रहे थे, विराट वैसा-वैसा करते जा रहा था। हैरत की बात तो यह थी कि विराट ने अपनी जिन्दगी में पहली बार खाना बनाया था और सब्जी के साथ-साथ रोटी, चावल भी बना लिए थे, वह भी एकदम परफैक्ट। विराट भी यह सोचकर हैरान था कि यह सब उसने कैसे कर लिया।

विराट ने खाना बनाकर डाईनिंग टेबल पर लगा दिया था। खाना दिखने में तो अच्छा लग रहा था, पर न जाने उसका स्वाद कैसा होगा, यही सोच-सोचकर विराट का मन बेचैन हुए जा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था, कहीं खाना पसंद न आने पर नित्या उसे नौकरी से न निकाल दे। इतनी मुश्किल से तो वह खुद के घर में घूसा था। विराट यही सोच रहा था तभी नित्या डाईनिंग टेबल के पास आ गयी।

“खाना बन गया?” नित्या ने विराट के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा।

“हाँ मैम, बन गया।”

नित्या खाना खाने के लिए कुर्सी पर बैठ गयी। उसने डाईनिंग टेबल पर रखे बर्तनों से ढक्कन हटाना शुरु कर दिया। जब नित्या ने भिण्डी की सब्जी देखी तो उसके चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान आ गयी।

“अरे वाह! तुमने भिण्डी बनाई है...।” नित्या ने खुश होते हुए कहा, “भिण्डी तो... भिण्डी तो मेरी पसंदीदा सब्जी है।” कहते हुए नित्या ने फुर्ती के साथ अपना हाथ आगे बढ़ाया और रोटी का निवाला तोड़कर खाने लगी।

पहला निवाला खाकर नित्या कुछ देर के लिए चुप बैठी रही।

‘लगता है, मेरी नौकरी तो गयी।’ विराट मन-ही-मन सोचने लगा।

“वाह... क्या सब्जी बनायी है तुमने।” नित्या ने खुश होते हुए कहा।

“यह करिश्मा कैसे हो गया?” विराट ने धीरे से खुद से कहा।

“यार, तुम्हारे हाथ में तो जादू है! इतना स्वादिष्ट खाना कैसे बना लेते हो, मुझे तो खाना बनाना भी नहीं आता।”

“जादू मेरे हाथ में नहीं है, जादू तो उसमें है जिसके लिए मैंने खाना बनाया है।”

“क्या कहा तुमने?” नित्या ने हैरानी के साथ पूछा।

“कुछ नहीं... कुछ नहीं...।” विराट ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

“वैसे, नाम क्या है तुम्हारा?”

“विराट... विराट धनराज नाम है मेरा, मैम।”

विराट ने नित्या को अपना नाम तो सही बताया पर उपनाम गलत बताया। विराट नहीं चाहता था, नित्या को उसका पूरा नाम पता चले।

नित्या, विराट का नाम सुनते ही हँसने लगी, “वाह! यह तो वही कहावत हुई, नाम बड़े और दर्शन छोटे... उपनाम है धनराज और हो तुम कंगाल।”

“जी मैम, ये सब तो तकदीर का खेल है बस।”

“देखो, तुम ये बार-बार मुझे मैम मत बोला करो, तुम न मुझे…” इतना कहकर नित्या अपने सिर पर हाथ रखकर अपना नाम याद करने लगी।

विराट, नित्या को देखकर समझ गया था कि नित्या अपना अतीत याद करने की कोशिश कर रही थी। कहीं वह अपने सिर में ज्यादा दबाव न दे दे और कोमा में न चली जाये, इसी डर से विराट के मन में जो भी पहला नाम आया वह उसने बौखलाहट के साथ कह दिया, “नित्या… नित्या राजपूत नाम है आपका।”

“तुम्हें कैसे पता मेरा नाम?” नित्या ने अपनी आँखें बड़ी करते हुए हैरानी के साथ पूछा।

“अरे! आपको कौन नहीं जानता। आपका भारत में बहुत बड़ा हीरो का कारोबार है। आपकी कई कम्पनियाँ है। आपकी कम्पनी का नाम नित्या डायमंड मर्चेंट है। तभी तो मैं नौकरी की तलाश में यहाँ आपके घर आया था।” विराट ने बहाना बनाते हुए कहा।

“अच्छा… फिर मुझे कुछ याद क्यों नहीं आ रहा है। शायद सिर पर चोट लगने के कारण मुझे कुछ याद नहीं।” नित्या ने खुद अपनी बात का जवाब दे दिया।

“क्या तुमने मेरी कम्पनी देखी है?” नित्या ने विराट से पूछा।

“हाँ, देखी है न।”

“क्या हम वहाँ चल सकते हैं?”

“हाँ, चल सकते हैं।”

“अभी?”

“क्या? अभी!” विराट ने चौंककर कहा।

“हाँ, अभी!”

“नहीं, हम अभी वहाँ नहीं चल सकते?”

“पर क्यों?”

“क्योंकि… क्योंकि… क्योंकि आज रविवार है। आज कम्पनी की छुट्टी रहती है। वहाँ हमें कोई नहीं मिलेगा, हम कल चलेंगे।” विराट ने दूसरा बहाना बनाते हुए कहा।

“ठीक है, पर मैं घर में नहीं रहना चाहती। मैं कहीं घूमने जाना चाहती हूँ। तुम कार निकालो, मैं तैयार होकर आती हूँ।”

“ठीक है मैम।”

नित्या कमरे में तैयार होने चली गयी। नित्या के जाते ही विराट ने अपना मोबाइल निकाला और करण को फोन करने लगा।

"हैलो, करण।" विराट ने कहा।

"जी सर, बोलिए।" करण की फोन के अंदर से आवाज आयी।

"तुझे कितनी बार बोला है करण, तू मुझे सर नहीं विराट बोला कर। आखिर भाई की तरह है तू मेरे।"

"सॉरी विराट, मैं भूल गया था।"

"चल, यह सब छोड़... अब मैं जो बोल रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनना और प्लीज कोई सवाल मत पूछना। जब तू मुझे मिलेगा, तब मैं तुझे सब कुछ बता दूँगा। अभी मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। बस मैं जितना कह रहा हूँ, उतना कर देना।"

"ठीक है विराट, पर पहले तू बताएगा भी कि करना क्या है?"

"सुन, मेरी जितनी भी कम्पनियाँ है, उन सबका नाम नित्या डायमंड मर्चेंट कर दे।"

"पर क्यों?"

"मैंने कहा था न कोई सवाल नहीं... और याद रखना, कल जो नित्या मेरे साथ ऑफिस आएगी, वह कम्पनी की नयी मालकिन होगी। सबसे कह देना और कोई भी उसके सामने मुझे सर नहीं कहेगा।"

"पर वह नित्या है कौन, बताएगा भी?"

"प्लीज, अभी कोई सवाल नहीं… मैं मिलकर तुझे सब बताता हूँ।"

"पर विराट सुन तो..."

"विराट... विराट...!" नित्या के कमरे से उसके चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। नित्या की आवाज में क्रोध झलक रहा था।

विराट ने नित्या की आवाज सुनकर फोन कट कर दिया। विराट भागते-भागते नित्या के कमरे में गया और उसने देखा, नित्या अलमारी के सामने चौंककर खड़ी हुई थी। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उसे साँप सूँघ गया हो।

"क्या हुआ नित्या मैम?" विराट ने बौखलाहट के साथ पूछा।

"ये क्या है विराट?" नित्या ने अलमारी की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"क्या है यहाँ... यहाँ तो कपड़े रखे है, आप तो ऐसे चिल्ला रही थी जैसे आपने कोई साँप देख लिया हो?" विराट ने अलमारी के अंदर देखते हुए कहा।

“वह तो मुझे भी दिख रहा है, पर इसमें सारे कपड़े लड़कों के क्यों है, इसमें तो मेरे कपड़े होने चाहिए न?” नित्या ने चिढ़ते हुए कहा।

विराट को लगा उसका झूठ पकड़ा गया और अब उसे नित्या को सच बताना होगा, पर जब उसने नित्या को जवाब देने के लिए अपना मुँह खोला तो अपने आप उसके मुँह से झूठ निकल गया, “मुझे क्या पता... यह तो आपका घर है...। मैंने तो आज ही यहाँ नौकरी जॉइन की है।” विराट ऐसे अंजान बन रहा था जैसे उसे इन सब के बारे में कुछ पता ही नहीं था।

“पता नहीं... यह सब मेरे साथ क्या हो रहा है... जब से यह एक्सीडेंट हुआ है, मुझे कुछ याद ही नहीं रहता।” नित्या ने अपने सिर पर हाथ रखते हुए कहा।

“आप फिक्र मत कीजिए। वैसे भी हम बाहर तो जा ही रहे हैं, हम मॉल से आपके लिए नये कपड़े खरीद लेंगे।”

“ठीक है।” नित्या ने कहा।

* * *

विराट, नित्या को कार में बैठाकर घुमाने निकल गया। विराट ड्राइवर की तरह कार चला रहा था और नित्या मालकिन की तरह आराम से पीछे बैठी हुई थी।

कुछ ही देर में विराट, नित्या को लेकर मॉल पहुँच गया। मॉल पहुँचकर नित्या कपड़ों की शॉपिंग करने लग गयी। अपने पसंद के कपड़े लेने के बाद नित्या पेमेंट काउंटर पहुँची तो उसने देखा कि उसके पास पर्स नहीं था।

“मैं अपना पर्स लाना भूल गयी, क्या तुम्हारे पास पैसे है?” नित्या ने विराट से कहा।

विराट जो नित्या से कुछ चार कदम पीछे खड़ा था, कहता है, “जी मैम, हैं।”

“अच्छा, तो तुम अभी पेमेंट कर दो, घर पहुँचकर मैं तुम्हारे सारे पैसे वापस कर दूँगी।”

कपड़े खरीदने के बाद नित्या मेकअप का सारा सामान और सैंडल की शॉपिंग करने लगी। हर बार बिल भरते वक्त नित्या विराट से यही कहती, “घर पहुँचकर मैं तुम्हारे सारे पैसे वापस कर दूँगी।”

यह बात सुनकर विराट मन-ही-मन मुसकुराता और सोचता, घर पर पता नहीं कहाँ से इसके पास पैसे आ जाएंगे, सारे पैसे तो मेरे ही है और वह मेरे पास ही रखे है।

* * *

तारीख 10 फरवरी 2016, रात 10 बजे

विराट और नित्या ने साथ में बाहर ही खाना खा लिया था। विराट कार चलाते-चलाते यही सोच रहा था, कहीं घर पर जाते से ही नित्या अपना पर्स और ए.टी.एम. न ढूँढ़ने लगे, वरना दिक्कत हो जाएगी। यही फिक्र विराट को खाए जा रही थी।

कुछ ही देर में विराट और नित्या घर पहुँच गये। नित्या आगे-आगे और विराट, नित्या का सामान लेकर उसके पीछे-पीछे चल रहा था। विराट सोच रहा था, शायद अब नित्या को सच बताना पड़ेगा कि वह अपनी याददाश्त खो चुकी है।

विराट, नित्या को सच बताने के लिए अपना मुँह खोलने लगा, “नित्या मैम, वह बात यह है कि... ”

विराट अपनी बात पूरी करता, उससे पहले ही नित्या ने विराट की बात को काटते हुए कहा, “देखो विराट, मैं न सोने जा रही हूँ। मैं बहुत थक गई हूँ। याद रखना, कल हमें ऑफिस जाना है, तुम मुझे वक्त पर उठा देना वरना मैं सोते ही रह जाऊँगी।” इतना कहकर नित्या अपने कमरे में जाने लगी।

विराट ने अपना सिर हाँ में हिला दिया।

नित्या के जाते ही विराट अपनी पैन्ट की जेब में से मोबाइल निकालकर करण को फोन लगाया।

“सारा काम कर दिया, जो-जो मैंने कहा था?” विराट ने फोन पर कहा।

“हाँ, कर दिया। अब बताएगा भी कि वह लड़की कौन है और अचानक से कहाँ से आ गयी?” करण ने कहा।

“करण, सब बताऊँगा... बस अभी थोड़ा सब्र कर। चल, अब मैं सोने जा रहा हूँ, कल सुबह जल्दी उठकर नाश्ता भी बनाना है।”

“क्या कहा, नाश्ता?”

करण ने चौंककर इतना ही कहा था कि विराट ने फोन कट कर दिया।

“क्या हो गया है विराट को, आज से पहले तो ऐसी बातें करते कभी नहीं सुना। चलो, अब मैं भी सोने जाता हूँ। कल नई मालकिन के स्वागत की तैयारी जो करनी है।” करण ने खुद से कहा।

तारीख 11 फरवरी 2016, सुबह 9 बजे

सुबह के नाश्ते के बाद, विराट कार के पास खड़े होकर नित्या का इंतजार कर रहा था। विराट को नित्या का इंतजार करते-करते एक घंटा हो गया था।

विराट बार-बार कार का हॉर्न बजाकर नित्या को बुलाये जा रहा था और हर बार नित्या यही कह रही थी, "बस दो मिनट विराट, मैं अभी आई।"

"ये लड़कियों के दो मिनट कभी खत्म नहीं होते।" विराट ने खुद से कहा।

विराट कुछ सोच ही रहा था तभी बंगले का दरवाज़ा खुला और विराट की नज़रें दरवाज़े पर पड़ी तो उसने देखा, दरवाज़े से नित्या बाहर आ रही थी।

नित्या ने सफेद और नीले रंग की साड़ी पहनी हुई थी। उसका सौंदर्य रूप उस साड़ी में निखर रहा था। विराट की नजरे नित्या के चेहरे से हट ही नहीं रही थी। विराट मन-ही-मन कहने लगा,

"तुम्हारी ज़ुल्फ़ों में एक साज़ है,
तुम्हारी चाल में एक अंदाज है,
तुम्हारे लबों पर रहती नमाज़ है,
तुम्हारे पास हुस्न का ताज है,
तुम्हारी नज़रों में भी एक मुमताज़ है,
तुम्हारे पास जो दिल है ना,
उस दिल के हम मोहताज है,
तुम्हें शायद नहीं है खबर,
मेरे रोग का सिर्फ तुम्हारे पास इलाज है।"

विराट के लिए कुछ पलों के लिए वक्त थम सा गया था। मोहब्बत होती ही ऐसी है, जहाँ सारी दुनिया चलती-रहती है पर आपके लिए वक्त थम जाता है।

विराट, नित्या के सौंदर्य से इतना आकर्षित हो गया था कि उसे पता ही नहीं चला कि कब नित्या उसके पास आ गयी और उसे छूते हुए पूछने लगी, "कहाँ खो गये जनाब?"

"कहीं नहीं मैम, बस यूँ ही... आप आइये न, बैठिए।"

"नहीं... मुझे नहीं बैठना।" नित्या ने बैठने से मना करते हुए कहा।

“क्यों, क्या हुआ मैम?”

“इतनी खूबसूरत लड़की तुम्हारे सामने खड़ी है और तुम उसकी तारीफ किए बिना ही उसे बैठा रहे हो। पहले मेरी तारीफ करो तभी बैठूँगी, वरना भूल जाओ ऑफिस जाना।”

‘ये लड़कियों के यही नाटक होते है, पहले घंटों तक तैयार होती है फिर अपनी तारीफ खुद अपने मुँह से करवाती है।’ विराट मन-ही-मन बोलने लगा।

“बस इतनी सी बात, अभी कर देते हैं आपकी तारीफ।” विराट ने नित्या की तरफ देखते हुए कहा,

“मेरी दुनिया का आफ़ताब हो आप, मेरी जिंदगी का खिताब हो आप

है ख़ुदा को भी आप खुब पसंद, इतनी ज्यादा लाजवाब हो आप”

“वाह! वाह! क्या बात है।” नित्या ने कहा।

नित्या और विराट, कार में बैठकर ऑफिस जाने के लिए रवाना हो गये। विराट भगवान से यही दुआ कर रहा था कि सब ठीक-ठाक हो जाए, कोई भी उसे सर न बोले और नित्या को ही सब मालकिन समझे।

जब वे दोनों कार से ऑफिस के गेट तक पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ पर बहुत सारी भीड़ जमा थी। गेट के पास रेड कार्पिट बिछा हुआ था। कार्पिट के दायें-बायें कुछ लड़कियाँ गुलाबी रंग की साड़ी पहनकर खड़ी हुई थी, जिनके हाथ में गुलाब के फूलों से भरी थालियाँ थी। सभी लड़कियाँ नित्या के स्वागत के लिए खड़ी थी।

विराट यह सब देखकर समझ गया था कि करण ने सारी तैयारी कर ली थी।

ऑफिस के सभी सदस्य नित्या के स्वागत के लिए वहाँ आ गये थे। विराट कार में से बाहर निकला और नित्या के लिए गेट खोलने लगा।

नित्या ने जैसे ही अपना पहला कदम ज़मीन पर रखा, करण गुलदस्ता लेकर नित्या के पास आ गया और उसे गुलदस्ता देते हुए कहने लगा, “आपका स्वागत है मैम, आपको स्वस्थ देखकर बहुत अच्छा लगा।”

करण के बाद सभी लोग एक-एक करके नित्या को गुलदस्ता देकर उसका स्वागत करने लगे।

इसी बीच करण ने इशारों में विराट से पूछा, “कौन है ये?”

“कुछ देर बाद बताता हूँ।” विराट ने भी इशारों में करण को जवाब देते हुए कहा।

नित्या को गेट से केबिन तक जाने में पांच मिनट लग गये। इस बीच उसे गुलदस्ते और बधाइयाँ मिलती रही और विराट इनके बोझ तले दबता गया।

नित्या मालकिन की तरह आराम से चलकर उस गद्देदार सीट पर जाकर बैठ गयी, जहाँ पर कल तक विराट बैठता था।

विराट इस बात से बहुत खुश था कि कुछ भी गड़बड़ नहीं हुई।

नित्या केबिन में रखी घुमावदार सीट पर बैठकर बार-बार घूम रही थी, "विराट, मुझे नहीं पता था मेरा इतना बड़ा ऑफिस है!" नित्या ने विराट की सीट पर गोल घूमते हुए कहा।

"आपको तो बहुत कुछ नहीं पता मैम?"

"क्या कहा तुमने?"

"कुछ नहीं... कुछ नहीं मैम।"

"अच्छा।"

"मैम दो मिनट, मैं अभी आता हूँ।"

"ठीक है, पर जल्दी आना।"

विराट जैसे ही केबिन से बाहर निकला, उसने देखा कि ऑफिस के सभी लोग नित्या के केबिन की तरफ मुँह लगाकर खड़े हुए थे।

विराट को यह देखकर गुस्सा आ गया, "आज किसी को कुछ काम-वाम नहीं करना क्या...? या यूँ ही मूर्ति बनकर खड़े रहना है?"

इतना सुनकर सब लोग वापस से अपने काम में लग गये। कुछ ही देर में पूरी भीड़ छट गयी।

भीड़ छटने के बाद वहीं पर करण खड़ा हुआ था जो विराट को घूरे जा रहा था। करण को देखकर विराट के चेहरे पर मुस्कान आ गयी।

विराट झट से करण के पास गया और उसे गले लगाते हुए कहने लगा, "शुक्रिया करण, तुने सब सँभाल लिया।"

"शुक्रिया-वुक्रिया छोड़, पहले ये बता, यह लड़की कौन है? यहाँ ऑफिस में सब तरह-तरह की बातें कर रहे हैं... कह रहे हैं कि विराट सर तो बहुत छुपे रुस्तम निकले, ऑफिस में तो किसी लड़की की तरफ देखते तक नहीं और आज एक नई लड़की के लिए कार का दरवाज़ा खोल रहे हैं। विराट, सभी लोग यह जानने के लिए बेक़रार हो रहे हैं कि

यह लड़की कौन है, और सबसे ज्यादा बेक़रार तो मैं हो रहा हूँ। कौन है यह नित्या और रात ही रात में कहाँ से आ गयी। आज से पहले तो इसका नाम कभी नहीं सुना था और ऐसा क्या हो गया कि तूने अपनी कम्पनी का नाम, इस लड़की के नाम पर रख दिया?" करण ने पूछा।

"सब बताता हूँ, पहले तू साँस तो ले ले... इतने सारे सवाल, वे भी एक साथ... क्या हम कहीं बैठकर बात करें?"

"ठीक है, चल ऑफिस की कैन्टीन चलते हैं।"

* * *

विराट और करण, ऑफिस की कैन्टीन में एक दूसरे के आमने-सामने बैठे हुए थे। दोनों के हाथ में कॉफी के कप थे।

"नित्या...नित्या नाम है उस लड़की का।" विराट ने करण से कहा।

नित्या का नाम लेते ही विराट के चेहरे पर मुस्कान आ गयी है। विराट की मुस्कान देखकर करण समझ गया कि यह मुस्कान कौन सी मुस्कान थी।

"वाह भाई! जब सिर्फ नाम लेने से इतनी शर्म आ रही है तो आगे कैसे बताएगा, कहीं प्यार-व्यार तो नहीं हो गया है तुझे उससे?"

"प्यार... यह प्यार क्या होता है, मुझे तो इश्क हुआ है... इश्क!"

जब विराट यह सब कह रहा था, तब उसके मन में नित्या का ही ख्याल आ रहा था। विराट, करण के सामने होते हुए भी वहाँ पर नहीं था।

शायद इसे ही प्यार कहते हैं, जब आप किसी और के साथ रहकर भी किसी और के ख्यालों में खोये रहते हैं।

"इश्क कब हो गया तुझे और कभी तुने बताया नहीं इस लड़की के बारे में?"

"मुझे भी बस कल रात ही पता चला है।"

"मतलब! क्या कहा तुने...? मैं कुछ समझा नहीं?"

"तू नहीं समझेगा भाई, यह मोहब्बत है और जहाँ मोहब्बत होती है वहाँ मतलब नहीं होता है।"

"विराट, तू कब से इतनी गहराई वाली बात करने लगा।" करण ने मुँह फाड़ते हुए कहा।

"भाई, यह मोहब्बत है, यह सब करवा लेती है।"

“चल, ये सब छोड़, यह बता, कौन सी जात की है वह लड़की?”

“भाई करण, मोहब्बत में जात कहाँ होती है, मोहब्बत की जात तो रूह है, जो दो दिलों को मिलाती है, जो सदियों से एक दूसरे के लिए तरसते हैं जिनका मिलना निश्चित होता है, भले ही उनकी जिंदगी में कितने भी मुश्किलें आए।”

“सुना था, मोहब्बत में लोग पागल हो जाते हैं, आज देख भी लिया...” अपनी बात को आगे जारी रखते हुए करण ने फिर विराट से पूछा, “चल यह बता, इसके पिता जी क्या करते हैं?”

“पता नहीं।”

“कहाँ तक पढ़ी है?”

“पता नहीं।”

“रहती कहाँ है?”

“पता नहीं।”

करण, विराट के जवाब सुनकर परेशान हो गया था, “तो पता क्या है इसके बारे में, यही बता दे... कुछ पता भी है या नहीं?” करण ने विराट पर चिढ़ते हुए कहा।

“हाँ, पता है न कि वह अब मेरी जिंदगी का हिस्सा बन गयी है और अब मैं उसके बिना नहीं जी सकता।”

करण ने हाथ जोड़ते हुए कहा, “विराट, मुझे तेरे प्रवचन नहीं सुनने। तू मुझे सीधे-सीधे बताएगा कि वह लड़की कौन है और ऐसा क्या हुआ कि तुने रातों-रात पूरी कम्पनी का नाम बदलवा दिया।”

विराट ने करण को उस रात का पूरा किस्सा सुना दिया कि उसके साथ क्या-क्या हुआ था।

“विराट, तू पागल तो नहीं हो गया है! जिस लड़की का तुझे नाम तक नहीं पता, उसके नाम तुने अपना सबकुछ कर दिया। यह भी तो हो सकता है कि वह लड़की नाटक कर रही हो तेरी जायदाद को पाने के लिए। हो सकता है यह उसका कोई प्लान हो। तू खुद बता, कोई शरीफ लड़की उतनी देर रात को काँची जंगल के रास्ते पर क्या करेगी?”

“मुझे नहीं पता, वह नाटक कर रही है या क्या कर रही है, बस यह पता है यह जो मेरे सीने में दिल है न, वह उसके लिए धड़कने लगा है। उसको देखकर सुकून मिलता है; जिंदगी जीने के लिए जिस वजह की जरूरत थी, वह वजह मुझे मिल गयी है।”

"ठीक है विराट, अगर तू उसके साथ खुश है तो मैं कुछ नहीं कहूँगा... पर हाँ सँभलकर रहना, जमाना बहुत खराब है, कहीं तू किसी मुसीबत में न पड़ जाए?"

"मुसीबत में पड़ने का सवाल ही नहीं उठता, जब तक तेरे जैसा भाई मेरे साथ है।"

"वह तो मैं हमेशा हूँ।" इतना कहकर करण ने खड़े होकर विराट को गले लगा लिया, "फिर भी विराट, मुझे लगता है कि हमें उस लड़की के बारे में पता करना..."

करण अपनी बात पूरी कर ही रहा था कि तभी वहाँ पर "विराट... विराट।" चिल्लाते हुए नित्या आ गयी।

"तुम यहाँ पर हो और मैं तुम्हें हर जगह ढूँढ़ रही हूँ। तुमने कहा था कि मैं दस मिनट में आ जाऊँगा, आधे घंटे से गायब थे तुम।" नित्या ने विराट पर चिल्लाते हुए कहा।

"सॉरी मैम... वह करण सर ने रोक लिया था।" विराट ने बहाना बनाते हुए कहा।

"क्यों करण, तुमने रोका था विराट को?"

"हाँ मैम, मैंने रोका था। वह मैं पूछ रहा था कि यह पहले कहाँ रहता था और कौन से गाँव से है। वह क्या है न, आपने इसे नौकरी पर रखा है तो मैनेजर होने के नाते मुझे इसके बारे में सब पता होना चाहिए। यदि यह गलत इंसान निकला तो?"

"हाँ-हाँ, ठीक है। तहकीकात करना जरूरी है, क्या भरोसा यदि इसने हमारे घर पर चोरी कर ली तो।" नित्या ने कहा।

करण यह बात सुनकर मन-ही-मन हँसने लगा और सोचने लगा 'यह तो वही कहावत हो गयी, 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।'

"तुम जल्दी अपनी जानकारी दो और मेरे केबिन में आओ।" नित्या ने वहाँ से जाते हुए कहा।

"जी मैम।" विराट ने कहा।

नित्या वहाँ से चली गयी।

नित्या के जाते ही विराट ने करण से कहा, "शुक्रिया भाई, बचाने के लिए।"

"यह शुक्रिया बचाकर रख, अभी तो बस यह शुरूआत है। तू अब-बस देखता जा, ये मोहब्बत तुझसे क्या-क्या करवाती है, मालिक से नौकर तो बन ही गया है... आगे पता नहीं क्या-क्या होगा।"

* * *

जब विराट, नित्या के साथ रहता था तो उसे वक्त का पता ही नहीं चलता था। नित्या और विराट को साथ रहते हुए एक महीना हो गया था पर विराट को लगता था, बस कल ही की तो बात है, जब वह दोनों मिले थे। उन दोनों की दोस्ती दिन-ब-दिन और गहरी होते जा रही थी और यह दोस्ती धीरे-धीरे प्यार का रूप लेने लग गयी थी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 11 मार्च 2016, रात 10 बजे

नित्या और विराट डाईनिंग टेबल पर बैठ हुए थे, डिनर तैयार था जो डाईनिंग टेबल पर रखा हुआ था।

"ये क्या है?" नित्या ने सब्जी पर की प्लेट हटाते हुए कहा।

"सब्जी।" विराट ने झट से कहा।

"वह तो मुझे भी पता है, पर कौन सी सब्जी है, यह ककड़ी जैसा क्या है?"

"ये ककड़ी जैसा नहीं, इसे कुंदरू कहते हैं।"

"क्या कहा कुंदरू! ये क्या होता है, छी! कैसा दिख रहा है… मुझे नहीं खाना। तुम मेरे लिए कुछ और बना दो।" नित्या ने मुँह बनाते हुए कहा।

"मैम, आप एक बार खाकर तो देखिए। ये बस दिखता ऐसा है, खाने में यह बहुत स्वादिष्ट है।"

विराट के बहुत जोर देने पर नित्या कुंदरू खाने के लिए तैयार हो गयी।

"ठीक है, मैं खाकर देखती हूँ।" नित्या ने रोटी का निवाला तोड़कर खाते हुए कहा।

"वाह! विराट, इसका स्वाद तो बहुत अच्छा है। यह तो मुझे भिण्डी से भी अच्छा लग रहा है।"

"मैंने कहा था न, आपको पसंद आएगा।"

"चलो, ठीक है फिर... आज से तुम कुंदरू!"

"क्या कहा आपने मैम!" विराट ने हैरानी के साथ कहा।

"कुंदरू और क्या... अब से मैं तुम्हें यही बुलाया करूँगी... और तुम भी मुझे ये मैम-वैम मत बोला करो, मुझे अच्छा नहीं लगता है। ऐसा लगता है कि किसी स्त्री को बोल रहे हैं, तुम मुझे बस नित्या बोला करो।"

"पर आप मेरी मालकिन है, मैं कैसे आपको आपके नाम से बुला सकता हूँ?"

"हाँ, मुझे पता है मैं तुम्हारी मालकिन हूँ पर इसमें तुम्हारी तो कोई गलती नहीं है न, यदि तुम गरीब हो तो।"

नित्या की यह बात सुनकर विराट मन-ही-मन हँसने लगा।

"देखो, मैं कुछ नहीं सुनूँगी। अब से तुम मुझे नित्या ही बुलाओगे, भले ही मैं तुम्हारी मालकिन हूँ पर उससे पहले तुम मेरे बहुत अच्छे दोस्त भी हो।"

“ठीक है, नित्या जी।”

“वैसे तुम्हारे परिवार में कौन-कौन है?”

“मेरा कोई परिवार नहीं है, मैं अकेला हूँ।”

“मेरा भी कोई परिवार नहीं है, मैं भी तुम्हारी तरह अकेली हूँ। मेरा भी इस दुनिया में कोई नहीं है।” नित्या ने छोटा सा मुँह बनाते हुए कहा।

“मैं हूँ ना...” विराट ने धीमी आवाज में कहा पर यह बात नित्या ने सुन ली थी।

“क्या कहा तुमने?”

“मैं हूँ ना... अभी आपने ही कहा था न कि मैं आपका दोस्त हूँ और दोस्त परिवार की तरह ही तो होते हैं।”

“तुम न कुंदरू, बहुत अच्छे हो।”

“मैं अच्छा नहीं हूँ, नित्या जी, जिन नज़रों से मुझे देखा जा रहा है वह नज़रें अच्छी है। जिस मन से मेरे बारे में सोचा जा रहा है, वह मन अच्छा है... तभी मैं आपको अच्छा दिख रहा हूँ।”

“तुम और तुम्हारी बातें... मेरे कभी समझ में नहीं आएंगे कुंदरू। मैं जा रही हूँ सोने, रात बहुत हो चुकी है। गुड नाइट!”

इतना कहकर नित्या अपने कमरे में सोने चली गयी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 17 अप्रैल 2016, शाम 4 बजे

नित्या और विराट, सुकून रेस्टोरेंट में बैठे हुए थे। बीस मिनट, उन दोनों को बस यही सोचने में लग गये कि ऑर्डर क्या करना था। फिर नित्या का फुल्की खाने का मन किया और उसने फुल्की का ऑर्डर दिया।

वेटर एक प्लेट लेकर आया जिसमें पन्द्रह फुल्की रखी हुई थी। फुल्की का पानी एक गिलास में रखा हुआ था, जिसमें से विराट हर बार नित्या के लिए फुल्की में पानी डाल रहा था। बस दो ही फुल्की खाने में दोनों को आधा घंटा लग गया था क्योंकि दोनों खा कम और बातें ज्यादा कर रहे थे।

दोनों बाते ही कर रहे थे तभी उनके सामने एक प्रेमी जोड़ा आकर बैठ गया। देखने से लग रहा था कि उनका कॉलेज वाला प्यार था।

जो लड़का था उसने चमकदार गुलाबी रंग की शर्ट और काले रंग की जिन्स पहनी हुई थी, ऊपर से वह खुद काला था। हाँ, देखने से अमीर घर का लग रहा था। लगता भी कैसे नहीं, हाथ में महँगा मोबाइल और कलाई में रोलेक्स की घड़ी जो थी। उसके बालों के बारे में क्या कहना, ऐसा लग रहा था कि नाई को सिर्फ पाँच रुपए दिए हो और कहा हो ढाई रुपए के बाल राइट साइड से और ढाई रुपए के बाल लैफ्ट साइड से काट देना, बाकी रहने देना। तभी तो सिर्फ उसके बीच के बाल लंबे थे।

जो लड़की उसके साथ थी वह उसके बिल्कुल विपरीत थी। वह उससे कहीं ज्यादा सुंदर थी पर उसने अपनी खूबसूरती को खराब करके रखा था। उसने अपने होंठों पर लाल रंग की कुछ ज्यादा ही लिपस्टिक लगाकर रखी थी। बाल शायद गलती से नीचे साइड से जल गये होंगे इसलिए सुनहरी रंग की उसे हैयर स्टाइल बना ली थी।

वह बार-बार अपने आशिक से कह रही थी, 'जानू, सेल्फि!' वहाँ उन्हें आए हुए अभी सिर्फ दस मिनट ही हुए थे पर उसने अपने जानू को जानू बोल-बोल कर पचास सेल्फी तो खींचकर सोशल मीडिया पर अपलोड कर ही दी थी।

"वो देखो कुंदरू... सेल्फी वाला प्यार! जो सोशल मीडिया से ही शुरू हुआ होगा और सोशल मीडिया पर ही खत्म हो जाएगा।" नित्या ने विराट से कहा।

"नहीं नित्या, ऐसा नहीं है। तुम गलत बोल रही हो, वह उसके साथ सेल्फी अपलोड करके यह दिखाना चाहती है कि वह उसकी जिंदगी का हिस्सा है और साथ-साथ घूमना, साथ में खाना, रोज बाते करना, अपना स्टेट्स उसके लिए रखना, शायद इसे ही तो प्यार कहते हैं न।"

“नहीं कुदंरू, इसे प्यार नहीं कहते हैं।”

“तो फिर किसे कहते हैं प्यार, नित्या?”

विराट का सवाल सुनकर नित्या चुप हो गयी थी।

“जब हमें किसी चीज के बारे में पता नहीं हो तो हमें उसके बारे में अपनी राय नहीं देनी चाहिए।”

इतना कहकर विराट वहाँ से उठकर बिल भरने के लिए जाने लगा।

तभी नित्या ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहने लगी, “प्यार की कोई परिभाषा नहीं होती, कुंदरू। प्यार वह है जहाँ इंसान की कमियाँ जानकर भी उससे प्यार किया जाए... जहाँ इंसान को पाने का जुनून तो हो पर यदि वह न मिले तो उसके बारे में गलत न सोचा जाए… जहाँ आँखों ही आँखों में बातें हो जाए… जहाँ बिना बताए एक दूसरे का दर्द समझा जाए… किसी को बिना छुए जिंदगी भर उसके साथ रहना, इसे भी प्यार कहते हैं... जहाँ जिस्म से नहीं, रूह से प्यार हो... और हमने कहा न कुंदरू, प्यार की कोई परिभाषा नहीं होती।”

“नित्या, शायद मैं गलत था। मुझे माफ कर दो... आजकल की दुनिया में जो चल रहा है, मैं उसे ही प्यार समझ बैठा पर असली प्यार का मतलब तो आज तुमने मुझे बताया है।”

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 14 फरवरी 2017, शाम 6 बजे

विराट और नित्या को साथ रहते-रहते एक साल हो गया था लेकिन आज तक विराट ने नित्या को अपने दिल की बात नहीं बताई थी। अभी तक वह दोनों सिर्फ बेस्टफ्रैण्ड थे।

विराट ने कई बार सोचा कि अपनी मोहब्बत का इज़हार कर दे पर एक डर सताता है न सबको कि वह क्या सोचेगी मेरे बारे में…? यदि उसने मना कर दिया तो...? और यदि दोस्ती भी तोड़ दी तो…? यही डर उसे भी सताये जा रहा था।

जब हर जगह यह नियम लागू होता है कि लेडीस फ़र्स्ट, फिर मोहब्बत में यह नियम लागू क्यों नहीं होता। हर बार लड़कों को ही अपनी मोहब्बत का इज़हार पहले क्यों करना पड़ता है, इसका जवाब शायद भगवान के पास भी नहीं होगा।

विराट ने बहुत इंतजार कर लिया था, अब और इंतजार उससे नहीं हो रहा था। उसने सोच लिया था कि अब वह नित्या से अपने दिल की बात कहकर ही रहेगा, फिर चाहे जवाब कुछ भी हो। यदि नित्या ने हाँ बोल दिया तो उसके साथ शादी कर लेगा और यदि ना बोल दिया तो अपनी सारी जायदाद उसके नाम करके, उसकी जिंदगी से हमेशा के लिए बहुत दूर चला जाएगा।

विराट ने नित्या को मिलने के लिए सुकून रेस्टोरेंट में बुलाया था। विराट ने पूरा रेस्टोरेंट उसके लिए बुक कर लिया था। वह चाहता था, जब वह नित्या से अपने प्यार का इज़हार करे तो वहाँ पर सिर्फ नित्या और वह रहे। वह नित्या में और नित्या उसमें खो जाए।

वहाँ पर काम करने वालों को विराट ने पहले ही सब समझा दिया था कि जैसे ही नित्या गेट से आये, उसके ऊपर फूलो की बरसात होनी चाहिए। जब वह चलते-चलते विराट के पास आये, तब गाना बजना चाहिए। सारी तैयारी हो गयी थी, रेस्टोरेंट को अंदर और बाहर से सफेद और लाल रंग के दिल के आकार के गुब्बारों से सजाया गया था।

विराट ने नीले रंग की शर्ट और काले रंग की पेंट पहन कर रखी थी। विराट ने सोच लिया था, जब नित्या आएगी तो उससे यही कहेगा,

“तुम मुझे अपना पनाहगार बना लो, मुझे भी इश्क का गुनहगार बना लो

ठुकरा चुका है जमाना मुझे कबसे, मुझे अपनी ज़िंदगी का किरदार बना लो”

विराट को अब इंतजार था तो सिर्फ नित्या के आने का। विराट ने नित्या को छ बजे बुलाया था पर सात बज गये थे वह अभी तक नहीं आई थी। सात से आठ, आठ से नौ, नौ से दस, दस से ग्यारह बज गये नित्या का इंतजार करते-करते लेकिन वह नहीं आई।

रेस्टोरेंट बंद करने का समय हो गया पर विराट नहीं चाहता था रेस्टोरेंट बंद हो। यदि नित्या आ गयी और उसे रेस्टोरेंट बंद मिला तो, वह उससे कहेगी, “तुम मेरा थोड़ी देर भी इंतजार नहीं कर पाए।” यही सोचकर विराट ने रात ही रात में वह रेस्टोरेंट खरीद लिया।

एक तरफ विराट का दिमाग कह रहा था कि नित्या नहीं आएगी। अगर उसे आना ही होता तो वह अब तक आ चुकी होती। शायद नित्या को पता है कि उसने नित्या को चौदह फरवरी यानी वेलेंटाइन डे को क्यों बुलाया था। विराट समझ गया था कि नित्या उससे प्यार नहीं करती पर दूसरी तरफ उसका दिल कह रहा था कि वह आएगी।

जब आपका दिमाग और दिल दोनों ही फैसला नहीं कर पाए कि क्या करना चाहिए तो आपको फैसला तकदीर के हाथों सौंप देना चाहिए। विराट ने भी वही किया, वह रात भर नित्या का इंतजार करते रहा।

विराट चाहता था कि नित्या उसे ठुकराने ही आये पर आये जरूर। विराट नित्या को बस आखिरी बार देखना चाहता था।

* * *

"तरस गई आँखें मेरी तेरे दीदार को
कुछ तो रहम कर इस दिल-ए-लाचार को
कितना इंतजार करूँ मैं अब तू ही बता
या तू ही ज़हर दे दे इस इश्क़-ए-गवार को
सारी रुसवाइयाँ सह ली मैंने तेरे लिए
अब तू लाँघकर आ जा इस नफरत-ए-दीवार को
मोहब्बत न सही नफरत ही दे दे
कुछ तो सजा दे इस मोहब्बत-ए-गुनहगार को"

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 15 फरवरी 2017, सुबह 8 बजे

रातभर नित्या की याद में अश्क बहाते-बहाते विराट की कब आँख लग गयी, उसे पता ही नहीं चला। जब सुबह हुई तो उसने देखा रेस्टोरेंट के नौकर वहाँ पर सफाई कर रहे थे। विराट को लगा, अब नित्या को फोन करके आखिरी बार अलविदा कह देना चाहिए।

विराट ने नित्या को फोन किया पर उसका फोन नहीं लग रहा था। विराट को नित्या की फिक्र सताने लगी। विराट उसी वक्त अपने घर चला गया पर जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा घर का दरवाज़ा पहले से खुला हुआ था। विराट ने नित्या को आवाज दी पर कोई जवाब नहीं आया। विराट ने उसे पूरे घर में ढूँढ़ा पर वह उसे कहीं नहीं मिली।

विराट ने करण को फोन करके बुलाया और उसे सारी बात बताई। करण ने भी नित्या को ढूँढ़ना शुरु कर दिया पर उसे भी कुछ पता नहीं चला।

* * *

नित्या को गायब हुए एक हफ्ता हो गया था और विराट को नित्या के बारे में कुछ पता नहीं चला था कि वह कहाँ पर है? कैसी है? वह ठीक भी है या नहीं?

विराट को तो नित्या का असली नाम तक नहीं पता था। अगर वह पुलिस वालो के पास भी जाता तो क्या कहता, "मेरी जान गायब हो गयी है, जिसका मुझे नाम तक नहीं पता।"

विराट को नित्या के बारे में एक भी ऐसी चीज नहीं मालूम थी जिससे वह उसका पता लगा पाता। नित्या का तो विराट और करण के अलावा पूरे शहर में कोई दोस्त भी नहीं था। ऐसे में वह कहाँ जा सकती थी?

नित्या ऐसे गायब हो गयी थी कि जैसे पहले उसका कोई वजूद ही नहीं था। विराट को तो लग रहा था कि पिछले एक साल से वह एक ख़्वाब देख रहा था, जो अब टूट चुका था।

तारीख 28 मई 2017, सुबह 5 बजे

नित्या को उसका अतीत बताते-बताते विराट वापस से वर्तमान में आ गया।

नित्या की आँखें अश्कों से भरी हुई थी, “मेरे चले जाने के बाद क्या हुआ था विराट?” नित्या ने विराट से पूछा।

“आपके चले जाने के बाद, मेरी ज़िंदगी फिर से अंधेरे में डूब गयी। बहुत कोशिश की भूला दूँ आपको पर नहीं भुला पाया। भला कोई अपनी ज़िंदगी के हिस्से को भी भुला पाता है क्या? आपके चले जाने के बाद मेरे दिन और रात दोनों मयखाना में बीतने लगे। आपसे मिलने से पहले मैं दिन में एक पैकेट सिगरेट पीता था पर आपके जाने के बाद मैं हर घण्टे में एक पैकेट खत्म करने लगा। आपको भुलाने के लिए मैंने नशे का सहारा लिया। सारे नशे करके देख लिए थे पर आपकी मोहब्बत के नशे के सामने सारे नशे फीके पड़ने लगे थे। करण ने मुझे बहुत समझाया कि भूल जाऊँ आपको और ये नशे की लत छोड़ दूँ, वरना बर्बाद कर देगी यह लत मुझे। डॉक्टर रुपम पराते ने तो चेतावनी थी दे दी थी कि अब अगर एक बूँद भी शराब की शरीर के अंदर गयी तो मौत निश्चित है, फिर तुम्हें भगवान भी नहीं बचा पाएंगे। मगर मैं कहाँ मानने वाला था, मैं तो उसी वक्त मर गया था जब आप मुझे छोड़कर गयी थी। दो महीने बीत गये थे आपको गये हुए। मुझे इस बात की नाराज़गी नहीं थी कि आप मुझे छोड़कर चली गयी, नाराज़गी तो इस बात की थी कि आप आखिरी बार मुझसे मिलकर जाती, मेरे सामने मुझे ठुकरा कर जाती। आपसे मिलकर जो जीने की उम्मीद मुझे मिली थी, वह आपके जाने के बाद फिर से मर गयी थी। लगने लगा था सारी जिंदगी अब शराब पीकर ही गुजरेगी पर शायद किस्मत को कुछ और ही मंजूर था...” विराट बोलते-बोलते रुक गया।

“किस्मत को क्या मंजूर था, बताइए विराट?” नित्या ने विराट पर दबाव बनाते हुए पूछा।

विराट ने लम्बी आहें भरते हुए कहा, “दो महीने बाद आप मुझे फिर मिली और एक और बार मेरी कार से आपका एक्सीडेंट हो गया। इस बार मेरी कार से टकराने के कारण आपकी सिर्फ याददाश्त नहीं गयी बल्कि आपके पैर भी पैरेलाईज हो गये।”

“क्या!” नित्या ने हैरानी के साथ कहा।

“हाँ नित्या जी, फिर आगे क्या हुआ आप सब जानती है।”

“विराट, सच तो यह है कि मुझे अभी भी कुछ याद नहीं आ रहा। मुझे नहीं पता कि इससे पहले भी मैं आपसे मिली थी या नहीं, पर इतना पता है यदि आप नहीं होते तो

शायद आज मैं जिन्दा नहीं होती। शुक्रिया आपका, मेरी जान बचाने के लिए।" नित्या ने रोते हुए कहा।

विराट ने नित्या की बात का कुछ जवाब नहीं दिया। उसके कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या बोले। कमरे के अंदर खामोशी छा गयी थी।

नित्या ने विराट की आँखों में देखते हुए पूछा, "मैं एक बात जानना चाहती हूँ आपसे?"

"कौनसी बात नित्या?"

"आप मेरे लिए इतना सब कुछ क्यों कर रहे हैं?"

"मुझे नहीं पता...।" विराट ने धीरे से जवाब दिया।

"नहीं, आपको पता है, बस आप बता नहीं रहे। बताइए न, विराट।"

"मैंने कहा न... मुझे नहीं पता।" विराट ने गुस्से से कहा।

विराट का गुस्सा देखकर नित्या चुप हो गयी। नित्या पर गुस्सा करने के कारण विराट को अपनी बात अफसोस होने लग गया।

कुछ देर चुप रहने के बाद विराट ने नित्या से कहा, "मुझे नहीं पता… मैं यह सब आपके लिए क्यों कर रहा हूँ। मुझे बस इतना पता है कि अब आप ही मेरी दुनिया हो।"

"कहीं प्यार तो नहीं करने लगे हो आप मुझसे?" नित्या ने विराट की आँखों में देखते हुए पूछा।

"पता नहीं... शायद हाँ... क्या आप करती है?"

"पता नहीं... शायद... हाँ!"

उस दिन, दोनों की हाँ भी थी और ना भी, शायद इसी को प्यार कहते हैं।

और वैसे भी, जहाँ प्यार होता है न, वहाँ आपको जताने की जरूरत नहीं होती, उसे बस महसूस किया जाना चाहिए।

* * *

नित्या और मैं एक अलग ही दुनिया में खो गये थे। वह हमारी दुनिया थी, हमारे प्यार की दुनिया, जहाँ पर सिर्फ हम दोनों थे। हम दोनों हमारी दुनिया में बहुत खुश थे और हम दोनों से भी ज्यादा खुश था मेरा दोस्त, मेरा भाई करण। वह खुश था हमें साथ देखकर। जिस प्यार की जरूरत मुझे थी, वह प्यार मुझे मिल गया था।

नित्या अब कभी महसूस नहीं करती थी कि वह चल नहीं सकती। नित्या, अब खुद ही अपने सारे काम कर लिया करती थी, इस वजह से अब नर्स भी नहीं आती थी। भले ही अभी हमारी शादी नहीं हुई हो, पर वह मेरा पत्नी की तरह ख्याल रखती थी।

एक महीने बाद, हम दोनों शादी के बंधन में बंधने वाले थे।

👻 👻 👻 👻 👻

भाग ०३
बेगानी मौतें

तारीख 7 अगस्त 2017, रात 01:00 बजे

"विराट, यहाँ आस-पास कुछ है क्या?" सौम्या ने पूछा।

"हाँ, सामने मेरी कार है जो खराब हो गयी थी।" विराट ने कहा।

चारों तरफ अंधेरा छाया हुआ था। झींगुरों के चीं-चीं करने की आवाज सुनाई दे रही थी। विराट और सौम्या काँची जंगल के रास्ते में थे। विराट ने अपने मोबाइल का टॉर्च ऑन कर लिया, जिसकी रोशनी के सहारे वह आगे बढ़े जा रहे थे। दूर-दूर तक सिर्फ अंधेरा ही नज़र आ रहा था। वहीं पर विराट की खराब पड़ी कार खड़ी हुई थी। कुछ देर चलने के बाद सौम्या और विराट कार के पास पहुँच गये।

"तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हारी कार खराब हुई थी... नहीं विराट, तुम्हारी कार के ऊपर किसी ने काला जादू किया था।" सौम्या ने कहा।

"क्या कहा? काला जादू!" विराट ने हैरानी के साथ कहा।

सौम्या अपने कंधे पर टंगे भगवा रंग की पोटली में से चाँदी का एक गोल कड़ा निकालना। उस कड़े पर अलग-अलग प्रकार के ॐ (ओम) के दैवीय चिन्ह बने हुए थे। सौम्या ने उस कड़े को कार के ऊपर रख दिया और मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया,

"अज्जनागर्भ सम्भूत कपीन्द्र सचिवोत्तम।

रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन रक्ष सर्वदा॥"

कुछ देर के लिए तो वह कड़ा स्थिर ही रहा, फिर थोड़ी ही देर बाद वह कड़ा अपने आप हिलने लगा। कड़ा पहले धीरे-धीरे, फिर तेजी के साथ घुमने लगा। कार के अंदर पहले से चाबी लगी हुई थी जिसे विराट ने वहीं पर छोड़ दिया था। अचानक से कार के अंदर से एक काला साया निकला और काले आसमान में गायब हो गया। वह साया किसी आदमी के चेहरे की तरह लग रहा था। विराट यह सब देखकर हैरान हो गया था।

विराट और सौम्या वापस बंगले की तरफ बढ़ने लगे।

"विराट, उस बंगले में अभी कौन-कौन है?" सौम्या ने पूछा।

"वहाँ पर करण, नित्या और पण्डित वेदव्यास जी होंगे।"

"क्या तुम्हें पता है नित्या के अंदर किसकी रूह है?"

"मुझे यह तो नहीं पता कि नित्या के अंदर किसकी रूह है पर इतना जरूर पता है कि उसके अंदर किसी आदमी की रूह है।"

"क्या कहा? आदमी!" सौम्या ने हैरान होते हुए कहा।

"आप इतना हैरान क्यों हो गयी?"

"वह इसलिए विराट क्योंकि औरतों की रूहों को काबू करना आसान होता है पर आदमियों की नहीं। आदमियों की रूहें जिसके शरीर में प्रवेश करती है, उसे अपनी दुनिया में ले जाकर ही मानती है। मरने के बाद उनकी रूहों में न जज़्बात जिंदा रहते हैं न एहसास।"

"क्या कोई तरीका नहीं है जिससे हम उस रूह को रोक सके?"

"अभी मैं कुछ नहीं कह सकती। जब तक हमें यह पता न चल जाए कि वह आत्मा किसकी है और वह नित्या से क्या चाहती है? तुम्हें किसी पर शक है, कौन कर सकता है यह सब या फिर वह रूह किसकी हो सकती है?"

"मुझे तो लगता है कि उसके अंदर उसके पिता या डॉक्टर साहब की रूह है।"

"डॉक्टर साहब की?"

"हाँ, डॉक्टर साहब की!"

इतना कहकर विराट ने वापस से सौम्या को अपनी बेगानी प्रेम कहानी बताना शुरू कर दिया।

तारीख 02 जून 2017, रात 02:00 बजे

नित्या और विराट गहरी नींद में सो रहे थे। तभी किसी की जोर-जोर से दरवाज़ा खटखटाने की आवाज सुनाई देने लगी।

खट-खट... खट-खट... खट-खट...

कोई इतनी जोर से दरवाज़ा खटखटा रहा था कि नित्या की नींद खुल गयी। विराट अभी भी सो रहा था।

"विराट... विराट, उठो विराट!" नित्या ने विराट को उठाते हुए कहा।

"क्या है नित्या, सोने दो मुझे। ये आधी रात में क्यों परेशान कर रही हो?" विराट ने नींद में बड़बड़ाते हुए कहा।

"विराट, उठो! देखो, कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है?"

जब विराट ने यह बात सुनी कि कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है तो वह झट से उठ गया, "इतनी रात में कौन होगा?"

"पता नहीं, विराट। कौन होगा… मुझे तो बहुत डर लग रहा है।"

"डरो मत, मैं देखकर आता हूँ।"

"मैं भी तुम्हारे साथ नीचे चलूँगी।" नित्या ने विराट का हाथ पकड़ते हुए कहा।

"हाँ बाबा, तुम भी चलो, ठीक है।"

विराट ने नित्या को व्हीलचैयर पर बैठा दिया और नीचे ले जाने लगा।

जब विराट ने दरवाज़ा खोला तो देखा दरवाज़े पर करण खड़ा हुआ था। करण बहुत घबराया हुआ लग रहा था। वह पसीने से लथपथ था।

"क्या हुआ करण, तू इतना घबराया हुआ क्यों है?" विराट ने बौखलाहट के साथ पूछा।

करण इतना घबरा गया था कि कुछ नहीं बोल पा रहा था।

"पहले तू अंदर आ फिर शांति से बता क्या हुआ... और घबरा मत, समझा।" विराट ने करण को अंदर बुलाते हुए कहा।

करण जैसे ही घर के अंदर आया, विराट ने झट से दरवाज़ा लगा दिया। विराट ने करण को पानी पीने को दिया।

“अब बता, क्या हुआ? तू इतना घबरा क्यों रहा है?” विराट ने करण के कंधों पर हाथ रखते हुए कहा।

“व... वह... डॉक्टर साहब है ना...” करण ने घबराते हुए कहा।

“हाँ, तो क्या? आगे बताएगा।”

“यार, वे तीन दिन से लापता है।”

“तो तू क्यों घबरा रहा है अगर डॉक्टर साहब लापता है तो?” विराट ने हैरानी के साथ कहा।

“यार, बात यह है कि... डॉक्टर साहब लापता होने से पहले आखिरी बार मुझसे मिले थे और जब उन्होंने मुझे बताया कि उनका तेरे साथ झगड़ा हो गया तो मेरी भी उनसे दो-तीन बातें हो गयी और बातों ही बातों में झगड़ा इतना बढ़ गया कि मैंने उन्हें जान से मारने की धमकी दे दी। यह धमकी मैंने उन्हें सब लोगों के सामने सुकून रेस्टोरेंट में दी थी। जब पुलिस वालों को इस बात का पता चला तो लोग मुझ पर शक करने लगे। मैं बहुत डर गया था इसलिए यहाँ आ गया।”

“करण, तू डर मत... तुझे कुछ नहीं होगा। तुने कुछ नहीं किया है, मैं हूँ न।” विराट ने करण को समझाते हुए कहा।

“यह आपने अच्छा किया जो आप यहाँ आ गये।” नित्या ने कहा।

“जब तक डॉक्टर साहब मिल नहीं जाते, बेहतर यही होगा कि तू हमारे साथ यहीं रह। रात बहुत हो चुकी है नित्या, तुमको सो जाना चाहिए। चलो, मैं तुम्हें ऊपर वाले कमरे में छोड़कर आ जाता हूँ। मैं आज यहीं नीचे वाले कमरे में करण के साथ सोऊँगा।” विराट ने करण और नित्या से कहा।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 02 जून 2017, सुबह 04:00 बजे

नित्या सो चुकी थी और विराट भी बहुत देर से सोने की कोशिश कर रहा था पर सो नहीं पा रहा था क्योंकि करण बार-बार करवटें बदल रहा था। वह कभी दायीं तरफ मुड़ता तो कभी बायीं तरफ जिस कारण विराट की नींद नहीं लग पा रही थी।

विराट, करण से परेशान हो गया था। वह उठा और करण पर चिढ़ते हुए कहने लगा, "क्या हुआ करण, तू मुझे सोने देगा या नहीं?"

"यार, मुझे नींद नहीं आ रही है, बहुत घबराहट हो रही है।" करण ने उठकर बैठते हुए कहा।

"शायद तुझे ऐसा इसलिए लग रहा है क्योंकि हवा नहीं चल रही हैं। चल, थोड़ी बाहर की हवा खाकर आते हैं... तुझे अच्छा लगेगा।"

"इतनी रात को! विराट, सुबह के चार बज रहे होंगे और बाहर जंगल है, अंधेरा भी बहुत होगा!" करण ने डरते हुए कहा।

"डरपोक कहीं के, हमारे पास मोबाइल है न और उसमें टॉर्च भी है, फिर अंधेरा कैसा?"

"नहीं विराट, मैं नहीं आ रहा।"

"देख, ज्यादा नाटक मत कर, वरना वापस भेज दूँगा। फिर तू जानना और पुलिस वाले जाने।" विराट ने करण का मज़ाक उड़ाते हुए कहा।

"नहीं भाई, रहने दे... चलता हूँ तेरे साथ।" करण ने कहा।

* * *

विराट और करण, दोनों जंगल में घूम रहे थे।

आस-पास पेड़-पौधे होने के कारण हवाएँ बहुत तेज चल रही थी, अगर एक पत्ता भी हिलता तो ऐसा लगता था, जैसे कोई पास से निकला हो जिसके कारण करण बहुत डर रहा था।

जब विराट को पता चला कि करण को डर लग रहा है तो वह उसे और डराने लग गया। विराट अपने मुँह से जंगली भेड़ियों की आवाजें निकालने लगा।

करण बार-बार कह रहा था, "प्लीज भाई, मत डरा। मुझे बहुत डर लग रहा है।"

लेकिन विराट नहीं मान रहा था, उसे करण को सताने में बहुत मजा आ रहा था।

“मैंने कहा था न कि मजाक मत कर, हो गयी न परेशानी।” करण ने कहा।

“क्या हुआ?” विराट ने हैरानी के साथ पूछा।

“यार, मुझे नेचरस् कॉल आ रहा है।”

“तो जाकर रिसीव करना।”

“कहाँ करूँ?”

“नेचर कॉल है तो नेचर में ही करेगा न।”

“मतलब मैं समझा नहीं।”

“नादान, इतनी सारी जगह है, पूरा सूखा पड़ा है। जा कहीं भी जाकर गीला कर ले और अपना बोझ हल्का कर ले।”

करण, विराट से कुछ कदम आगे चला गया और टॉयलेट करने लगा। विराट उससे कुछ चार-पांच कदम दूर ही खड़ा हो गया था।

“यार, तेरे कारण न मुझे भी नेचर कॉल आ गया।” विराट ने चिल्लाते हुए कहा।

“क्या कहा? मेरी वजह से!” करण ने टॉयलेट करते हुए हैरानी के साथ कहा।

“हाँ, तेरी वजह से। ये बीमारी ही ऐसी है, एक को आती है तो दूसरे को अपने आप आ जाती है।”

“तो रिसीव कर ले न तू, अब मुझे क्यों ताने दे रहा है।”

“हाँ, करता हूँ।”

* * * * *

विराट आस-पास ही टहल रहा था, तभी उसे करण के बहुत तेज चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। “अअअअअअअअअ...”

विराट भागते हुए करण के पास गया और बौखलाहट के साथ पूछने लगा, “क्या हुआ करण? तू इतनी तेज क्यों चिल्लाया? सब ठीक तो है ना?”

करण, विराट की बात का कुछ जवाब नहीं दे रहा था। वह मूर्ति बनकर खड़ा हुआ था जैसे उसने कोई भूत देख लिया था।

“बोल करण, क्या हुआ?” विराट ने करण को हिलाते हुए पूछा।

“विराट, नीचे देख!” करण ने मूर्ति बने हुए कहा।

जब विराट ने नीचे देखा है तो उसे कुछ दिखाई नहीं दिया।

“क्या है नीचे, नीचे तो सब जगह सूखा है। बस यह थोड़ी सी जगह है जहाँ पर तूने गीला किया है। क्या यही देखने तूने मुझे बुलाया है। माना मैं तुझे जंगली जानवरों की आवाजें निकालकर डरा रहा था पर इसका मतलब यह तो नहीं न कि तू मुझे ऐसे डराएगा।” विराट ने करण पर चिढ़ते हुए कहा।

“विराट, मैं तुझे डरा नहीं रहा हूँ, जरा नीचे अच्छे से देख।” करण ने विराट पर दबाव बनाते हुए कहा।

जब विराट ने दोबारा नीचे देखा तो उसका मुँह खुला का खुला रह गया, वह भी करण की तरह मूर्ति बनकर खड़े रह गया। ऐसा लग रहा था जैसे उसे भी कोई साँप सूँघ गया था। नीचे जमीन पर किसी का खून पड़ा हुआ था।

“यार, यह तो किसी का खून है!” विराट ने हैरानी के साथ कहा।

“हाँ विराट, यही तो मैं तुझे तब से दिखाने की कोशिश कर रहा हूँ पर तू समझ ही नहीं रहा है।”

जहाँ पर विराट और करण खड़े हुए थे, वहाँ पर किसी का खून जमा हुआ था। वह खून कहीं से बहकर आ रहा था। विराट और करण उस खून की धार का पीछा करने लगे। जब विराट और करण वहाँ पर पहुँचे, जहाँ से वह खून बहकर आ रहा था तो वह दोनों वहाँ के हालात देखकर हक्के-बक्के रह गये।

उन दोनों के शरीर के रोंगटे खड़े हो गये थे क्योंकि वह खून पीपल के पेड़ से बह रहा था और उस पेड़ के ऊपर डॉक्टर साहब की लाश उल्टी लटक रही थी। किसी ने डॉक्टर साहब का खून कर दिया था। डॉक्टर साहब का शरीर उल्टा टंगा हुआ था। उनके सिर से टप-टप-टप खून टपक रहा था जो कि जमीन पर गिर रहा था। पीपल का पेड़ डॉक्टर साहब के खून से तर हो था।

“विराट, हमें पुलिस को इस बारे में खबर कर देनी चाहिए।” करण ने विराट की ओर देखते हुए कहा।

“नहीं करण, यदि हमने पुलिस को खबर की तो उन्हें नित्या के बारे में भी पता चल जाएगा। वे नित्या को भी अपनी हिरासत में ले लेंगे और नित्या को अपने अतीत के बारे में कुछ याद नहीं है। मैं नित्या को खोना नहीं चाहता। हम दोनों हमारी दुनिया में बहुत खुश है। प्लीज करण, समझने की कोशिश कर।”

“हाँ विराट, मैं समझ रहा हूँ तेरी परेशानी पर तू समझने की कोशिश कर, पुलिस को बताना बहुत जरूरी है।”

“तू नहीं समझ रहा है करण, यदि पुलिस आई तो उनका पहला शक हम दोनों पर ही जाएगा, क्योंकि डॉक्टर साहब का हम दोनों से ही झगड़ा हुआ था और उनकी लाश भी हमें ही मिली है।”

“तो फिर क्या करें हम?”

“अब बस एक रास्ता है, हमें डॉक्टर साहब की लाश को ठिकाने लगाना होगा।”

“ये क्या कह रहा है विराट! ऐसे से तो हम खुद अपराधी बन जाएंगे।”

“बन जाए तो बनने दे अपराधी, करण। यदि नित्या के लिए मुझे अपराधी भी बनना पड़े तो मैं वह भी बनने के लिए तैयार हूँ।”

“विराट, तू समझ नहीं रहा है... ऐसे में डॉक्टर साहब के हत्यारे को कभी भी सजा नहीं मिल पाएगी और उनकी आत्मा भटकती रहेगी।”

“यह तू क्या बोल रहा है, करण? कौन सी दुनिया में जी रहा है तू? ये आत्माएं-वात्माएं कुछ नहीं होती। वैसे भी, हमें क्या करना है यह जानकर कि डॉक्टर साहब को किसने मारा है? मार दिया होगा किसी ने...! वैसे भी जिस आदमी की नज़रों में महिलाओं की इज़्जत नहीं होती है, उसे इस दुनिया में जीने का कोई हक नहीं है।”

करण सिर्फ विराट का दोस्त नहीं था बल्कि भाई था। विराट को पता था करण उसे कभी किसी बात के लिए मना नहीं करेगा और उसकी खुशी के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाएगा। करण, डॉक्टर साहब की लाश को ठिकाने लगाने के लिए राज़ी हो गया।

करण और विराट ने गड्ढ़ा खोदकर डॉक्टर साहब की लाश को पीपल के पेड़ के पास दफना दिया था।

“याद रहे! नित्या को इस बारे में कुछ पता नहीं चलना चाहिए। हमें ऐसे व्यवहार करना है जैसे कुछ हुआ ही नहीं है।” विराट ने करण को समझाते हुए कहा।

“हाँ, मैं ध्यान रखूँगा... तू फिक्र मत कर।”

* * *

अगले ही दिन से विराट और करण, नित्या के साथ ऐसे पेश आए जैसे कुछ हुआ ही न हो। नित्या को भी कुछ पता नहीं चला था। एक हफ्ता बीत गया था और पुलिस को भी कुछ खबर नहीं हुई थी। विराट और करण को लगा सब ठीक हो गया।

कहते हैं न, आपके पापों की सजा आपके अपनों को मिलती है, और उनके पापों की सजा नित्या को मिली।

नित्या अभी-अभी नहाकर आई थी, उसके बाल अभी भी गीले थे। हर दिन की तरह आज भी नित्या अपनी व्हीलचेयर पर बैठकर आँगन में लगे तुलसी के पौधे को पानी दे रही थी। नित्या ने तुलसी के पौधे में पानी डाला ही था तभी अचानक से वह तुलसी का पौधा अपने आप सूख गया। नित्या यह देखकर अचंभित हो गयी। जो पौधा थोड़ी देर पहले हरा भरा था, उसके एकदम से सूख जाने के कारण नित्या बहुत डर गयी और रोने लगी।

नित्या की रोने की आवाज सुनकर विराट और करण भी बंगले से बाहर आ गये।

"क्या हुआ नित्या, आप रो क्यों रही हो?" नित्या को रोता देख विराट ने बौखलाहट के साथ पूछा।

नित्या ने रोते हुए विराट और करण को सारी बात दी। नित्या की बात सुनकर विराट और करण, दोनों हैरान हो गये थे। फिर जब विराट की नज़रें आसमान की तरफ गयी तो उसे सारा माजरा समझ में आ गया।

"नित्या, आप आसमान में देखिए, कितनी धूप निकली है। हो सकता है, धूप से सूख गया होगा।" विराट ने आसमान की तरफ देखते हुए कहा।

"मुझे पता है, विराट, बहुत धूप निकली है पर यह पौधा मेरे पानी डालते ही कैसे सुख गया? थोड़ी देर पहले तो हरा भरा था?" नित्या ने कहा।

"नित्या, हो सकता है, आपसे देखने में गलती हो गयी हो।"

"नहीं विराट, मैं सच कह रही हूँ, यह पौधा कुछ देर पहले हरा भरा था।"

"हाँ नित्या, मैं आपकी बात मानता हूँ पर हम क्या कर सकते हैं? यह सब तो प्रकृति का खेल है न और प्रकृति पर किसका बस चला है।"

विराट ने नित्या को समझा-बुझाकर बंगले में भेज दिया पर करण अभी भी तुलसी के पौधे को देखे जा रहा था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हो गयी थी, उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी सोच में खो गया हो।

"अब तू क्या सोच रहा है?" विराट ने करण को हिलाते हुए कहा।

"विराट, तुझे पता है यह तुलसी का पौधा कैसे सूख गया?"

"नहीं यार।"

"मैंने सुना है, यदि आपके घर में लगा तुलसी का पौधा अचानक सुख जाता है तो इसका मतलब यह होता है कि आपके घर में किसी सदस्य के ऊपर बुरी आत्मा का साया है।"

“यार करण, तू ये पागलों जैसी बातें करना कब छोड़ेगा?”

“मैं पागलों की तरह बातें नहीं कर रहा, सच बोल रहा हूँ। शायद तुझे पता नहीं है पर तुलसी का पौधा सूखना बहुत अशुभ माना जाता है, ये संकेत होता है कि आपके घर में कुछ अशुभ होने वाला है।”

“करण, अगर कुछ अशुभ होने वाला है तो होने दे, ठीक है। मैं सम्भाल लूँगा पर प्लीज अभी मेरा दिमाग मत खा। एक तो वैसे ही अभी डॉक्टर साहब की परेशानी है और अब ऊपर से तू मेरा दिमाग खा रहा है।” विराट ने करण की बात पर ध्यान नहीं दिया और सीधे बंगले के अंदर चला गया।

👻👻👻👻👻

तारीख 08 जून 2017, रात 11 बजे

सभी लोग सो रह थे। हमेशा की तरह विराट और करण एक कमरे में और नित्या ऊपर वाले कमरे में सो रही थी।

तभी नित्या के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी, "आअअअअअ... बचाओ!"

नित्या के चीखने की आवाज सुनकर विराट और करण, दोनों की नींद खुल गयी।

"क्या करण तुने भी वही आवाज सुनी जो मैंने सुनी?" विराट ने करण से बौखलाहट के साथ पूछा।

"हाँ विराट, मैंने भी वह आवाज सुनी... नित्या की चीखने की आवाज थी।" करण ने डरते हुए कहा।

विराट और करण भागते हुए नित्या के कमरे की ओर जाने लगे।

जब वह दोनों वहाँ पर पहुँचे तो उन्होंने देखा, नित्या अपने बेड पर बैठकर रो रही थी। नित्या पसीने से लथपथ थी और बहुत डरी हुई लग रही थी। उसके हाथ-पैर कांप रहे थे। बाल चेहरे के सामने बिखरे हुए थे।

"वह मुझे मार डालेगा... वह मुझे मार डालेगा...!" नित्या ने रोते हुए और डरते हुए कहा।

"कौन मार देगा नित्या आपको और आप इतना डर क्यों रही हो?" विराट ने नित्या से पूछा।

"वह मार देगा, विराट...! मुझे मार देगा!"

"कौन नित्या?"

"वही विराट... वह... मुझे बचाओ विराट, मुझे बहुत डर लग रहा है।"

"आप डरिये नहीं, नित्या... मैं हूँ ना।" विराट ने नित्या के करीब जाकर उसे अपनी बाँहों में भरते हुए कहा।

विराट इशारों में करण से पानी माँगने लगा। कुछ ही देर में करण ने उसे पानी लाकर दे दिया। विराट अपने हाथों से नित्या को पानी पिलाने लगा। नित्या ने सिसकियाँ लेते हुए पानी पी लिया।

नित्या के पानी पीने के बाद विराट ने उससे पूछा, "अब आप आराम से बताइए नित्या, क्या हुआ...? कौन मार देगा आपको और आप इतना डर क्यों रही हो?"

नित्या ने विराट के सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया, वह बहुत डरी और घबराई हुई थी। विराट बार-बार नित्या से यही सवाल पूछ रहा था पर नित्या कुछ जवाब नहीं दे रही थी।

नित्या के दिल में ख़ौफ़ बस चुका था। नित्या इतना डर गयी थी कि वह कुछ नहीं बोल पा रही थी।

“नित्या, आप सो जाइए। आपने बस एक बुरा सपना देखा है, और कुछ नहीं।” विराट ने नित्या की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा।

एक बुरा सपना कहकर विराट ने नित्या को सोने के लिए बोल दिया पर नित्या इतना डर गयी थी कि सोने के लिए तैयार ही नहीं थी। विराट ने नित्या का सिर अपनी गोद में रख दिया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे सुलाने लगा।

नित्या सो चुकी थी पर नित्या की बाते सुनकर करण सदमे में था, “कहीं डॉक्टर साहब की आत्मा की बात तो नहीं कर रही थी नित्या?” करण ने डरते हुए कहा।

“ये क्या बातें कर रहा है करण तू! मैं पहले ही तुझसे कह चुका हूँ, यह आत्मा-वात्मा कुछ नहीं होती।”

“नहीं विराट, आत्माएँ होती है! डॉक्टर साहब की आत्मा भटक रही है इस बंगले में। वह हमसे बदला लेना चाहती है... अपनी मौत का बदला।”

“क्या बोल रहा है तू! हम ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी में जी रहे हैं और पता नहीं तू अभी तक कौन से जमाने में जी रहा है?”

“विराट, तू बात को समझ। तुने नोटिस नहीं किया, जब से डॉक्टर साहब का खून हुआ है, तब से नित्या की कितनी तबीयत खराब हो रही है। बंगले में रोज कोई न कोई नई घटना होती रहती है और आज यह… तू ही बता, आखिर नित्या को कौन मारना चाहेगा, वह डॉक्टर साहब की आत्मा ही है विराट।” करण ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

“नित्या ने बस एक बुरा सपना देखा है, और कुछ नहीं। तू बेकार में कहीं की बात को कहीं और जोड़ रहा है।”

“नहीं विराट, मेरी बात समझ, डॉक्टर साहब की आत्मा सही में भटक रही है इस बंगले में।”

“बस, करण! अब मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। वैसे भी मैंने पहले ही कह दिया था, डॉक्टर साहब का कोई जिक्र तक नहीं करेगा बंगले में।”

अगर उस दिन विराट ने करण की बात मान ली होती तो शायद आज नित्या ठीक होती, पर कहते हैं न, जब आपका काल चल रहा हो तो भगवान भी आपको नहीं बचा सकते।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 10 जून 2017, शाम 06:30 बजे

विराट कुछ काम से ऑफिस गया हुआ था। जब वह वापस आया तो उसने देखा बंगले में न ही करण था न ही नित्या। उसे लगा करण, नित्या को बाहर घुमाने ले गया होगा। हर रोज तो वह ही ले जाता था, पर उस दिन उसे देर हो जाने के कारण करण ले गया था।

विराट सोफे पर बैठकर सेब खा रहा था तभी करण भागते-भागते घर के अंदर आया। करण बहुत घबराया हुआ लग रहा था।

“क्या हुआ करण, तू इतना घबराया हुआ क्यों है?” करण को हाँफते हुए देखकर विराट ने हैरानी के साथ पूछा।

करण ने विराट के सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया, वह लम्बी-लम्बी साँसे ले रहा था।

“नित्या कहाँ है, करण? तू अपने साथ नित्या को भी ले गया था न?” विराट ने करण के आस-पास देखते हुए पूछा।

करण ने फिर विराट के सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया।

“बता करण… नित्या कहाँ पर है? मैं कुछ पूछ रहा हूँ तुझसे?” विराट ने करण पर दबाव बनाते हुए उससे पूछा।

“व... वह... अपनी नित्या नहीं है, उसके अंदर डॉक्टर साहब की... आत्मा है।” करण ने डरते हुए कहा।

“ये कैसी बातें कर रहा है करण तू!” विराट ने भिन्नाते हुए कहा।

“हाँ विराट, मैं सच बोल रहा हूँ... वह हमारी नित्या नहीं है।”

“तू ये बकवास करना बंद करेगा और बताएगा कि हुआ क्या है और नित्या कहाँ है?”

“जब तू घर पर नहीं था तो नित्या के घूमने का वक्त हो गया था, और तुझे तो पता ही है, नित्या आजकल कितनी उदास रहती है, न ही किसी से ज्यादा बात करती है न ही हँसती है। मैंने सोचा, शायद यह सब मेरे कारण हो रहा है... मैं ही उस पर शक करते रहता हूँ। यदि मेरे साथ घूमने चलेगी तो हमारे बीच की गलतफहमी भी दूर हो जाएगी इसलिए मैं उसे घुमाने ले गया। मैंने रास्ते में नित्या को हँसाने की बहुत कोशिश की पर वह नहीं हँसी। यहाँ तक की रास्ते भर नित्या ने मुझसे बात तक नहीं की। जब हम वापस आ रहे थे तो नित्या ने मुझसे बात की।

उसने मुझसे पूछा, “करण एक बात पूछूँ?”

“हाँ, पूछो न नित्या।” मैंने हाँ कहा।

“डॉक्टर साहब की लाश को तुमने उस पीपल के पेड़ के पास ही दफनाया है न?” नित्या ने अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए कहा।

यह बात सुनकर मैं डर गया कि नित्या को कैसे पता कि डॉक्टर साहब की लाश को मैंने और तुमने पीपल के पेड़ के पास दफनाया था। डर के मारे मेरे हाथ-पैर कंपकंपाने लगे थे।

फिर नित्या ने जोर से हँसते हुए कहा, “मुझे सब पता है... हा हा हा! तुम्हें क्या लगा, तुम मुझे दफना कर बच जाओगे? नहीं, कभी नहीं...! मैं किसी को नहीं छोडूँगा... किसी को नहीं!”

करण ने अपनी बात को आगे जारी रखते हुए विराट से कहा, “विराट, नित्या की बाते सुनकर मैं बहुत घबरा गया था। फिर एक दम से मेरी नज़रें जमीन पर पड़ी और मैंने देखा कि नित्या की परछाईं नज़र नहीं आ रही थी। और तुझे भी पता है, आत्माओं की परछाईं नजर नहीं आती है। मैं बहुत डर गया था... मेरे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ इसलिए मैं वहाँ से अपनी जान बचाकर भाग आया और मैंने नित्या को वहीं पर छोड़ दिया।”

“करण, तू पागल तो नहीं हो गया है? यह तुने क्या किया। तू जानता है न नित्या चल नहीं सकती। यदि मेरी नित्या को कुछ भी हुआ न तो मैं तुझे कभी माफ नहीं करूँगा।” विराट ने करण पर गुस्सा करते हुए कहा।

विराट तुरंत वहाँ से जंगल की तरफ भागने लगा। उसी के पीछे-पीछे करण भी जाने लगा।

विराट, नित्या को हर जगह ढूँढ़ रहा था। नित्या को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते विराट उसी जगह पहुँच गया था जहाँ पर करण, नित्या को अकेला छोड़कर भाग आया था। नित्या वहीं पर व्हीलचेयर पर बैठे रो रही थी।

विराट, नित्या के पास चला गया और उसके कंधों पर हाथ रखते हुए पूछने लगा, “आप ठीक तो होना नित्या?”

“हाँ विराट, मैं ठीक हूँ। देखो न, करण मुझे कब से यहाँ अकेला छोड़कर चला गया था। पता नहीं उसने ऐसा क्यों किया? यह जानते हुए भी कि मेरी तबीयत खराब है।” नित्या ने रोते हुए कहा।

“आप घबराइए मत, अब मैं आ गया हूँ न, आज के बाद अब ऐसा कभी नहीं होगा।” विराट ने करण की तरफ गुस्से से देखते हुए कहा।

अपने आप पर शर्मिंदा होते हुए करण ने अपना सिर नीचे झुका लिया। जब करण की नजरें जमीन पर पड़ी तो उसने देखा नित्या की परछाईं अभी भी दिखाई नहीं दे रही थी।

“नीचे देख!” करण ने विराट को इशारा करते हुए कहा।

जब विराट ने नीचे देखा तो उसके भी होश उड़ गये। वह भी घबराने लगा क्योंकि उसे भी नित्या की परछाईं नज़र नहीं आ रही थी। विराट के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता था?

जब विराट ने करण की परछाईं की तरफ देखा तो उसको करण की भी परछाईं नज़र नहीं आ रही थी, फिर उसने अपनी परछाईं की तरफ देखा तो उसे खुद की भी परछाईं नज़र नहीं आयी।

विराट के समझ नहीं आ रहा था कि ये सब क्या हो रहा था। जब उसकी नजरे आसमान की तरफ गयी तो उसने देखा कि शाम होने लगी थी। आसमान में घने बादल छाये हुए थे, जिस कारण किसी की भी परछाईं नहीं दिख रही थी। विराट फिर से करण को गुस्से से घूरने लगा।

“रात होने वाली है, हमें घर चलना चाहिए।” विराट ने नित्या से कहा।

इतना कहकर विराट, नित्या को लेकर वहाँ से जाने लगा।

करण कुछ देर के लिए वहीं पर खड़े रहा। करण, विराट और नित्या को वहाँ से जाते हुए देख रहा था तभी अचानक से नित्या ने व्हीलचैयर पर बैठे-बैठे अपना सिर पीछे घुमा लिया और करण को देखकर मुस्कुराने लगी। करण, नित्या की मुस्कान देखकर डर गया था क्योंकि उसकी मुस्कान डॉक्टर साहब की मुस्कान की तरह थी।

उस दिन के हादसे के बाद विराट की करण से ज्यादा बात नहीं होती थी। दोनों दोस्त से दुश्मन बनते जा रहे थे इसलिए करण ने उस बंगले से जाना ही ठीक समझा। करण ने विराट को भी साथ चलने के लिए कहा था पर उसकी एक शर्त थी, वह यह थी कि विराट को नित्या को इसी बंगले में छोड़ना होगा।

एक तरफ विराट की दोस्ती थी तो दूसरी तरफ उसका प्यार, एक ऐसा प्यार जिसका वह नाम तक नहीं जानता था। विराट कैसे नित्या को अकेला छोड़ देता, नित्या के साथ जीने मरने का वादा किया था उसने।

कभी-कभी हमारी जिन्दगी में ऐसे मोड़ आते हैं, जब हमारे लिए फैसला लेना बड़ा मुश्किल हो जाता है। हमें बिल्कुल समझ नहीं आता कि हम क्या करे, दिल की सुने या दिमाग की। ऐसी परिस्थिति में हमें दिल की सुननी चाहिए क्योंकि दिल ही है जिससे यह दुनिया चल रही है। अगर यह दिमाग से चल रही होती तो इस दुनिया में इंसान नहीं रोबोट रह रहे होते।

विराट ने भी उस दिन अपने दिल की सुनी। उस दिन विराट ने एक सच्चा दोस्त खो दिया था पर दुनिया की सबसे अनमोल चीज प्यार को पा लिया था।

करण के जाने के कुछ दिनों बाद से नित्या की तबीयत और ज्यादा खराब होने लगी। नित्या की आँखों के नीचे काले निशान पड़ने लगे थे। वह अब पूरे वक्त बेड पर ही सोई रहती थी। विराट के साथ बाहर भी घूमने नहीं जाती थी। जब से करण गया था उसने विराट से अच्छे से बात तक नहीं की थी।

विराट के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें। उसे अभी भी यही लगता था कि नित्या बस बीमार है पर शायद वह गलत था।

तारीख 24 जून 2017, रात 03:00 बजे

अमावस्या की रात थी। विराट सो ही रहा था। प्यास लगने के कारण विराट की नींद खुल गयी थी। उसका गला सूखने लगा। जब वह उठा तो उसने देखा नित्या उसके बगल में नहीं थी।

नित्या को उसकी जगह पर न पाकर विराट बौखला गया। वह सोचने लगा कि सोते वक्त तो नित्या यहीं पर थी, रात ही रात में कहाँ चली गयी। हैरान करने वाली बात तो यह थी कि जब नित्या चल ही नहीं सकती तो वह कहाँ जा सकती थी। उसकी व्हीलचेयर भी वहीं पर रखी हुई थी।

विराट, नित्या को पूरे बंगले में ढूंढने लगा पर वह उसे कहीं नहीं मिली। विराट परेशान हो गया यह सोच-सोचकर कि नित्या कहाँ जा सकती है?

* * *

सुबह के पांच बज गये थे पर नित्या का अभी तक कुछ पता नहीं चला था। विराट सोफे पर बैठा हुआ था और नित्या के बारे में सोच ही रहा था, तभी अचानक से अपने आप दरवाजा खुल गया। अपने आप दरवाजे को खुलता हुआ देखकर विराट डर गया। जब दरवाज़ा खुला तो विराट ने देखा, बाहर से नित्या आ रही थी। उसको देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह नींद में चल रही थी। विराट, नित्या को देखकर दंग रह गया था। उसका दिमाग इस बात की गुत्थी सुलझा ही नहीं पा रहा था कि नित्या कैसे चल सकती थी?

नित्या ने धीरे-धीरे अपने कदम घर के अंदर बढ़ाए और सीढ़ियों से चढ़कर, अपने कमरे में जाकर सो गयी। विराट हैरानी के साथ उसे घूरता रह गया। विराट को तो अभी भी अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हो रहा था।

बाहर बारिश हुई थी जिस कारण नित्या के पैरो के निशान जमीन पर छप गये थे। जब विराट ने नित्या के पैरों के निशान देखे तो उसके होश उड़ गये, उसके रोंगटे खड़े हो गये थे। नित्या के पैरो के निशान उल्टे थे जैसे किसी प्रेत-आत्माओं के होते हैं। इससे भी ज्यादा हैरान करने वाली बात यह थी कि नित्या के पैरों के जो निशान छपे थे, उसमें मिट्टी के साथ राख भी थी। वैसी राख जैसे किसी की लाश को जलाने के बाद बनती थी।

विराट को समझ नहीं आ रहा था, नित्या के पैरो में वह राख कहाँ से लगी होगी, आस-पास तो कोई श्मशान भी नहीं था। उसके पैरो के निशान में से किसी मरे हुए इंसान की बदबू भी आ रही थी।

* * *

सुबह 09:00 बजे;

जब सुबह हुई तो नित्या, विराट के साथ ऐसे व्यवहार करने लगी, जैसे उसे कुछ पता ही नहीं कि रात में उसके साथ क्या हुआ था। विराट ने भी उसे कुछ नहीं बताया। विराट नहीं चाहता था कि वह परेशान हो, वैसे भी उसकी तबीयत बहुत खराब थी।

अब विराट को करण की बाते सही लगने लगी थी। उसे भी यह लगने लगा था कि नित्या के अंदर डॉक्टर साहब की रूह है और वह उससे बदला लेना चाहती है।

लेकिन सच तो यह था कि उसे भी नहीं पता कि डॉक्टर साहब को किसने मारा था? अब विराट को यह जानना था कि डॉक्टर साहब की रूह उससे क्या चाहती थी। इसके लिए विराट का यह जानना जरूरी था कि नित्या उस रात कहाँ गयी थी?

विराट रोज रात को तीन बजे उठता यह देखने कि नित्या अमावस्या की रात में कहाँ गयी थी पर नित्या उसे हमेशा सोते हुए ही मिलती थी। विराट के समझ में नहीं आ रहा था कि नित्या कहीं जा क्यों नहीं रही थी? उसे डर सताने लगा था कि कहीं डॉक्टर साहब की रूह को पता तो नहीं चल गया कि उसे पता है नित्या के अंदर उनकी रूह है। विराट की मुश्किलें बढ़ती जा रही थी।

कहते हैं न, भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं... और उस दिन भगवान ने विराट की सुन ली।

👻👻👻👻👻

तारीख 23 जुलाई 2017, रात 03:00 बजे

आज भी अमावस्या की रात थी। विराट, नित्या के सामने सोने का नाटक कर रहा था, तभी नित्या उठ गयी और घर से बाहर जाने लगी। विराट भी उसी वक्त उठ गया और उसने नित्या का पीछा करना शुरु कर दिया।

नित्या उसी पीपल के पेड़ के पास गयी थी, जहाँ पर करण और विराट ने मिलकर डॉक्टर साहब की लाश दफनाई थी। नित्या पीपल के पेड़ के पास जाकर बैठ गयी। कुछ देर तक नित्या आसमान की तरफ देखती रही, फिर उसने पीपल के पेड़ के पास खोदना शुरु कर दिया।

विराट एक पेड़ के पीछे छुपकर यह सब देख रहा था। विराट के बिल्कुल समझ में नहीं आ रहा था कि नित्या ऐसा क्यों कर रही थी? आधे घण्टे तक नित्या खोदती रही। नित्या गड्ढा खोद ही रही थी कि वह गड्ढा खोदते-खोदते रुक गयी। नित्या उस गड्ढे के अंदर कुछ ढूँढने लगी। विराट यही सोच रहा था कि नित्या उस गड्ढे में क्या ढूँढ़ रही होगी?

जब नित्या को वह चीज, जिसे वह ढूँढ़ रही थी नहीं मिली तो उसने गड्ढे की मिट्टी उठायी और अपने सिर पर डालने लगी। नित्या पागलों की तरह चिल्लाने लगी। नित्या की हालत को देखकर विराट को लगा कि उसे नित्या के पास जाना चाहिए पर फिर उसे याद आता है कि अभी उसके सामने उसकी नित्या नहीं थी बल्कि उसके सामने डॉक्टर साहब की रूह थी।

काफी देर हो गयी थी पर नित्या अभी तक वहीं पर बैठकर पागलों की तरह हँसे जा रही थी। जब विराट ने करण की दी हुई घड़ी में वक्त देखा तो उसे पता चला की पांच बजने वाले थे। तभी नित्या को पता नहीं क्या हुआ, वह वहाँ से भागने लगी।

जब नित्या वहाँ से चली गयी, तब विराट उस गड्ढे के पास गया जिसे नित्या ने खोदा था। विराट ने देखा कि उस गड्ढे में किसी की लाश थी, वह लाश कंकाल में तब्दील हो चुकी थी। विराट के समझ नहीं आ रहा था कि वह लाश किसकी हो सकती थी?

उस लाश के आस-पास राख डली हुई थी। ठीक वैसी ही राख, जैसी नित्या के पैरो में उस दिन लगी हुई थी। उस राख के पास से भी ठीक वैसी ही मरे हुए इंसान की बदबू आ रही थी, जैसी उस राख के पास से आ रही थी।

विराट को काफी देर हो गयी थी वहाँ पर खड़े- खड़े। उसे लगा, उसे वहाँ से चले जाना चाहिए। यदि नित्या ने उसे घर पर नहीं देखा तो परेशानी हो जाएगी। विराट वहाँ से जाने लगा। विराट वहाँ से जा ही रहा था तभी उसे जमीन का एक भाग थोड़ा सा ऊपर उठा

हुआ दिखाई दिया। उस भाग को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने वहाँ पर कुछ छुपाया हो। विराट ने उस जगह पर खोदना शुरू कर दिया।

करीब आधे घण्टे तक विराट उस जगह पर खुदाई करते रहा, फिर उसने देखा वहाँ पर, उस गड्ढे में एक और लाश थी। वह लाश भी कंकाल में बदल चुकी थी। विराट को यह तो पता नहीं चला कि वह लाश किसकी थी पर उस कंकाल के हाथ में एक हरे हीरे की अंगूठी चमक रही थी। विराट ने उस अंगूठी को उठा लिया, सोचा शायद इससे उसे कुछ पता चल जाए।

एक तो विराट पहले से ही दो लाशों से परेशान था और अब यह तीसरी लाश उसे मिल चुकी थी, गुत्थी सुलझने की जगह उलझते जा रही थी।

विराट बंगले पर वापस चला आया। विराट के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, कैसे नित्या को इस मुसीबत से निकाले? विराट मुश्किलों में फंस गया था।

जब भी हम किसी मुश्किल में पड़ते हैं तो भगवान से भी पहले हम हमारे दोस्त को याद करते हैं, विराट ने भी वही किया। विराट ने करण को फोन करके सारी बात बता दी।

एक सच्चा दोस्त वही होता है, जो भले ही आपसे कितना भी नाराज़ हो पर मुसीबत के वक्त सबकुछ भूलकर आपके पास आ जाता है।

करण भी विराट के पास आना चाहता था पर उस वक्त दूसरे शहर में था। उसने विराट से कहा था कि वह शाम तक वापस आ जाएगा, तब तक उसे नित्या का ख्याल रखना था। विराट शाम होने का इंतजार करने लग गया।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 23 जुलाई 2017, शाम 08:00 बजे

रात हो चुकी थी पर करण अभी तक नहीं आया था। विराट और नित्या साथ में ही सोफे पर बैठे हुए थे तभी लाइट चली गयी। बंगले में चारों तरफ अंधेरा छा गया। विराट ने मोबाईल की टॉर्च ऑन कर ली। अंधेरा इतना ज्यादा था कि विराट को टॉर्च के उजाले से सिर्फ आस-पास की कुछ चीजें ही दिखाई दे रही थी।

विराट ने मोबाइल की टॉर्च नित्या के पास ले गया। रोशनी नित्या पर पड़ी तो नित्या विराट को देखने लगी। नित्या, विराट को ही देखे जा रही थी। नित्या को देखकर विराट को ऐसा लग रहा था जैसे उसकी पुरानी नित्या वापस आ गयी थी। विराट और नित्या, दोनों की नज़रें एक दूसरे की नज़रों से नहीं हट रही थी। दोनों एक दूसरे की आँखों में खो गये थे। देखते ही देखते नित्या की आँखों में से आँसू निकलने लगे।

“क्या हुआ, आप रो क्यों रही हो?” विराट ने पूछा।

“मुझे सब याद आ गया कुंदरू... कुंदरू, मुझे सब याद आ गया!” नित्या ने रोते-रोते कहा।

इतना सुनते ही विराट समझ गया था कि नित्या की याददाश्त वापस आ गयी क्योंकि कुंदरू कहकर वही उसे पुकारती थी। विराट की आँखों में से भी आँसू निकलने लगे थे। कैसे न आते, इतने दिनों बाद उसने नित्या के मुँह से अपना नाम जो सुना था। नित्या विराट से लिपटकर रोने लगी।

विराट को उस पल ऐसा लग रहा था, जैसे भगवान ने उसकी पुकार सुन ली थी। दोनों एक दूसरे की बाँहों में समा गये थे। ऐसा लग रहा था जैसे दो प्रेमी कई जन्मो के बाद एक-दूसरे से मिल रहे थे। दोनों ही निःशब्द थे। वह दोनों एक-दूसरे के दिल की धड़कनों को महसूस कर पा रहे थे, भले ही उस वक्त दो दिल धड़क रहे हो पर दोनों दिल एक साथ धड़क रहे थे। दोनों की आँखें बंद थी।

“मुझे सब कुछ याद आ गया कुंदरू, अब मैं तुम्हें कभी छोड़कर नहीं जाऊंगी।” नित्या ने कहा।

“मैं भी तुम्हें अपने आप से दूर जाने नहीं दूँगा, अगर अब खुदा भी हमारे बीच में आया तो उनसे भी लड़ जाऊँगा।” इतना कहकर विराट ने अपने बाजुओं को और कस कर दबा दिया जिससे नित्या उसके और करीब आ गयी।

नित्या की लंबी-लंबी जुल्फें विराट के चेहरे को बार-बार छुह रही थी। विराट, नित्या के बालों की खुशबू में मदहोश हो गया था।

नित्या ने भी अपने हाथों से उसे कसकर पकड़कर रखा था। नित्या अभी भी रो रही थी।

“चुप हो जाओ, नित्या। अब तो तुम्हें सब याद आ गया है न... अब क्यों रो रही हो?” विराट ने नित्या के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

नित्या ने कुछ जवाब नहीं दिया।

विराट अभी भी नित्या के बाँहों के नशे में खोया हुआ था और उसके स्पर्श को महसूस कर रहा था।

“नित्या, तुम सिर्फ मेरी हो... सिर्फ मेरी।”

“कौन नित्या?”

“तुम नित्या, और कौन नित्या।”

"मैं कोई नित्या-वित्या नहीं हूँ।" नित्या ने कहा पर इस बार नित्या की आवाज में बदलाव था।

यह आवाज किसी आदमी की आवाज की तरह लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे बंगले में नित्या और विराट के अलावा कोई तीसरा भी था, जिसने यह बोल बोले थे।

नित्या की बदली आवाज सुनकर उसी वक्त विराट ने अपनी आँखें खोल दी और नित्या को अपने सीने से दूर कर दिया। जब विराट ने नित्या की आँखों में देखा तो डर गया। नित्या की आँखों की पुतली गायब हो चुकी थी।

"यह तुम्हें क्या हो गया नित्या?" विराट ने घबराते हुए कहा।

"मैंने कहा ना, मैं नित्या नहीं हूँ! कितनी बार समझाऊँ मैं तुझे?" नित्या ने गुस्से में फिर आदमी की आवाज में कहा।

यह सुनकर विराट के कदम झट से पीछे हट गये। उसका बदन पसीने से भीगने लगा था।

"एंजल सिर्फ मेरी है... सिर्फ मेरी! उसके जिस्म पर सिर्फ मेरा हक है, सिर्फ मेरा!" नित्या ने कहा।

"यह तुम क्या बोल रही हो, नित्या? कौन एंजल?"

"फिर नित्या! कहा न, मैं नित्या नहीं हूँ।" नित्या ने गुस्से से भिन्नाते हुए कहा।

विराट के हाथ पैर कंपकंपाने लगे थे। नित्या धीरे-धीरे विराट के पास जाने लगी। विराट को बहुत डर लगने लगा था क्योंकि उसे पता चल गया था अब उसके सामने उसकी नित्या नहीं बल्कि डॉक्टर साहब की रूह खड़ी थी।

विराट डर के मारे अपने कदम पीछे हटाने लगा। पीछे हटते-हटते विराट दीवार के आखिरी कोने तक पहुँच गया था। जैसे-जैसे विराट अपने कदम पीछे हटाते जा रहा था, नित्या अपने कदम विराट की तरफ बढ़ाते जा रही थी। नित्या, विराट के पास गयी और उसने एक हाथ से विराट का गला पकड़कर दीवार से टिकाकर उसे हवा में उठा लिया।

"छोड़ो नित्या! छोड़ो मुझे! ये तुम क्या कर रही हो?" विराट ने चिल्लाते हुए कहा।

नित्या के हाथ के नाखून काले हो गये थे। विराट के समझ नहीं आ रहा था कि नित्या ने उसे कैसे उठा लिया था, उसके पास इतनी ताकत कैसे आ गई थी?

"यह तुम्हें क्या हो गया है नित्या?" विराट ने डरते हुए नित्या से पूछा।

नित्या अब दोनों हाथों से विराट का गला दबा रही थी और पागलों की तरह आदमी की आवाज में चिल्लाये जा रही थी।

"एंजल सिर्फ मेरी है, सिर्फ मेरी...! उसे मुझसे कोई अलग नहीं कर सकता।" नित्या बार-बार आदमी की आवाज में यही बात दोहराते जा रही थी।

विराट का दम घुटे जा रहा था पर नित्या को उस पर बिल्कुल भी दया नहीं आ रही थी। नित्या पर विराट की बातों का कुछ भी असर नहीं हो रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी के वश में हो।

नित्या बस विराट का गला दबाए जा रही थी और अजीब सी आवाजें निकाले जा रही थी। विराट की आँखें लाल हो चुकी थी। विराट ने बहुत कोशिश की थी अपना गला छुड़ाने की पर नहीं छुड़ा पा रहा था। नित्या, विराट का गला छोड़ ही नहीं रही थी। ऐसा लगने लगा था कि यदि ऐसे ही नित्या विराट का गला दबाते रही तो कुछ ही देर बाद विराट अपना दम तोड़ देगा। विराट का दम घुटने लगा था, उसे साँस लेने में बहुत परेशानी हो रही थी।

विराट अपना दम तोड़ने ही वाला था तभी वहाँ पर करण, पण्डित वेदव्यास जी को लेकर आ गया। करण और पण्डित वेदव्यास जी विराट के लिए भगवान बनकर आए थे। यदि उस दिन वह दोनों नहीं आए होते तो नित्या के शरीर के अंदर की रूह ने उसी दिन विराट को मार दिया होता।

पण्डित वेदव्यास जी ने एक छोटी सी काँच की बोतल में से गंगा जल निकाला और मंत्र पढ़ते हुए नित्या के ऊपर फेंक दिया। जैसे ही गंगा जल की बूंदें नित्या के ऊपर गिरी, नित्या ने विराट का गला छोड़ दिया। नित्या जोर-जोर से तड़पने लगी, जैसे किसी ने उसके ऊपर खौलता हुआ तेल डाल दिया था। नित्या वहाँ से भागने लगी।

विराट, नित्या के पीछे जा ही रहा था तभी पण्डित वेदव्यास जी ने उसे रोकते हुए कहा, "रुक जाओ! कोई जरूरत नहीं है उसके पीछे जाने की, वह खुद यहाँ वापस आ जाएगी।"

"यह पण्डित वेदव्यास जी है, मैंने इन्हें सब कुछ बता दिया है। यही है जो अब हमारी मदद कर सकते हैं और हमें इस पाप से मुक्ति दिला सकते हैं।" करण ने कहा।

"मैं तुम्हें सिर्फ रास्ता दिखा सकता हूँ, मुक्ति तुम्हें खुद पानी होगी। महाभारत में भी भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन का सिर्फ मार्गदर्शन किया था, जीत उन्हें अपने बलबूते पर स्वयं हासिल करनी पड़ी थी।" पण्डित वेदव्यास ने कहा।

"तुम्हारे पास नित्या की कोई तस्वीर है?" पण्डित वेदव्यास जी ने जमीन पर चंदन से चाक बनाते हुए कहा।

"नहीं, मेरे पास तो कोई तस्वीर नहीं है।" विराट ने मना करते हुए कहा।

"मेरे पास है, दो मिनट... मैं अभी लेकर आता हूँ।" करण ने कहा।

करण अपने कमरे में गया, जहाँ पर वह पहले रहता था। जब करण वापस आया तो अपने साथ एक तस्वीर लेकर आया था। यह वही तस्वीर थी जो इस बंगले में लगी हुई थी। तस्वीर में नित्या के साथ उसके पिता भी थे।

पण्डित वेदव्यास जी ने उस तस्वीर को अपने हाथ में लिया और जमीन पर रख दिया। उन्होंने उस तस्वीर के सामने एक दीया जला दिया। पण्डित वेदव्यास जी ने वापस से उस बोतल में से गंगा जल की कुछ बूंदें अपने हाथ में ली और उस तस्वीर पर छिड़क दी। जैसे ही वह बूंदें तस्वीर पर गिरी उस तस्वीर में से किसी आदमी के चिल्लाने की आवाजें सुनाई देने लगी, "आअअअअअअअअ नहीइइइइइइइइ!"

पण्डित वेदव्यास ने मंत्र पढ़ते हुए कहा,

"यानि कानि च पापानि जन्मान्तर क्रतानि च

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे"

बंगले की खिड़कियाँ अपने आप खुलने और बंद होने लगी। पण्डित वेदव्यास जी ने जो दीया जलाया था, उस दीये की लौ अपने आप काली हो गयी थी। उस दीये को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उस दीये के ऊपर किसी का काला साया मंडरा रहा था। कमरे के अंदर एकदम से खामोशी छा गयी थी।

विराट और करण, नित्या को अपने आस-पास ढूँढ़ ही रहे थे तभी अचानक पता नहीं कब नित्या अपनी तस्वीर के सामने आकर बैठ गयी।

नित्या के बाल खुले हुए थे। उसके नाखून काले पड़ गये थे। नित्या के लम्बे-लम्बे बालों ने उसका चेहरा ढक लिया था, जिस कारण किसी को भी उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था। नित्या, पण्डित वेदव्यास जी को गुस्से से घूरे जा रही थी।

जब नित्या वहाँ पर आकर बैठ गयी तो पण्डित वेदव्यास जी ने मंत्र पढ़ना बंद कर दिया, "बता! कौन है तू...? इस मासूम लड़की को क्यों परेशान कर रहा है?" पण्डित वेदव्यास जी ने नित्या से पूछा।

नित्या ने पण्डित वेदव्यास जी के सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया।

"बता कौन है तू...?" पण्डित वेदव्यास जी ने फिर पूछा।

नित्या ने फिर से कुछ जवाब नहीं दिया।

पण्डित वेदव्यास जी ने फिर से मंत्र पढ़ा और नित्या के ऊपर गंगा जल की कुछ बूँदें छिड़क दी। नित्या दर्द के मारे तड़पने लग गयी और जोर-जोर से चिल्लाने लग गयी।

“बता कौन है तू?” पण्डित वेदव्यास जी ने फिर पूछा।

नित्या के सामने ही काँच की एक गिलास रखी हुई थी। नित्या ने उस गिलास की तरफ देखा और अपनी जादुई शक्ति से उसे अपने पास खींच लिया। नित्या ने झट से उस गिलास को अपने सिर पर फोड़ दिया। उसके सिर से खून निकलने लगा था पर फिर भी वह कस-कस कर हँसे जा रही थी जैसे उसे कुछ दर्द महसूस ही नहीं हो रहा था।

विराट और करण यह सब देखकर हैरान हो गये थे। डर के मारे उन दोनों के पैर कंपकंपाने लग गये थे।

“कुछ नहीं बताऊँगा... हा हा! कुछ नहीं! बस, वर्षा ऋतु की आखिरी अमावस्या, फिर हमेशा-हमेशा के लिए एंजल को अपनी दुनिया में ले जाऊँगा।” नित्या ने जोर-जोर से हँसते हुए आदमियों की आवाज में कहा।

पण्डित वेदव्यास जी फिर से जोर-जोर से मंत्र पढ़ने लगे।

नित्या वहाँ से उठ गयी और अपना सिर कभी अलमारी पर पटकने लगी तो कभी खुद को सीढ़ियों से नीचे गिराने लगी। नित्या बार-बार अपने आप को चोट पहुँचाए जा रही थी। पण्डित वेदव्यास भी अपनी शक्तियों से उसे रोक नहीं पा रहे थे। पण्डित वेदव्यास जी के पास दुर्गा माता को चढ़ाने वाली लाल रंग की एक चुनर थी।

“इसे नित्या के सिर पर बाँध दो, जब तक इस रूह को मैं रोकता हूँ।” पण्डित वेदव्यास जी ने वह चुनर विराट के हाथों में देते हुए कहा।

पण्डित वेदव्यास जी लगातार मंत्र पढ़ते जा रहे थे जिस कारण नित्या घर से बाहर नहीं जा पा रही थी। नित्या एक जगह पर रुक गयी थी।

“नहीं... नहीं! चुप हो जा पुजारी, चुप हो जा...!” नित्या ने चिल्लाते हुए कहा।

विराट जल्दी से मौका देखकर नित्या के पास गया और माता रानी की चुनर उसके सिर पर बाँधने लगा। नित्या जोर-जोर से चिल्लाने लगी और चिल्लाते-चिल्लाते ही बेहोश हो गयी थी। विराट और करण ने नित्या के हाथ पैर बाँधकर उसे ऊपर वाले कमरे में बंद कर दिया।

विराट, करण और पण्डित वेदव्यास जी हॉल में बैठे हुए थे तभी पण्डित वेदव्यास जी ने कहा, “उस रूह ने नित्या को पूरी तरह अपने वश में कर लिया है जिस कारण नित्या

हमें कुछ नहीं बता पा रही है। अगर हमने अब जरा सी भी कोशिश की नित्या से कुछ भी पूछने की तो वह रूह नित्या को अभी इसी वक्त मार देगी। माता रानी की चुनर से हम उस रूह को ज्यादा दिन तक नहीं रोक सकते। ग्यारह दिन बाद उस चुनर का रंग अपने आप काला पड़ जाएगा क्योंकि काली शक्तियों को हम बस कुछ समय के लिए रोक सकते हैं, उन्हें मार नहीं सकते। नित्या के अंदर जो रूह है, वह कोई ऐसी वैसी रूह नहीं है बल्कि वह अघोरिय प्रवृत्ति की रूह है। उसके पास बहुत सारी काली शक्तियाँ है इसलिए वह मेरे भी वश में नहीं आ रही है। वह एक बेगानी रूह है।"

"पण्डित जी, बेगानी रूह मतलब?" करण ने हैरानी के साथ पूछा।

"बेगानी रूह मतलब वह रूह जिसके बारे में हमें कुछ पता न हो कि वह कहाँ से आयी है और क्या चाहती है। न ही हमें उसका अतीत पता हो, न ही उसका वर्तमान।"

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 28 जुलाई 2017, सुबह 11:00 बजे

विराट, करण और पण्डित वेदव्यास के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या करे? पाँच दिन हो गये थे और नित्या ने कुछ नहीं खाया था, यहाँ तक कि उसने अपनी आँखें तक नहीं खोली थी। पण्डित वेदव्यास जी भी इस समस्या का हल नहीं निकाल पा रहे थे। उन्हें पता नहीं चल पा रहा था कि वह बेगानी रूह क्या चाहती थी?

सभी लोग साथ में बैठे हुए थे। तभी विराट की नज़रें नित्या और उसके पिता की तस्वीर पर पड़ी और उसने देखा नित्या के पिता के हाथ में एक हरे रंग की अंगूठी थी, जो बार-बार चमक रही थी। तभी विराट को याद आया कि उस दिन जो कब्र उसने खोदी थी वहाँ से उसे भी एक अंगूठी मिली थी। विराट वह अंगूठी और तस्वीर वाली अंगूठी मिलाकर देखने लगा। दोनों अंगूठी एक जैसी निकली। इसका मतलब यह था कि वह लाश नित्या के पिता की थी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 7 अगस्त 2017, रात 02:00 बजे

सौम्या को अपनी कहानी सुनाते-सुनाते विराट वापस से वर्तमान काल में आ गया और कहने लगा, “मुझे यह तो पता चल गया था कि पीपल के पेड़ के पास जो तीन लाश गड़ी थी, उसमें से एक लाश डॉक्टर साहब की और दूसरी नित्या के पिता की थी, लेकिन तीसरी लाश किसकी थी, यह मुझे अभी तक पता नहीं चला था। पहले मुझे लगता था कि नित्या के अंदर डॉक्टर साहब की रूह है पर उसके पिता की लाश मिलने के बाद मुझे लगने लगा, नित्या के अंदर उनकी भी रूह हो सकती है या फिर वह तीसरी लाश की, पर वह तीसरी लाश किसकी थी?”

इतना कहकर विराट ने एक लम्बी सांस ली और फिर कहने लगा, “मैं कभी नहीं जानना चाहता था कि नित्या का अतीत क्या था। मैं तो बिना उसका अतीत जाने ही उसे अपनाने के लिए तैयार था। मगर अब नित्या की जान बचाने के लिए मेरा उसका अतीत जानना बहुत जरूरी हो गया था। मुझे जानना था कि वह कौन है और क्यों वह मेरी जिन्दगी में आई थी। वह दो महीने से कहाँ गायब थी? डॉक्टर साहब और उसके पिता जी का खून किसने किया था और वह तीसरी लाश किसकी थी? मेरे पास सवाल बहुत सारे थे पर जवाब किसी का भी नहीं था। मुझे लगा कि पण्डित वेदव्यास जी मुझे नित्या के अतीत के बारे में पता करने के लिए कहेंगे पर उन्होंने मुझे आपको ढूँढ़ने के लिए कहा। पता नहीं क्यों, बस उन्होंने मुझसे इतना कहा था कि वर्षा ऋतु की आखिरी अमावस्या को वह बेगानी रूह हमेशा-हमेशा के लिए नित्या को अपने साथ अपनी दुनिया में ले जायेगी। वह बेगानी रूह अघोरिय प्रवृत्ति की है और उसको बस सौम्या ही अपने वश में कर सकती है। करण और पण्डित वेदव्यास जी वहीं पर नित्या के पास रुक गये और मैं आपको ढूँढ़ने आ गया। बस यही थी मेरी एक बेगानी प्रेम कथा।”

भाग ०४
बेगानी रूह अतीत

तारीख 07 अगस्त 2017, रात 02:30 बजे

"तुम्हें पता है न विराट, आज से पन्द्रह दिन बाद वर्षा ऋतु की आखिरी अमावस्या है। यदि हमने पन्द्रह दिन के अंदर उस बेगानी रूह का पता नहीं लगाया तो वह रूह हमेशा-हमेशा के लिए नित्या को अपनी दुनिया में ले जायेगी।" सौम्या ने विराट से कहा।

"हाँ पता है मुझे, सौम्या जी। मैं कैसे भूल सकता हूँ। इंसान का जीना और मुश्किल हो जाता है जब उसे पता चल जाता है कि वह मरने वाला है और मेरा जीना मरना तो नित्या के साथ ही है न। यदि वही नहीं रहेगी तो मैं जीकर क्या करूँगा।"

"तुम ऐसा मत कहो विराट, हम नित्या को बचा लेंगे।"

कुछ देर चलने के बाद सौम्या और विराट बंगले के दरवाज़े तक पहुँच गये। रात के ढाई बज रहे थे, जंगली जानवरों के चिल्लाने की आवाजें सुनाई दे रही थी। बंगले का दरवाज़ा लगा हुआ था। विराट दरवाज़ा खटखटाने लगा।

खट खट खट... खट खट खट।

किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला। विराट बार-बार दरवाज़ा खटखटाये जा रहा था पर कोई भी दरवाज़ा नहीं खोल रहा था।

"करण... करण! देख मैं सौम्या जी को लेकर आ गया। दरवाज़ा खोल भाई।" विराट ने करण को आवाज़ लगाते हुए कहा।

कोई जवाब नहीं आया। वहाँ पर बहुत खामोशी छायी हुई थी। रात और गहरी होते जा रही थी। जंगली जानवरों ने तेज-तेज चिल्लाना शुरू कर दिया था।

"विराट, तुम पीछे हट जाओ।" सौम्या ने विराट से कहा।

सौम्या के कहने पर विराट पीछे हट गया। सौम्या ने अपनी पोटली में से चंदन का डिब्बा निकाला और बंगले के दरवाज़े पर स्वस्तिक का चिन्ह बनाने लगी। सौम्या ने जैसे ही स्वस्तिक का चिन्ह दरवाज़े पर बनाया, दरवाज़ा अपने आप खुल गया। दरवाज़ा चरमराने की आवाज़ आने लगी... कररररर...।

विराट और सौम्या बंगले के अंदर चले गये। सौम्या ने जैसे ही बंगले के अंदर अपना पहला कदम रखा, उसको उसके बचपन की याद आने लगी। उसको याद आया कि वह बचपन में इसी बंगले में खेला करती थी, उसका पूरा बचपन इसी बंगले में बीता था। सौम्या जहाँ पर थी वहीं पर रुक गयी।

सौम्या को एक ही जगह पर खड़ा देखकर विराट ने पूछा, “क्या हुआ, आप रुक क्यों गयी?”

सौम्या ने कुछ जवाब नहीं दिया। देखते ही देखते सौम्या की आँखों में से आँसू निकलने लगे।

उन आँसुओं को देखकर विराट ने सौम्या से पूछा, “आप रो क्यों रही है सौम्या जी? आप कुछ बताओगी ?”

“यह वही बंगला है विराट, जहाँ पर मैंने अपना पूरा परिवार खो दिया था। मेरे माता-पिता, मेरा भाई, मेरे मामा, मेरी दादी और मेरा सब कुछ।” सौम्या रोते हुए कहा।

“क्या कहा आपने!” विराट ने चौंककर कहा।

“हाँ विराट, यह वही बंगला है और यही वह सीढ़ियाँ है जिससे गिरकर मैंने अपनी आँखों की रोशनी खो दी थी।” सौम्या ने सीढ़ियों की तरफ इशारा करते हुए कहा।

सौम्या की बातें सुनकर विराट हैरान हो गया। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि सौम्या को कैसे पता उसके सामने सीढ़ियाँ है जबकि वह तो देख ही नहीं सकती।

कुछ ही देर बाद विराट ने करण को पुकारते हुए कहा, “करण, कहाँ पर है तू भाई, आवाज दे! देख, मैं सौम्या जी को लेकर आ गया।”

विराट, करण और पंडित वेदव्यास को आवाज लगाए जा रहा था पर कोई जवाब नहीं आ रहा था। बंगले के अंदर विराट की आवाज गूंजने लगी थी। बंगले में सिर्फ विराट और सौम्या ही थे बाकी पूरा बंगला सूनसान पड़ा हुआ था।

विराट और सौम्या सीढ़ियों से चढ़कर नित्या के कमरे तक चले गये जहाँ पर पण्डित वेदव्यास जी और करण ने नित्या को बाँधकर रखा था। नित्या के कमरे का भी दरवाज़ा बंद था। विराट उस दरवाज़े को खोलने की कोशिश करने लगा पर उससे वह दरवाज़ा नहीं खुल रहा था। विराट अपने कंधे से उस दरवाज़े को धक्का देने लगा पर तब भी उससे वह दरवाज़ा नहीं खुला। सौम्या ने एक बार फिर उस दरवाज़े पर चंदन से स्वस्तिक का चिन्ह बनाया और वह दरवाज़ा अपने आप खुल गया।

जब वह दरवाज़ा खुला तो विराट को साँप सूंघ गया। विराट के रोंगटे खड़े हो गये थे। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह कुछ नहीं बोल पा रहा था। उसे एक गहरा सदमा लग गया था।

उस दरवाज़े के ऊपर करण का सिर लटका हुआ था। करण के सिर से खून टपक रहा था जो सीधे फर्स पर गिर रहा था। करण मर चुका था, वह अब इस दुनिया में नहीं था।

"ये मैंने क्या कर दिया? अपने प्यार को पाने के लिए अपने दोस्त की कुर्बानी दे दी। मैं इतना मतलबी कैसे हो सकता हूँ? ज़िन्दगी के हर मुश्किल मोड़ पर करण ने मेरा साथ दिया और आज मेरे लिए उसने अपनी जान भी दे दी।" विराट ने रोते हुए कहा।

"मैं समझ सकती हूँ विराट, अपनों को खोने का क्या गम होता है पर जो हो गया उसे हम बदल तो नहीं सकते न। जो होने वाला है, उसे रोक सकते हैं..." सौम्या ने विराट को सहारा देते हुए कहा, "हमें करण की कुर्बानी को बेवजह नहीं जाने देना चाहिए विराट। करण तुम्हें और नित्या को साथ-साथ देखना चाहता था। हमें कैसे भी करके नित्या की जान बचानी पड़ेगी तभी करण की आत्मा को शांति मिलेगी।"

"हाँ, आप सही कह रही है, मैं अपने दोस्त की कुर्बानी बेवजह नहीं जाने दूँगा।" विराट ने अपने आँसुओं को पोंछते हुए कहा।

सौम्या, नित्या के कमरे के चारों तरफ घुमने लगी। वहाँ पर चारों तरफ खिड़कियों के काँच टूटे पड़े थे। नित्या के बेड के चारों तरफ बूझी हुई मोमबत्तियाँ बिखरी हुई थी। सौम्या ने मोमबत्ती को हाथ में लिया और उस कमरे में क्या हुआ था यह जानने की कोशिश करने लगी। सौम्या ने अपनी आँखें बंद कर दी और देखने लगी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 04 अगस्त 2017, शाम 07:30 बजे

जिस कमरे में सौम्या खड़ी थी, वहाँ पर पण्डित वेदव्यास जी ने नित्या को बेड से बाँधकर रखा था। उसके हाथ-पैर बेड के चारों कोनों से बंधे हुए थे। नित्या के सिर पर की माता की चुनर काली पड़ गयी थी। पण्डित वेदव्यास जी नित्या के बेड के चारों तरफ मोमबत्तियाँ जला रहे थे। करण भी वही पर खड़ा हुआ था। मोमबत्तियों की रोशनी से बेड चारों तरफ से जगमगा रहा था।

"याद रहे, चाहे कुछ भी हो ये मोमबत्तियाँ नहीं बुझनी चाहिए करण। ये जलती रहनी चाहिए। मैं तब तक यह पता लगाकर आता हूँ कि इस रूह को क्या चाहिए? यह किस चीज का इंतजार कर रही है? यह रूह कुछ तो ढूँढ़ रही है, हमें पता लगाना ही होगा कि वह क्या है? इसके लिए मुझे बाहर जाना होगा। तब तक करण तुम अपना ख्याल रखना।" पण्डित वेदव्यास जी ने करण से कहा।

"जी पण्डित जी, आप फिक्र मत कीजिए मैं अपना और नित्या दोनों का ख्याल रखूँगा आप बेफिक्र होकर जाइए।" करण ने पण्डित वेदव्यास से कहा।

पण्डित वेदव्यास जी उस कमरे से चले गये। इस वक्त नित्या बेड पर सो रही थी। नित्या के चेहरे पर और शरीर पर काले-काले निशान पड़ गये थे जैसे किसी का श्राप लगा था। वह निशान बहुत ही भद्दे लग रहे थे।

* * *

पण्डित वेदव्यास जी को गये हुए दो दिन बीत गये थे। करण ने एक भी मोमबत्ती को बुझने नहीं दिया था। जैसे ही कोई मोमबत्ती बुझने वाली होती करण उसकी जगह नई मोमबत्ती जला देता था।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 06 अगस्त 2017, रात 11:30 बजे

रात हो चुकी थी। नित्या अभी भी सो रही थी। तभी नित्या का बेड अपने आप धीरे-धीरे हिलने लगा। करण के हाथ पैर कंपकंपाने लगे। वह डरने लगा तभी उसकी नजर मोमबत्तियों पर पड़ी और उसने देखा कि मोमबत्तियाँ किसी भी वक्त बुझने वाली थी। वह भागते हुए दूसरे कमरे में गया और वहाँ से नई मोमबत्तियाँ लेकर आ गया।

नित्या की आँखें अभी भी बंद थी पर वह जोर-जोर से अपने हाथ-पैर हिलाने लगी थी जिस कारण उसका बेड और तेज हिलने लगा था। नित्या का बेड ऐसे हिल रहा था जैसे कोई भूकम्प आ रहा हो। सभी मोमबत्तियाँ बुझने ही वाली थी तभी करण ने डरते हुए जल्दी-जल्दी पुरानी मोमबत्तियों की जगह पर नयी मोमबत्तियाँ जलानी शुरू कर दी।

नित्या अजीबों-गरीब आवाजें निकाल रही थी, "हमममम... हमममम... हमममम।"

करण ने दोबारा बेड के चारों तरफ नई मोमबत्तियाँ जला दी थी और वह चैन की साँस ले रहा था।

नित्या का बेड अब नहीं हिल रहा था। नित्या शांत हो चुकी थी। तभी अचानक से कमरे की खिड़कियाँ अपने आप खुलने-बंद होने लगी, जिससे बाहर की हवा कमरे के अंदर आने लगी थी। हवा से ऐसा लगने लगा था कि मोमबत्तियाँ किसी भी वक्त बुझने वाली थी।

मोमबत्तियों के बुझने से पहले ही करण ने जल्दी से कमरे की सारी खिड़कियाँ बंद कर दी। करण को लगा कि अब सब ठीक हो गया और वह कमरे से बाहर जाने लगा। करण कमरे से बाहर जा ही रहा था तभी एक जोर से हवा का झोंका आया, जिससे खिड़कियों के काँच टूट गये और हवा का झोंका अंदर घूस गया जिस कारण सभी मोमबत्तियाँ बुझ गयी।

जैसे ही मोमबत्तियाँ बुझी, उसी वक्त बंगले की लाइट चली गयी। जब लाइट वापस आयी तो करण ने देखा नित्या उसके बेड पर नहीं थी। नित्या वहाँ से भाग चुकी थी। करण कुछ समझ पाता कि क्या हो रहा है?

इससे पहले ही अचानक से नित्या करण के सामने आ गयी और हँसते हुए कहने लगी, "कहा था ना... सब मरेंगे...।"

नित्या के हाथ चाकू की तरह पैने हो गये थे। जब नित्या ने अपना हाथ करण की गर्दन पर फेरा तो करण की गर्दन कटकर दरवाज़े के ऊपर लटक गयी और उससे खून टपकने लगा। करण का सिर उसके धड़ से अलग हो गया था। करण का धड़ जमीन पर

गिरकर फड़फड़ाने लगा। उसका धड़ अपने आजू-बाजू हाथ पैर मारने लगा था। करण को तड़पता हुआ देखकर नित्या जोर-जोर से हँसने लगी। करण ने तड़पते-तड़पते अपना दम तोड़ दिया।

नित्या हँसते हुए खिड़की से कूदकर बाहर भाग गयी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 07 अगस्त 2017, रात 02:45 बजे

"अगर नित्या की जान बचानी है विराट, तो हमें यह पता करना ही होगा कि नित्या के अंदर किसकी रूह है और वह क्यों नित्या के पीछे पड़ी हुई है। कोई न कोई रिश्ता तो ज़रूर होगा उन दोनों के बीच। रूहें इतनी आसानी से किसी के पीछे नहीं पड़ती है। हमें नित्या की जान बचाने के लिए नित्या के अतीत के बारे में पता करना ही पड़ेगा।" सौम्या ने विराट से कहा।

"सौम्या जी, हमें कैसे पता चलेगा की नित्या का अतीत क्या था?" विराट ने कहा।

"तुमने मुझसे कहा था कि यह बंगला नित्या का है, तो क्या इस बंगले में कुछ ऐसी चीज है जो नित्या से जुड़ी हो?"

"मतलब?"

"मतलब विराट, हमें कुछ ऐसा ढूँढ़ना होगा जिससे नित्या का बचपन जुड़ा हो, उसी की मदद से हम नित्या के अतीत के बारे में पता कर सकते हैं कि नित्या कौन है और उसके अंदर किसकी रूह है?"

"ठीक है, मैं ढूँढ़ता हूँ।"

विराट बंगले के हर कमरे में नित्या का सामान ढूँढ़ने लगा था पर उसे कुछ ऐसा नहीं मिला था जिसकी मदद से वह नित्या के अतीत में जा पाए।

रात से दिन हो गया था पर विराट को कुछ नहीं मिला था। विराट बहुत थक गया था और उसने हार मान ली थी कि उसको नित्या का कोई सामान मिलेगा।

विराट, नित्या के कमरे से बाहर जाने के लिए निकलने लगा, तभी उसके पैर लड़खड़ा गए और वह जमीन पर गिर गया। जब विराट नीचे गिरा तो उसे अलमारी के नीचे एक लकड़ी का बॉक्स दिखा। उस बॉक्स पर बहुत धूल जमी हुई थी। विराट ने वह बॉक्स उठाया और सौम्या को लाकर दे दिया।

सौम्या ने वह बाक्स खोला तो विराट ने देखा कि उसमें कुछ शंख और चमकीले पत्थर रखे हुए थे। उसके अंदर एक बच्ची की छोटी सी चाँदी की पायल भी रखी हुई थी।

"यह तो पायल है।" विराट ने कहा।

"यह पायल नित्या की ही है।" सौम्या ने पायल को अपने हाथ में लेते हुए कहा।

"इसका मतलब यह हुआ कि अब हम नित्या के अतीत के बारे में पता कर सकते हैं?"

“हाँ, मैं अब तुम्हें नित्या के अतीत में भेज सकती हूँ पर याद रहे, तुम वहाँ पर किसी भी चीज को छूना मत वरना तुम वापस इस दुनिया में आ जाओगे। एक और परेशानी भी है।”

“क्या परेशानी है सौम्या जी?”

“बात यह है कि जब भी हम किसी के अतीत में जाते हैं तो काली दुनिया की रूहों को हमारे शरीर के अंगों की ताकत मिल जाती है, जिससे कभी-कभी हमारे शरीर के कुछ अंग काम करना बंद कर देते हैं। कभी-कभी तो हम उन्हें खो भी देते हैं। तुम्हारी आँखें भी जा सकती है या तुम्हारे हाथ-पैर भी, कुछ भी हो सकता है। सोच लो, क्या तुम्हें अभी भी नित्या के अतीत में जाना है?”

“हाँ, मुझे अभी भी नित्या के अतीत में जाना है, नित्या के लिए मैं सब कुछ खोने के लिए तैयार हूँ।”

सौम्या ने अपने हाथ में नित्या के बचपन की पायल ली और विराट से कहा, “मेरे हाथ के ऊपर अपना हाथ रखो विराट।”

विराट ने सौम्या के हाथ के ऊपर अपना हाथ रख दिया।

सौम्या ने मंत्र पढ़ते हुए कहा,

“भूतसंघ नायकं विशाल कीर्तिदायकम,

काशी वास लोक पूण्य पाप शोधकंविभुम

नीतिमोर्ग कोविदं पुरातनं जगत्पतिम,

काशिका पुराधिनाथ काल भैरवं भजे।”

मंत्र के खत्म होते ही विराट के हाथ में जो घड़ी बंधी थी, उसकी सूइयाँ अपने आप घूमने लगी। उस घड़ी में समय के साथ-साथ तारीख भी अपने आप बदलने लगी और विराट की रूह, नित्या के अतीत में चली गयी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 22 मई 1996, रात 12 :00 बजे,

जब विराट ने अपनी आँखें खोली तो देखा कि उसके सामने एक अस्पताल था, उस अस्पताल का नाम संकरा हॉस्पिटल था। विराट संकरा अस्पताल के अंदर चला गया। उसने देखा कि उसके सामने उसके पिता और नित्या के पिता बैठे हुए थे। दोनों ही बहुत टेंशन में लग रहे थे।

तभी नर्स आयी और विराट के पिता से कहने लगी, "बधाई हो, आपको लड़का हुआ है पर माँ की हालत अभी भी गंभीर है।"

विराट के पिता के चेहरे पर खुशी तो थी पर साथ में गम के कुछ आँसू भी थे। तभी बगल वाले कमरे से दूसरी नर्स आयी और नित्या के पिता से कहने लगी, "बधाई हो, आपको लड़की हुई है पर माँ अभी भी गंभीर है।"

उसी वक्त डॉक्टर आये और अपने केबिन में चले गये।

कुछ देर बाद नर्स आयी और नित्या और विराट के पिता से बोली, "आप दोनों को डॉक्टर ने अंदर बुलाया है।"

नित्या और विराट के पिता, डॉक्टर के केबिन में चले गये। उन्हीं के पीछे विराट की रूह भी चली गयी। विराट की रूह दरवाज़े के पास खड़े होकर उनके बीच की बाते सुनने लगी।

"एक बुरी खबर है… हम दोनों बच्चों की माँ को नहीं बचा पाए। एक बुरी खबर और भी है..." डॉक्टर ने कहा।

"क्या बुरी खबर है, डॉक्टर साहब?" विराट के पिता ने घबराते हुए पूछा।

"बच्चे तो ठीक है ना?" नित्या के पिता ने पूछा।

"बच्चे तो ठीक है पर मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहला ऐसा केस देखा है जिसे सुनकर आप दोनों को भी हैरानी होगी।"

"बात क्या है डॉक्टर, आप साफ-साफ कहेंगे?" विराट के पिता ने कहा।

"बात यह है कि आपको जो लड़का हुआ है, उसके सीने में जो दिल है उसके अंदर छेद है, और आपको जो लड़की हुई है, उसके सीने में दो दिल हैं, जिसमें एक दिल तो सामान्य इंसान की तरह है पर जो दूसरा दिल है, उसके अंदर छेद है।"

"ये आप क्या कह रहे हैं डॉक्टर!" नित्या के पिता ने हैरानी के साथ कहा।

"हाँ, यही सच है। मैंने अपनी ज़िन्दगी में कुछ ऐसे केसेस् देखे है जिसमें किसी के दिल में छेद रहता है और किसी के सीने में दो दिल होते हैं पर एक साथ ऐसे दो केसेस् में अपनी जिन्दगी में पहली बार देख रहा हूँ। शायद भगवान ने इन दोनों की किस्मत ऊपर से ही साथ-साथ लिखी है।"

विराट के पिता वीरेन्द्र सिंह ने अपने बेटे का नाम विराट रखा और नित्या के पिता रविशंकर जवलाया ने अपनी बेटी का नाम एंजल रख दिया। विराट के पिता, विराट को लेकर अस्पताल से अपने घर चले गये, विराट की रूह भी उन्हीं के पीछे चली गयी।

संकरा अस्पताल गाँव की मुख्य सड़क पर बना हुआ था, जो गाँव और शहर को जोड़ती थी। विराट की रूह ने जाते वक्त रास्ते में देखा कि संकरा अस्पताल से दो किलोमीटर दूर ही एक नदी थी। उसी नदी के पास में एक बरगद का पेड़ भी था जिस पर रस्सी का झूला बंधा हुआ था। ठीक वैसा ही झूला, जैसा विराट को उसके सपने में नज़र आता था।

उस नदी से कुछ ही दूरी पर विराट का गाँव था जिसका नाम हेमतपूर था। उस गाँव में विराट का एक बड़ा और सुन्दर घर था। देखकर ही लगता था कि वह किसी अमीर इंसान का घर था। विराट के पिता, विराट को लेकर घर के अंदर चले गये और जाते-जाते दरवाज़ा लगा गये। विराट की रूह भी घर के अंदर जाना चाहती थी इसलिए वह दरवाज़ा खोलने की कोशिश करने लगी पर जैसे ही उसने दरवाज़े को हाथ लगाया, विराट की रूह अपने अतीत से बाहर आ गयी।

सौम्या मंत्र पढ़ते-पढ़ते रुक गयी, उसे एहसास हो गया था कि विराट की रूह नित्या के अतीत से बाहर आ गयी थी। विराट जमीन पर लेटा हुआ था। सौम्या, विराट के सामने बैठी हुई थी। विराट ने झटके के साथ अपनी आँखें खोल दी तभी सौम्या ने अपना हाथ विराट की आँखों पर रख दिया और फिर से मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया,

"यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाहमाभ्यन्तरः शुचिः ।"

विराट की रूह वापस से नित्या के अतीत में चली गयी।

तारीख 05 जून 2007, शाम 4 बजे

विराट की रूह नदी के पास थी। उसके सामने विराट और एंजल थे। एंजल ने नीले रंग की फ्रॉक पहनी हुई थी और विराट सफेद रंग की टीशर्ट पहना हुआ था। दोनों की उम्र बारह साल थी। वे दोनों नदी के पास झूला-झूल रहे थे। एंजल झूला-झूल रही थी और विराट बार-बार उसे झूला रहा था। देखकर ही लगता था कि दोनों बचपन में ही बहुत अच्छे दोस्त बन गये थे।

विराट, एंजल को झूला-झुला ही रहा था कि तभी एंजल ने कहा, "और तेज राज... और तेज राज।" (एंजल प्यार से विराट को राज कहती थी)

"निमू... इससे तेज नहीं दे सकता।" (विराट प्यार से एंजल को निमू बोलता था)

यह ठीक पूरा वैसा ही दृश्य था, जैसा विराट को उसके सपने में दिखाई देता था। विराट बचपन में हल्का सा तोतलाता था। विराट ने अपनी तोतली आवाज में एंजल से पूछा, "निमू, तुम मुदसे शादी करोगी?"

"नहीं, मैं नहीं करूँगी।"

"क्यों, क्या मैं तुम्हें पतंद नहीं हूँ?"

"मैंने कब कहा ऐसा कि तुम मुझे पसंद नहीं हो?"

"फिर?"

"शादी करने के लिए न, लड़के का लड़की से बड़ा होना बहुत जरूरी होता है और तुम तो मेरी ही उम्र के हो, तो फिर कैसे होगी हमारी शादी?"

"किसने कहा कि हम दोनों की उम्र बराबर है, तुम्हें पता है, मैं न, तुमसे पूरा एक मिनट बड़ा हूँ। और तुम्हें पता है, एक मिनट में साठ सेकेण्ड होते हैं और साठ सेकेण्ड में हमारा दिल बहत्तर बार धड़कता है। लेकिन मेरा दिल तुम्हारे लिए बहत्तर बार से भी ज्यादा बार धड़कता है। जिस दिन यह दिल धड़कना बंद कर देगा न तो समझ लेना की तुम्हारा चाहने वाला अब इस दुनिया में नहीं रहा।"

"तुम ऐसा मत बोलो राज। जिस दिन तुम्हारा दिल धड़कना बंद हो जाएगा उस दिन मैं तुम्हें अपना दिल दे दूँगी। मेरे बाबा(एंजल के पिता) कहते हैं कि मेरे पास दो दिल है। जब मैं बड़ी हो जाऊँगी, तब एक दिल को मेरे दूसरे दिल से अलग कर दिया जाएगा।"

"अच्छा, ऐसा क्या!" विराट ने अपना मुंह फाड़ते हुए कहा।

शाम होने लगी थी। एंजल और विराट वहाँ से जाने लगे। विराट की रूह उनका पीछा करने लगी तभी एंजल को ऐसा लगा जैसे कोई उसका और विराट का पीछा कर रहा था। एंजल झट से पीछे मुड़कर देखने लगी। विराट की रूह जल्दी से अपने आप को छुपाने के लिए बरगद के पेड़ के पीछे छुपने लगी, जिस कारण हड़बड़ाहट में विराट की रूह का हाथ झूले से लग गया और विराट की रूह नित्या के अतीत से बाहर आ गयी।

सौम्या मंत्र पढ़ते हुए फिर रुक गयी।

विराट की आँखों में खुजली होने लगी थी। वह दोनों हाथों से अपनी आँखें खुजा रहा था। सौम्या ने जल्दी से मंत्र पढ़ा और विराट की आँखों में फूँक दिया। सौम्या ने वापस से दूसरा मंत्र पढ़ा और विराट की आँखों पर अपना हाथ रख दिया। विराट की रूह वापस से नित्या के अतीत में चली गयी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 27 मई 2008, दोपहर 12 बजे

विराट की रूह अपने घर के अंदर थी। उसने देखा कि उनके घर में एंजल के पिता रविशंकर जवलाया आए थे और वीरेन्द्र सिंह से बात कर रहे थे। वीरेन्द्र सिंह, रविशंकर जवलाया की पुश्तैनी जमीन खरीदना चाहते थे पर रविशंकर जवलाया ने अपनी पुश्तैनी जमीन बेचने से मना कर दिया था। यही बात वीरेन्द्र सिंह को बुरी लग गयी और उन दोनों के बीच कहा सुनी हो गयी। रविशंकर जवलाया वहाँ से चले गये। इसी बात के कारण वीरेन्द्र सिंह, रविशंकर जवलाया को अपना दुश्मन मानने लगे।

रविशंकर जवलाया के चले जाने के बाद वीरेन्द्र सिंह, विराट के कमरे में जाने लगे। उन्हीं के पीछे-पीछे विराट की रूह भी जाने लगी।

वीरेन्द्र सिंह ने विराट पर चिल्लाते हुए कहा, "कितनी बार बोला है, एंजल के साथ मत खेला करो पर तुम तो मानते ही नहीं हो। दिखा दी न आज उसके बाप ने अपनी असली जात। आज पहली बार उससे कुछ माँगा पर वह भी उसने देने से मना कर दिया। बड़ा घमण्ड है न उसे अपनी पुश्तैनी जमीन पर यह घमण्ड तो मैं तोड़कर रहूँगा। आज के बाद तुम उस लड़की के साथ कभी नहीं खेलोगे, कह देता हूँ मैं। बचपन में भले ही मैं तुम पर ध्यान नहीं दे पाया पर अब तुम्हारा कोई नाटक नहीं चलेगा। अब तुम उस छोटी जात वाली लड़की के साथ नहीं खेलोगे।"

विराट अपने पिता की बाते सुनकर रोने लगा, "इसमें एंजल का क्या दोष है पापा?"

"अब तू इतना बड़ा हो गया कि अपने बाप से जुबान लड़ाता है।"

"नहीं पापा, नहीं... ऐसी बात नहीं है पर एंजल बहुत अच्छी है।"

विराट के बहुत समझाने के बाद भी उसके पिता ने उसकी एक नहीं सुनी और उससे नाराज़ होकर वहाँ से चले गये।

विराट की रूह ने देखा कि वीरेन्द्र सिंह के लाख मना करने के बावजूद रोज विराट, एंजल के साथ खेलने चला जाता था। जितनी गहरी दोस्ती एंजल और विराट के बीच में थी, उससे कई ज्यादा गहरी दुश्मनी इन दोनों के पिता के बीच में हो गयी थी।

वीरेन्द्र सिंह, विराट से तंग आ गये थे इसलिए एक दिन उन्होंने विराट को उसके कमरे में बंद कर दिया और गुस्से में कहने लगे, "जब तक मैं वापस नहीं आता, तुम यहीं पर बंद रहोगे। बाहर जाने की सोचना भी मत वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।"

वीरेन्द्र सिंह बाहर से ताला लगाकर चले गये। उन्होंने विराट को फर्स्ट फ्लोर पर बंद कर दिया था। विराट की रूह विराट के बेड के नीचे छुपी हुई थी। विराट नाराज़ होकर बेड पर लेटकर रोने लगा था।

थोड़ी ही देर बाद उसकी खिड़की पर कोई छोटे-छोटे पत्थर फेंकने लगा। जब विराट खिड़की के पास गया तो उसने देखा कि एंजल उसकी खिड़की पर छोटे-छोटे पत्थर फेंक रही थी।

“राज... राज...।” एंजल ने विराट को आवाज लगाते हुए कहा।

“क्या है निमू?” विराट ने पूछा।

“तुम आज नदी किनारे खेलने क्यों नहीं आये?”

“कैसे आता, पापा ने मुझे ऊपर कमरे में बंद कर दिया है और बाहर से ताला लगाकर चले गये है। कहा है कि घर से एक कदम भी बाहर मत निकालना वरना मेरी टाँगे तोड़ देंगे।”

“ओह! अच्छा तो यह बात है पर मुझे तुम्हारे साथ खेलना है।”

“मैं नहीं आ सकता, पापा को पता चलेगा तो वह नाराज़ होंगे।”

“प्लीज राज, आ जाओ न मेरे लिए।”

“सॉरी निमू, पर मैं नहीं आ सकता। तुम जानती हो न पापा का गुस्सा।”

“ठीक है, तो फिर आज के बाद मुझसे कभी बात मत करना।” एंजल ने नाराज़ होते हुए कहा।

“ठीक है बाबा, आता हूँ नीचे। तुम न, कभी नहीं सुधरोगी क्योंकि तुम्हें मेरी कमज़ोरी पता है कि मैं, तुमसे बात किये बगैर नहीं रह सकता।”

विराट ने खिड़की के दोनों पर्दे नीचे उतारे और उन्हें एक साथ बाँध दिया।

विराट ने पर्दे का एक सिरा खिड़की से बाँध दिया और दूसरा सिरा नीचे फेंक दिया, जिसके सहारे वह नीचे उतर गया।

“बोलो, अब कहाँ जाना है?” विराट ने नीचे उतरते ही पूछा।

“वहीं, जहाँ हमेशा जाते हैं।” एंजल ने अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए कहा।

विराट और एंजल के पीछे-पीछे ही विराट की रूह भी जाने लगी गयी।

विराट और एंजल नदी के पास थे। एंजल झूला झूल रही थी और विराट, उसे झूला रहा था।

“एक बात पूछूँ निमू?” विराट ने कहा।

“हाँ, पूछो न राज।”

“क्या तुम मुझसे प्यार करती हो?”

“नहीं।”

“क्या तुम मेरे साथ रहना चाहती हो?”

“नहीं।”

“यदि मैं मर गया तो क्या तुम रोओगी?”

“नहीं।”

एंजल के जवाब सुनकर विराट उदास होकर वहाँ से जाने लगा।

जब एंजल ने देखा कि विराट उससे नाराज़ होकर वहाँ से जाने लगा हैं तो वह उसका हाथ पकड़कर कहने लगी, “मैं तुमसे प्यार नहीं... बल्कि तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। मैं तुम्हारे साथ रहना नहीं बल्कि तुम्हारे साथ जीना चाहती हूँ। यदि तुम मर गये तो मैं रोऊँगी नहीं बल्कि मैं भी मर जाऊँगी।”

इतना कहकर एंजल ने विराट को अपनी बाँहों में भर लिया।

* * *

शाम के छ: बज रहे थे।

“अब मुझे चलना चाहिए, पापा के आने का वक्त हो गया है। यदि उन्होंने मुझे घर पर नहीं देखा तो बहुत गुस्सा करेंगे।” विराट ने कहा।

“पर मेरा अभी कुछ देर और यहाँ रुकने का मन है। देखो न, मौसम कितना अच्छा हो रहा हैं।”

“नहीं निमू, मुझे जाना ही होगा... एक काम करते हैं, यदि तुम्हारा यहाँ रुकने का मन है कुछ देर तो तुम यहाँ रुक जाओ, मैं चले जाता हूँ। हम कल फिर यहीं पर मिलेंगे।”

“ठीक है।”

विराट वहाँ से चला गया। विराट को अभी गये हुए दो-तीन मिनट ही हुए थे कि एंजल को नदी के पास दो-तीन छोटे-छोटे चमकीले पत्थर चमकते हुए दिखाई दिए। एंजल ने उन चमकीले पत्थर को उठा लिया।

"मैं यह पत्थर राज को दूंगी, वह इन्हें देखकर बहुत खुश हो जाएगा, वह ज्यादा दूर नहीं गया होगा अभी।" एंजल ने खुद से कहा।

एंजल वहाँ से भागते हुए विराट के पास जाने लगी। विराट की रूह भी एंजल के पीछे-पीछे जाने लगी।

कुछ ही देर भागने के बाद एंजल को विराट दिख गया। विराट सड़क के दूसरे किनारे पर था।

"राज... राज...।" एंजल ने विराट को आवाज लगाते हुए कहा।

विराट, एंजल की आवाज सुनकर रुक गया और एंजल को देखकर कहने लगा, "निमू, तुम वहीं पर रुको, मैं तुम्हारे पास आता हूँ।"

"नहीं राज, तुम मत आओ, मैं तुम्हारे पास आती हूँ।"

पास में ही जमीन की खुदाई चल रही थी। जिस कारण विराट, एंजल की आवाज नहीं सुन पाया और सड़क पार करने लगा।

विराट सड़क पार कर ही रहा था तभी सामने से एक तेज रफ्तार में ट्रक आया जिसके ब्रेक फेल हो गये थे। वह ट्रक वाला बार-बार हॉर्न बजाए जा रहा था पर खुदाई चलने के कारण विराट को उस हॉर्न की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी जिस कारण विराट का उस ट्रक से एक्सीडेंट हो गया।

यह डरावना मंजर देखकर एंजल की साँसे थम गयी थी। एंजल भागते-भागते विराट के पास जाने लगी। एंजल के पीछे ही विराट की रूह भी जाने लगी।

विराट के सिर से खून बहे जा रहा था। विराट वहीं पड़ा हुआ था। एंजल जमीन पर ही उसके पास बैठकर रोने लगी। विराट की रूह एंजल की मदद करना चाहती थी पर तभी उसे याद आया यदि उसने किसी भी चीज को हाथ लगाया तो वह वापस से अपने वर्तमान में चला जाएगा। वहाँ पर बहुत सारे लोग जमा हो गये जो एंजल की मदद करने लगे। उन्होंने विराट को संकरा अस्पताल तक पहुँचा दिया था।

विराट को उसी अस्पताल में लाया गया था, जहाँ पर उसका जन्म हुआ था। विराट को आई.सी.यू. में रखा गया था। वहाँ पर जैसे ही एंजल के पिता आए, एंजल उनसे लिपटकर रोने लगी।

"बाबा, सब मेरी गलती है। मैंने ही राज को खेलने के लिए बुलाया था, वह बेचारा तो मना कर रहा था। काश मैं राज को यह चमकीले पत्थर देने नहीं गयी होती तो आज राज

सही सलामत होता। अगर राज को कुछ भी हुआ न बाबा तो मैं अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाऊँगी।" एंजल ने रोते हुए कहा।

"तुम रोओ मत बेटा, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है, जो नियति में लिखा होता है वह तो होकर ही रहता है, उसे कौन रोक सकता है।"

एंजल और उसके बाबा बात ही कर रहे थे तभी वहाँ पर वीरेन्द्र सिंह आ गये।

"यह सब तुम्हारी ही वजह से हुआ है। जब से तुम मेरे बेटे की जिन्दगी में आई हो, उसके साथ सब बुरा ही हो रहा है। कितनी बार समझाया मैंने उसे कि तुम्हारा साथ छोड़ दे पर वह मानता ही नहीं है। पता नहीं क्या काला जादू किया है तुमने मेरे बेटे पर।" वीरेन्द्र सिंह ने गुस्से से एंजल से कहा।

वीरेन्द्र सिंह की कड़वी बाते सुनकर एंजल और रोने लगी।

तभी आई.सी.यू. रूम से डॉक्टर निकल गये।

"अब कैसी है मेरे बेटे की हालत?" वीरेन्द्र सिंह ने डॉक्टर से पूछा।

"देखिए, पेशेंट की हालत अभी बहुत गंभीर है, उसके सीने में जो दिल है उसके अंदर का छेद बड़ा हो गया है, जिस कारण उसका दिल कभी भी काम करना बंद कर सकता है। यदि हमने जल्द ही उसका दिल नहीं बदला तो उसकी जान चली जाएगी।"

"तो फिर बदल दीजिए न उसका दिल डॉक्टर, पैसो की फिक्र मत कीजिए। जितने भी पैसे लगेंगे मैं देने के लिए तैयार हूँ, बस मेरे बेटे को ठीक कर दीजिए।" वीरेन्द्र सिंह ने कहा।

"देखिए, पैसे से ही सब कुछ नहीं होता, हमें पेशेंट का दिल बदलना... "

डॉक्टर अपनी बात पूरी करते, उससे पहले ही वीरेन्द्र सिंह ने बात को काटते हुए कहा, "आप मेरा दिल ले लीजिए, मैं मर जाऊँ पर मेरे बेटे को कुछ नहीं होना चाहिए।"

"ऐसा नहीं होता है, सर। हमें कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए जिसका खून पेशेंट के खून से मैच करे और टिसू की मैचिंग भी होनी चाहिए। जल्द ही कोई दिल डोनेट करने वाला ढूँढ़ना पड़ेगा और इतनी जल्दी दिल डोनेट करने वाला ढूँढना मुश्किल है।"

"आप उसे मेरा दिल दे दीजिए डॉक्टर सर, मेरे सीने में दो दिल है और हम दोनों का ब्लड ग्रुप भी एक ही है।" एंजल ने कहा।

"ये तुम क्या कह रही हो एंजल?" एंजल के पिता ने कहा।

“प्लीज बाबा, मुझे मत रोकिए, राज की इस हालात की जिम्मेदार मैं हूँ, तो मैं ही उसे ठीक करूँगी। मैंने उससे कहा था कि मैं कभी उसकी दिल की धड़कने थमने नहीं दूँगी, अब वह वादा पूरा करने का वक्त आ गया है, चाहे उसके लिए अब मुझे अपनी जान खतरे में क्यों न डालनी पड़े।”

डॉक्टर, एंजल का चैकअप करने लगे। विराट और एंजल दोनों के टिसू मैच हो गये थे। डॉक्टर ने एंजल के शरीर में जो दिल बिल्कुल ठीक था, वह दिल विराट के शरीर में लगा दिया और जिस दिल में छेद था वह दिल एंजल के शरीर में ही रहने दिया।

दो दिन बाद विराट को होश आ गया। विराट ठीक तो हो गया था पर दिल बदलते वक्त विराट के हृदय का बायाँ वेंट्रिकल कमजोर हो गया था जिस कारण उसे डिसोसिएटिव डिसओर्डर हो गया था। जिस वजह से वह सब कुछ भूल गया था। उसे सिर्फ अपने पिता याद थे। वह भूल गया था कि एंजल नाम की लड़की उसकी जिन्दगी में कभी आई थी।

वीरेन्द्र सिंह ने गाँव छोड़ने का फैसला कर लिया था। वह विराट के ऊपर एंजल की परछाई तक नहीं पड़ने देना चाहते थे इसलिए वह अपना घर जमीन बेचकर हमेशा-हमेशा के लिए हेमतपूर गाँव छोड़कर चले गये।

तारीख 08 अगस्त 2017, रात 02:00 बजे

"यह तुम्हें क्या हो रहा है विराट?" सौम्या ने विराट को छुते हुए कहा।

विराट की रूह वापस से उसके शरीर में आ चुकी थी। विराट धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलने लगा। विराट ने जैसे ही अपनी आँखें खोली उसकी आँखों में जलन होने लगी। विराट दोनों हाथों से अपनी आँखें खुजाने लगा।

"मुझे सब कुछ धुँधला-धुँधला क्यों नज़र आ रहा है?" विराट ने अपनी आँखें खोलते हुए सौम्या से कहा।

"मैंने कहा था न, उस काली दुनिया की रूहें तुम्हारी रूह को कुछ न कुछ नुकसान जरूर पहुँचाएगी, यह उसी का असर है कि तुम्हें सब धुँधला-धुँधला नज़र आ रहा है।"

"अब मुझे पता चला, क्यों मुझे लगता था कि नित्या से मेरा कोई गहरा रिश्ता है। क्यों हर बार वह मुझे ही मिलती थी? अगर वह न होती तो मैं तो कब का मर चुका होता। मेरे सीने में जो साँसे चल रही है, वह नित्या के कारण चल रही है। नित्या कोई बेगानी नहीं है, मेरी अपनी निमू है, मेरी निमू, मेरे बचपन का प्यार।" विराट ने रोते हुए कहा।

"इसका मतलब सपने में जिन बच्चों को तुम देखते थे, वे कोई और नहीं बल्कि तुम और नित्या थे।" सौम्या ने हैरानी के साथ कहा।

"हाँ सौम्या जी, वह मैं और नित्या ही थे, नित्या का असली नाम एंजल है।"

"क्या तुम्हें पता चला कि नित्या के अंदर किसकी रूह है?"

"नहीं, मुझे नहीं पता चला। क्या आप मुझे दोबारा नित्या के अतीत में भेज सकती है?"

"नहीं विराट, मैं नहीं भेज सकती। मेरी शक्तियाँ कमजोर पड़ गयी है इसी वजह से तुम बिना किसी चीज को हाथ लगाए अतीत से वर्तमान में आ गये हो। पिछली रात पूर्णिमा थी और पूर्णिमा कि रात बेगानी रूहें कमजोर होती है इसलिए उस बेगानी रूह ने नित्या के अतीत में जाने के लिए हमारे रास्ते में कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर पाई, पर अब ऐसा नहीं होगा। कुछ दिनों बाद ही अमावस्या है यदि उससे पहले हमने यह पता नहीं लगाया कि नित्या के अंदर किसकी रूह है तो वह बेगानी रूह अमावस्या की रात हमेशा-हमेशा के लिए नित्या को अपनी दुनिया में ले जा लेगी।"

* * *

विराट और सौम्या पिछले सात दिनों से उस बेगानी रूह के बारे में पता करने की कोशिश कर रहे थे पर उनकी हर कोशिश नाकामयाब हो रही थी। उन्हें कुछ पता नहीं चल

पा रहा था कि नित्या के अंदर किसकी रूह थी।

इसी बीच विराट को चश्मा भी लग गया था क्योंकि बिना चश्मे के विराट को अब सब धुँधला दिखाई देता था।

बेगानी रूह के बारे में पता करते वक्त जंगल में उन्हें पीपल के पेड़ पर पण्डित वेदव्यास की लाश उल्टी लटकी हुई मिली थी। पण्डित वेदव्यास अब इस दुनिया में नहीं थे।

जब सौम्या ने पण्डित वेदव्यास की लाश को हाथ लगाया तो उसे अपनी शक्तियों से पता चला कि उस दिन जब पण्डित वेदव्यास जी करण को बंगले में नित्या के साथ अकेला छोड़कर आए थे, उस दिन से पण्डित वेदव्यास जंगल में किसी चीज का पता कर रहे थे। जिस दिन नित्या ने करण को मार दिया था और वह खिड़की से भागकर बाहर चली गयी थी, उसी दिन उसने पण्डित वेदव्यास को मार दिया था।

* * *

उस वक्त रात के करीब तीन बज रहे थे और पण्डित वेदव्यास अभी भी जंगल में ही थे। आसमान में कोहरा छाया हुआ था। जंगली जानवरों के चिल्लाने की आवाजें सुनाई दे रही थी। पण्डित वेदव्यास जंगल में भटक ही रहे थे कि चलते-चलते वह पीपल के पेड़ के पास आकर रुक गये और सोचने लगे कि एंजल के पिता, सौम्या का परिवार, डॉक्टर साहब और उस आदमी की लाश, सब पीपल के पेड़ के पास ही मिली थी। हो न हो, कुछ तो संबंध है इस पीपल के पेड़ का उस बेगानी रूह के साथ।

पण्डित वेदव्यास ने अपनी पोटली में से एक नींबू निकाला और उसमें कुमकुम लगाकर पीपल के पेड़ के सामने रख दिया। पण्डित वेदव्यास ने मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया। जैसे ही पण्डित वेदव्यास का मंत्र पढ़कर खत्म हुआ, पीपल के पेड़ के सामने रखा, कुमकुम लगा नींबू अपने आप पीले रंग से काला पड़ने लगा। उसी वक्त पण्डित वेदव्यास ने अपनी पोटली में से दूसरा नींबू निकाला और उसके ऊपर भी कुमकुम लगा दिया। उस नींबू में वह लाल रंग का धागा बांधते हुए मंत्र पढ़ने लगे। पीपल के पेड़ का उस नींबू से उतारा उतारने लगे। उतारा उतारते ही पण्डित वेदव्यास ने भगवान शिव का नाम लेकर उस उतारे को पीपल के पेड़ के ऊपर फेंक दिया। वह नींबू ऊपर जाकर पीपल के पेड़ में लटक गया।

“मैंने जो सोचा था वही हुआ, अब तुझे मुझसे कोई नहीं बचा पाएगा। देखता हूँ कि तू उस मासूम लड़की का शरीर कैसे नहीं छोड़ता।” पण्डित वेदव्यास ने पीपल के पेड़ की ओर देखते हुए कहा।

पण्डित वेदव्यास ने अपनी पोटली में से ग्यारह सफेद गुलाब के फूल निकाले और जमीन पर बैठ गये। उन्होंने चावल के दानों से जमीन पर एक गोला बनाया और उसके

चारों तरफ सफेद गुलाब के फूल एक-एक करके खड़े करते हुए लगाने लगे। वह अपनी आँखें बंद करके ध्यान में बैठ गये। उन्होंने धीरे-धीरे मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया। मंत्रों की आवाज आसमान में गूँजने लगी थी।

अगले ही पल, अचानक से नित्या, पंडित वेदव्यास के सामने आकर बैठ गयी और उन्हें बड़ी-बड़ी आँखें करके घूरने लगी।

नित्या के अंदर अभी भी वह बेगानी रूह घुसी हुई थी। उसकी आँखों के नीचे काले गहरे निशान पड़ गये थे। उसके बाल बिखरे हुए और होंठ सूखे हुए थे। उसके दांत सड़ गये थे।

“चले जा यहाँ से, वरना तू भी मरेगा। चल, भाग जा यहाँ से।” नित्या ने आदमी की आवाज में कहा।

पण्डित वेदव्यास अभी भी मंत्र पढ़े जा रहे थे।

“तो तू नहीं मानेगा न पण्डित... हूम्म...हूम्म...हूम्म।” इतना कहकर नित्या जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

पण्डित वेदव्यास, नित्या की बातों का कोई जवाब नहीं दे रहे थे। पण्डित वेदव्यास मंत्र पढ़ ही रहे थे तभी उनके सामने रखे ग्यारह सफेद गुलाब के फूल अपने आप काले पड़ने लगे।

जैसे ही सफेद गुलाब के फूल काले पड़ने लगे नित्या जोर-जोर से चीखने लगी।

“रुक जा पण्डित, ऐसा मत कर वरना इसका अंजाम अच्छा नहीं होगा, रुक जा पंडित।” नित्या ने कहा।

पण्डित वेदव्यास नहीं रुके, वह लगातार मंत्र पढ़े जा रहे थे।

कुछ देर बाद नित्या बेहोश हो गयी। ग्यारह सफेद गुलाब पूरी तरह काले हो गये थे।

“अब तू उस मासूम का कुछ नहीं कर पाएगा। मैंने तेरी रूह को इन सफेद गुलाब के अंदर कैद कर दिया है और बहुत जल्द मैं तेरी रूह को भी तेरी दुनिया में भेज दूँगा।”

इतना कहकर पण्डित वेदव्यास अपनी जगह से उठ गये। उन्होंने नित्या को अपने कंधों पर उठाया और उसे लेकर वहाँ से जाने लगे।

पण्डित वेदव्यास, नित्या को जंगल के रास्ते से ले जा ही रहे थे तभी उन्हें पीछे से विराट की आवाज सुनाई देने लगी, “पण्डित वेदव्यास जी, रुक जाइए। मेरी बात तो सुनिये, मुझे आपकी अब कोई जरूरत नहीं है। आप चले जाइए यहाँ से।”

पण्डित वेदव्यास समझ गये थे कि यह जरूर बेगानी रूह की कोई चाल थी और वह नहीं रुके, न ही उन्होंने पीछे पलटकर देखा। वह आगे बढ़ते जा रहे थे।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ ही रहे थे कि उन्हें सौम्या की आवाज सुनाई दी, "पण्डित वेदव्यास जी, मेरे परिवार को इसने नहीं मारा है, इसकी रूह को रिहा कर दीजिए, रुकिये पण्डित वेदव्यास जी।"

पण्डित वेदव्यास ने सौम्या की बात पर भी कोई ध्यान नहीं दिया और आगे बढ़ते गये। वह किसी की भी बात पर ध्यान नहीं दे रहे थे। उन्हें कई बार विराट और सौम्या की आवाज सुनाई दे रही थी, और वह उन्हें रुकने के लिए कह रहे थे पर पण्डित वेदव्यास नहीं रुक रहे थे।

पण्डित वेदव्यास आगे बढ़ ही रहे थे तभी उन्हें अपने बेटे वेद की आवाज सुनाई दी, "पिता जी सुनिए, देखिए न यह शैतान मुझे मार रहा है, प्लीज मुझे बचा लीजिए वरना यह शैतान मुझे मार देगा।"

अपने बेटे की आवाज सुनकर पण्डित वेदव्यास भावुक होकर रुक गये और पीछे मुड़कर देखने लगे। जैसे ही पण्डित वेदव्यास पीछे मुड़े उन्होंने जो उतारा पीपल के पेड़ के ऊपर फेंका था वह नीचे आकर गिर गया। वह ग्यारह सफेद गुलाब के फूल जो काले हो गये थे फिर से सफेद हो गये।

नित्या अभी भी पण्डित वेदव्यास के कंधों पर थी। वह बेहोश थी तभी उसने धीरे से अपनी आँखें खोली और पण्डित वेदव्यास के कान में कहने लगी, "पण्डित, तू कैसा पुजारी है रे। उतारा उतार कर यह भूल गया कि उतारा उतारने के बाद चाहे कुछ भी हो जाए पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए वरना उतारा काम नहीं करता, अब तू किसी को नहीं बचा पाएगा।"

इतना कहकर नित्या ने अपने हाथों से पण्डित वेदव्यास की गर्दन मोड़कर तोड़ दी। पण्डित वेदव्यास ने जैसे ही अपना दम तोड़ा नित्या जोर-जोर से पागलों की तरह हँसने लगी।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 18 अगस्त 2017, रात 12:00 बजे

आज बारहवां दिन था पर अभी तक सौम्या और विराट को उस बेगानी रूह के बारे में कुछ पता नहीं चल पाया था।

"क्या तुम मुझे नित्या के कमरे तक ले जा सकते हो?" सौम्या ने कहा।

"हाँ, मैं आपको अभी ले चलता हूँ।"

विराट ने सौम्या का हाथ पकड़ा और सीढ़ियों से सौम्या को नित्या के कमरे तक ले जाने लगा। जब वह दोनों नित्या के कमरे में पहुँचे तो वहाँ पर बहुत अंधेरा था। इतना अंधेरा कि विराट को उसके हाथ-पैर भी दिखाई नहीं दे रहे थे। विराट कमरे की लाइट चालू करने लगा पर लाइट चालू नहीं हो रही थी इसलिए वह रसोई घर में लालटेन लेने चला गया। जब विराट लालटेन लेकर वापस आया तो उसने देखा कि सौम्या अंधेरे कमरे में अकेले चल रही थी।

"अरे! ये क्या, आप अंधेरे में क्यों चल रही है?" विराट ने सौम्या की तरफ बढ़ते हुए कहा।

"विराट, शायद तुम भूल गये हो मेरी जिन्दगी में तो बहुत पहले ही अंधेरा हो गया है, मेरे लिए क्या अंधेरा क्या उजाला।"

सौम्या कमरे में आगे बढ़ ही रही थी तभी उसे कमरे में एक अजीब सी बदबूदार गंध आने लगी। सौम्या अपनी नाक से उस गंध को सूँघने लगी।

"विराट, तुम्हें कोई बदबू आ रही हैं?"

"नहीं, मुझे तो कोई बदबू नहीं आ रही।"

सौम्या उस बदबू को सूँघते-सूँघते नित्या के बेड के पास पहुँच गयी थी। जब सौम्या उस बेड के नीचे झुकी तो उसे और तेज बदबू आने लगी। विराट को समझ नहीं आ रहा था कि सौम्या को किस चीज की बदबू आ रही थी।

"नीचे देखो विराट, कुछ है क्या?" सौम्या ने विराट से कहा।

जब विराट ने बेड के नीचे देखा तो उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

"नहीं, यहाँ पर तो कुछ नहीं है।" विराट ने बेड के नीचे देखते हुए कहा।

सौम्या ने अपनी आँखें बंद की और अपनी शक्तियों से बेड के नीचे देखने की कोशिश करने लगी। कुछ देर बाद सौम्या ने अपनी आँखें खोली और कहने लगी, "अच्छे से देखो विराट, नीचे एक दीया होगा।"

विराट दोबारा से बेड के नीचे देखने लगा। विराट ने लालटेन बेड के नीचे आगे खिसकाया और जब गौर से देखा तो लालटेन के पीले प्रकाश में उसे एक दीया दिखाई दिया। वह बेड के अंदर घुसा और उसने वह दीया निकालकर सौम्या को दे दिया।

उस दीये के ऊपर मकड़ी के जाल बन गये थे, उसके अंदर का जो तेल था वह काला और जमा हुआ था। उस दीये का नीचे का तल भी काला हो चुका था। अब विराट को भी एक अजीब सी बदबू आने लगी थी। यह बदबू ऐसी थी जैसे किसी मरे हुए इंसान के शरीर में से आती है।

“मेरा शक सही निकला।” सौम्या ने कहा।

“कैसा शक सौम्या जी?” विराट ने हैरानी के साथ पूछा।

“विराट, तुम यह दीया देख रहे हो। तुम्हें पता है, यह दीया काला क्यों पड़ गया और इसे इस बेड के नीचे कोने में क्यों रखा गया था?”

“क्यों रखा गया था सौम्या जी?”

“ऐसा तभी किया जाता है विराट, जब हमें यह पता करना हो कि किसी के अंदर प्रेत आत्मा का वास है या नहीं।”

“मतलब, कोई था जो यह पता करना चाहता था कि नित्या के अंदर आत्मा का वास है या नहीं।”

“हाँ विराट, अब हमें वही पता करना है कि वह कौन था जो यह पता करना चाहता था।”

सौम्या धीरे-धीरे कमरे के अंदर और आगे बढ़ने लगी। सौम्या, नित्या के कमरे में चल ही रही थी कि उसके पैरो के नीचे कोई छोटी सी ठोस चीज आ गयी। जब सौम्या ने उसे उठाया तो विराट ने देखा कि वह छोटी सी ठोस चीज एक रुद्राक्ष था। उस रुद्राक्ष के दोनों ओर छेद थे। उस रुद्राक्ष को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी माला में से टूटकर गिरा था।

“हो सकता है यह रुद्राक्ष पण्डित वेदव्यास जी के गले में से टूटकर गिरा हो।” विराट ने रुद्राक्ष को देखते हुए कहा।

“नहीं विराट, यह उनका नहीं है। यह रुद्राक्ष करीब डेढ़ साल पहले किसी की माला में से टूटा था।”

“क्या! यह आप क्या कह रही हो।”

“हाँ विराट, क्योंकि यह कोई ऐसा वैसा रुद्राक्ष नहीं है, यह शेषनाग रुद्राक्ष है। यह बहुत ही दुर्लभ होता है। शेषनाग रुद्राक्ष की माला उनके गले में डाली जाती है जिनके ऊपर किसी अघोरिय प्रवृत्ति की रूह का वास हो। इन मालाओं को छूते ही पता चल जाता है कि यह माला कब बनी थी और कब टूटी थी।”

विराट, सौम्या की बात सुनकर अचंभित हो गया था।

“हम उस आत्मा के धीरे-धीरे बहुत करीब पहुँच रहे हैं विराट। बस एक बार पता चल जाए कि वह बेगानी रूह किसकी है और वह नित्या से क्या चाहती है फिर हम नित्या को... ” सौम्या बोलते-बोलते रुक गयी।

“क्या हुआ, आप बोलते-बोलते रुक क्यों गयी सौम्या जी?”

“तुमने आवाज सुनी?” सौम्या ने धीरे से कहा।

“कैसी आवाज?”

“गौर से सुनो, किसी रूह के हँसने की आवाज आ रही है विराट।”

सौम्या को किसी रूह के हँसने की आवाज सुनाई दे रही थी पर वह आवाज विराट नहीं सुन पा रहा था।

“चले जाओ यहाँ से, वरना सब मरोगे... तुम लोग कभी मेरे बारे में पता नहीं लगा पाओगे... एंजल सिर्फ मेरी है।” इतना कहकर वह रूह जोर-जोर से हँसने लग गयी।

अब उस रूह की आवाज विराट को भी सुनाई दे रही थी।

“कौन हो तुम और उस मासूम से क्या चाहते हो?” सौम्या ने उस रूह से पूछा।

कोई जवाब नहीं आया, बस एक डरावनी हँसी थी जो पूरे बंगले में गूंज रही थी। कुछ ही देर बाद वह हँसी आनी भी बंद हो गयी।

“अब सिर्फ एक ही तरीका है, उस बेगानी रूह के बारे में पता करने का।” सौम्या ने कहा।

“और वह क्या है सौम्या जी?” विराट ने बौखलाहट के साथ पूछा।

“तुम्हें पता ही होगा कि आत्माओं का वास पीपल के पेड़ के अंदर होता है। आत्माएँ दो प्रकार की होती है, एक अच्छी और एक बुरी। जो आत्माएँ अच्छी होती है वह पीपल के पेड़ के अंदर अपना वास बना लेती है और जो बुरी होती है वह भटकती रहती हैं। तुम्हें ग्यारह पीपल के पत्ते लाने होगे वह भी कोमल, उन ग्यारह पत्तों में ग्यारह अच्छी

आत्माओं का वास होगा। वही हमारी मदद करेगी और हमें बताएगी कि यह बेगानी रूह किसकी है।”

सौम्या ने विराट के हाथ में

“महाबल पराक्रमाय भूत प्रेत पिशाच

शाकनी डाकिनी यक्षणी पूताना मारीयक्ष

राक्ष्क भैरव बेताल ग्रह राक्षसादिकम

क्षणेन हन हन भंजय मायर शिक्षय”

मंत्र पढ़ते हुए कलावा (लाल रंग का धागा) से सात गाठ बाँध दी, “याद रहे, जब तक यह कलावे की सात गाठ में से एक भी गाठ तुम्हारे हाथ में बंधी है, वह बेगानी रूह तुम्हें कुछ नहीं कर सकती। अभी वह कमजोर है पर दो दिन बाद, तीसरी रात को अमावस्या है, उसके बाद यह कलावा भी तुम्हारी मदद नहीं कर सकता। वह बहुत ताकतवर हो जाएगा। एक और बात याद रखना, यदि इस कलावे से सात गाठ तुम किसी रूह पर बाँधो तो यह सात गाँठे उस रूह को कुछ देर तक रोक सकती है जब तक सात गाँठे खुल न जाए। इन सात गाठ में सात देवताओं शिव, विष्णु, ब्रह्मः काली, हनुमान, नरसिम्हा और कृष्ण भगवान की शक्तियाँ होती है, यह तुम्हारी मदद जरूर करेंगे।”

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 18 अगस्त 2017, रात 02:00 बजे

जंगल में बहुत अंधेरा था इसलिए विराट ने अपने साथ लालटेन रख लिया था। विराट को बार-बार लग रहा था कि कोई उसका पीछा कर रहा था पर जब भी वह पीछे मुड़कर देखता तो उसे कोई दिखाई नहीं देता था।

वह हर जगह पीपल का पेड़ ढूँढ़ रहा था पर उसे वह कहीं नहीं मिल रहा था। तभी उसको याद आया कि नित्या के पिता और डॉक्टर साहब की लाश पीपल के पेड़ के पास ही मिली थी। विराट भागते-भागते उस पीपल के पेड़ के पास पहुँच गया।

वहाँ पर जाकर उसने देखा कि जो कोमल पीपल के पत्ते उसे चाहिए थे वह सबसे ऊँची वाली झाड़ी पर लग रहे थे। उसने लालटेन जमीन पर ही रख दिया और पीपल के पेड़ के ऊपर चढ़ने लगा।

लालटेन के उजाले में उसे बस पीपल का पेड़ ही दिखाई दे रहा था और दूर-दूर तक अंधेरे ने अपना राज फैला रखा था। चारों तरफ अंधेरा ही नज़र आ रहा था। ठंडी-ठंडी हवाएँ चल रही थी।

विराट सबसे ऊँचाई वाली झाड़ी पर था। उसने जैसे ही पहला पत्ता तोड़ा उसे किसी आदमी के जोर-जोर से हँसने की आवाज सुनाई देने लगी। उसने नीचे देखा पर उसे कोई दिखाई नहीं दिया। उसने जल्दी-जल्दी दस कोमल पत्ते तोड़ लिये।

अब बस एक पत्ता बचा हुआ था और वह पत्ता विराट के हाथ से बहुत दूर था। विराट उस पत्ते तक नहीं पहुँच पा रहा था। बड़ी मुश्किल से विराट उस पत्ते तक पहुँच पाया और उसने जैसे ही वह पत्ता तोड़ा, उसे फिर किसी आदमी के हँसने की आवाज सुनाई देने लगी।

विराट धीरे-धीरे पेड़ से नीचे उतरने लगा तभी उसे नित्या के रोने की आवाज सुनाई देने लगी, जिसे सुनकर वह भावुक हो गया और जहाँ पर था वहीं पर रुककर नित्या को ढूँढ़ने लगा।

विराट के सामने ही पीपल के पेड़ की एक झाड़ी थी जो हील रही थी। नित्या के रोने की आवाज उसी झाड़ी के पीछे से आ रही थी। विराट धीरे-धीरे उस झाड़ी को हटाने लगा पर उसे वहाँ पर नित्या नज़र नहीं आयी। उसने डरते हुए अपने दायें-बायें, दोनों तरफ देखा पर उसे कुछ नहीं दिखा। फिर जब उसने वापस सामने देखने तो अचानक से उसके सामने नित्या आ गयी और जोर-जोर से हँसने लगी, “हा हा हा हा...!”

नित्या का चेहरा बहुत भयानक लग रहा था। उसके चेहरे पर खरोंच के निशान थे। उसकी आँखों की पुतली गायब थी और उसके नीचे काले गहरे निशान थे। उसके बाल बिखरे और होंठ काले पड़ गये थे।

अचानक से नित्या को अपने सामने देखकर विराट डर गया और उसका संतुलन बिगड़ने लगा। अगले ही पल वह जमीन पर गिर गया, जिस कारण उसके पैर में मोच आ गयी।

विराट लड़खड़ाते-लड़खड़ाते खड़ा हुआ और वहाँ से भागने लगा। पैर में मोच आ जाने की वजह से वह ज्यादा तेज नहीं भाग पा रहा था। विराट भाग ही रहा था तभी अचानक उसके सामने नित्या आ गयी और आदमी की आवाज में कहने लगी, "कहाँ जा रहा है... अपनी नित्या को नहीं बचायेगा विराट। "

अगले ही पल नित्या ने एक हाथ से विराट का गला पकड़ा और दूसरे हाथ से उसके हाथ में से पीपल की पत्तियाँ छीनने लगी। पत्ते छिनकर नित्या ने विराट को दूर हवा में फेंक दिया।

विराट एक पेड़ से जाकर टकरा गया। उसके हाथ-पैरो में से खून निकलने लगा था। नित्या और जोर-जोर से हँसने लगी। उसकी आवाज आसमान में गूँजने लगी थी। उसने पीपल के पत्तों को विराट की आँखों के सामने हवा में उड़ा दिया।

"कौन हो तुम और क्या चाहते हो मेरी नित्या से?" विराट ने गुस्से में कहा।

"नित्या नहीं है यह... एंजल है यह...! मेरी एंजल!"

"ये क्या बकवास कर रहे हो तुम, यह एंजल नहीं मेरी नित्या है। प्लीज, छोड़ दो मेरी नित्या को, आखिर क्या बिगाड़ा है मेरी नित्या ने तुम्हारा?"

"बिगाड़ा नित्या ने नहीं है, तुमने है विराट, हा हा हा... "

इतना कहकर नित्या फिर जोर-जोर से हँसने लगी। विराट को नित्या की हँसने की आवाज जानी पहचानी लग रही थी। विराट अपनी जगह पर खड़ा हो गया और उसने नित्या की तरफ देखते हुए हैरानी के साथ कहा, "डॉक्टर साहब, आप?"

नित्या की हँसी डॉक्टर साहब की हँसी की तरह थी।

"डॉक्टर साहब, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?"

विराट ने इतना ही कहा था तभी नित्या एकदम से विराट के पास आ गयी और उसका गला कसकर दबाने लगी। वह दर्द के मारे तड़पने लगा था। तभी उसको याद आया

कि उसके हाथ में सौम्या ने कलावा बाँधा था, उसकी इस बेगानी रूह से रक्षा करने के लिए।

विराट ने अपने हाथ से कलावे की तीन गठान खोली और नित्या के दूसरे हाथ के साथ तीन गठान बाँध दी। नित्या जोर-जोर से चीखने लगी, जैसे कोई उसे मार रहा था। विराट ने अपने एक हाथ से नित्या के दूसरे हाथ को बाँध दिया था। नित्या चीखते-चीखते ही बेहोश हो गयी थी। विराट ने नित्या को अपने कंधों पर उठाया और पीपल के पत्ते ढूँढने लगा।

* * *

विराट जब नित्या को लेकर बंगले में पहुँचा तो उसने देखा कि सौम्या नीचे जमीन पर बैठी हुई थी, उसने सफेद रंग का सूट पहना हुआ था। उसके माथे पर भभूत लगी हुई थी। उसने बंगले के अंदर बीचों-बीच चावल के दानों से एक गोल चक्र बनाया था और उस चक्र के ऊपर कुल ग्यारह मोमबत्तियाँ जल रही थी। सौम्या को उसकी दैवीय शक्ति से पता चल गया था कि विराट के साथ क्या-क्या हुआ था।

"विराट, पीपल के पत्ते दो।" सौम्या ने कहा।

विराट ने अपनी पेंट की जेब में से पीपल के पत्ते निकालकर सौम्या को दे दिये। सौम्या ने उन ग्यारह पीपल के पत्तों पर चंदन से स्वस्तिक का चिन्ह बना दिया। विराट, नित्या को लेकर सौम्या के सामने बैठ गया।

सौम्या ने मंत्र पढ़ते हुए कहा,

"ऊँ स्वस्ति न इन्द्रो वद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूशा विव्श्रवेदाः

स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बहस्पतिर्दधातू शान्तिः"

सौम्या जैसे-जैसे मंत्र पढ़ते जा रही थी, एक-एक पत्ता अपने आप हवा में उड़कर चावल से बने गोल चक्र पर मोमबत्ती के ऊपर जाते जा रहा था।

विराट यह सब देखकर बहुत हैरान हो गया था, उसे तो अभी भी अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था कि पीपल के पत्ते अपने आप हवा में उड़ रहे थे।

दस पीपल के पत्ते हवा में उड़ने लग गये थे। अब बस एक आखिरी पत्ता बचा हुआ था फिर ग्यारह आत्माएँ प्रकट होती और वह बता देती कि नित्या के अंदर किसकी रूह थी।

सौम्या ने मंत्र पढ़ा पर आखिरी पीपल का पत्ता हवा में नहीं उड़ा। सौम्या ने दोबारा मंत्र पढ़ा पर फिर कुछ नहीं हुआ। सौम्या बार-बार मंत्र पढ़ रही थी पर पीपल के पत्ते पर

कुछ असर नहीं पड़ रहा था। सौम्या के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा था। सौम्या ध्यान लगाये हुई थी। तभी उसने हैरानी के साथ अपनी आँखें खोली, “ये क्या! हे भगवान।”

“क्या हुआ सौम्या जी?” विराट ने हैरानी के साथ पूछा।

“तुम जो ग्यारह पीपल के पत्ते लाए हो उसमें से एक पत्ता खंडित हो चुका है विराट।”

“क्या! पर यह कैसे हो सकता है सौम्या जी, मैंने तो हर एक पत्ता अच्छे से देखकर तोड़ा था, सब कोमल और ठीक थे।”

सौम्या अपनी दैवीय शक्ति से वह आखिरी पत्ता अपने हाथ में लेने लगी। वह पत्ता हवा में उड़ते हुए सौम्या के हाथ में आ गया।

“यह देखो विराट, यह पीपल का पत्ता नीचे से कटा हुआ है।” सौम्या ने विराट को पीपल के पत्ते का कटा हुआ भाग दिखाते हुए कहा।

विराट के समझ नहीं आ रहा था कि यह सब कब हुआ था। उसने तो सब पत्ते देखकर तोड़े थे और उन्हें चेक भी किया था फिर यह पत्ता नीचे से कब कट गया था?

विराट इस बारे में सोच ही रहा था तभी उसे याद आया कि जब नित्या उससे पत्ते छीन रही थी तब नित्या ने धीरे से एक पत्ता अपने दाँत से काट दिया था।

“क्या अब कुछ नहीं हो सकता सौम्या जी?” विराट ने सौम्या से पूछा।

“नहीं विराट, अब कुछ नहीं हो सकता। हमारे पास बस एक यही आखिरी रास्ता बचा हुआ था।” सौम्या ने निराश होते हुए कहा।

विराट, नित्या को अपनी बाँहों में भरकर रोने लगा।

“नित्या, मुझे माफ कर देना। मैं तुम्हें नहीं बचा पाया, पर इससे पहले की अमावस्या की रात वह बेगानी रूह तुम्हें अपनी दुनिया में ले जाए, मैं उस रूह के हाथों मर जाऊँगा।”

इतना कहकर विराट उस कलावे की गाँठे खोलने लगा जिससे उसका और नित्या का हाथ बंधा हुआ था।

“यह तुम क्या कर रहे हो, विराट! ऐसा मत करो, रुक जाओ, वरना वह बेगानी रूह फिर से नित्या के शरीर में घुस जाएगी।” सौम्या ने कहा।

विराट ने सौम्या की बात नहीं मानी और कलावा खोलना जारी रखा। विराट बार-बार कोशिश कर रहा था वह कलावा खोलने की पर उससे वह कलावा नहीं खुल पा रहा था।

“यह क्या हो रहा है, यह कलावा खुल क्यों नहीं रहा है!”

“ऐसा कैसे हो सकता है?” सौम्या ने कहा।

सौम्या अपनी जगह से उठ गयी और विराट के पास जाने लगी। वह कलावा पूरी तरह से सुलझा हुआ था पर फिर भी विराट से नहीं खुल पा रहा था। सौम्या के भी समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता था?

“अपनी आँखें बंद करो विराट।” सौम्या ने विराट से कहा।

विराट और सौम्या दोनों ने अपनी आँखें बंद कर ली थी। पूरा वातावरण शांत हो गया था। किसी भी चीज की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी।

तभी सौम्या को अपनी दैवीय शक्ति से नित्या की दिल की धड़कनों की आवाज सुनाई देने लगी। विराट और नित्या दोनों की दिल की धड़कने एक साथ चल रही थी।

“तुम्हें पता है विराट, नित्या तुमसे बहुत प्यार करती है। वह अपने दिल की धड़कनों से तुमसे बात करना चाहती है। भले ही नित्या के जिस्म को उस बेगानी रूह ने अपने वश में करके रखा हो पर नित्या की रूह को अपने कब्जे में नहीं कर पाया है। शायद इसे ही सच्चा प्यार कहते हैं जो जिस्म से नहीं बल्कि रूह से होता है जो तुम दोनों ने किया है।” सौम्या ने कहा।

विराट और नित्या का प्यार देखकर सौम्या की बंद आँखों में से भी आंसू निकलने गये थे। सौम्या, नित्या की दिल की धड़कनों को सुन रही थी।

“विराट, मैं तुम्हें वापस नित्या के अतीत में भेज सकती हूँ।”

“कैसे सौम्या जी?” विराट ने बौखलाहट के साथ पूछा।

“मैं तुम्हें नित्या की दिल की धड़कनों के साथ वापस उसके अतीत में भेज सकती हूँ पर इस बार तुम वही देखोगे जो नित्या तुम्हें दिखाना चाहती होगी। वक्त कभी भी बदल जाएगा, तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि कब तुम नित्या के बचपन से जवानी में आ जाओगे। लेकिन तुम्हें याद है न, जब भी हम किसी के अतीत में जाते हैं तो उस काली दुनिया की रूहें हमसे कुछ न कुछ माँगती है पिछली बार तुम्हारी आँखों की रोशनी कम हो गयी थी, इस बार पता नहीं क्या होगा, हो सकता है तुम्हारी जान भी चले जाए क्योंकि तुम इस बार उसके दिल की धड़कनों द्वारा उस दुनिया में जा रहे हो।”

"मेरे सीने में जो दिल धड़क रहा है, वह नित्या का ही दिया हुआ है, यदि उसकी जान बचाते-बचाते मेरी साँसे भी थम जाए तो मुझे कोई परवाह नहीं।"

सौम्या ने अपनी दैवीय शक्ति से दस पीपल के पत्तों को अपने हाथ में पकड़ लिया जो कुछ समय पहले गोलिय चक्र पर मोमबत्तियों के ऊपर हवा में थे। उसने उन पत्तों को एक साथ विराट और नित्या के हाथ के बीच में रख दिया जिस पर कलावा बंधा हुआ था। सौम्या चंदन से दोनों के हाथों के ऊपर स्वस्तिक बनाने लगी।

"याद रखना विराट, यह पीपल के पत्ते तुम दोनों के हाथों से छुटने नहीं चाहिए वरना तुम दोनों वापस से अपनी असली दुनिया में आ जाओगे और फिर कभी अतीत में नहीं जा पाओगे।"

इतना कहकर सौम्या ने मंत्र पढ़ना शुरु कर दिया।

"तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल

पुनन्तु विश्वभूतानि जातवेद पुनीहि मा"

👻 👻 👻 👻 👻

भाग ०५
बेगानी रूह मुक्ति

तारीख 01 जून 2009,

विराट की रूह ठीक उस दौर में पहुँच गयी थी, जब उसके पिता उसे एंजल से बहुत दूर ले गये थे।

विराट की रूह ने देखा कि उसके जाने के बाद एंजल बहुत उदास-उदास रहने लगी थी। एंजल का उसके बिना किसी भी चीज में मन नहीं लगता था।

एंजल के बाबा उसे ऐसे रोते हुए नहीं देख सकते थे इसलिए उन्होंने भी हेमतपूर गाँव छोड़ने का फैसला कर लिया था। उन्होंने अपनी सारी पुश्तैनी जमीन बेच दी और काँची जंगल में दबकन शहर के पास सौम्या का बंगला खरीद लिया।

एंजल के पिता रविशंकर जवलाया ने दबकन शहर में ही ट्रैवल्स का अपना नया कारोबार शुरु कर दिया था। धीरे-धीरे वह कारोबार काफी अच्छा चलने लगा था।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 02 जून 2014,

पांच साल बीत गये थे पर एंजल अभी तक विराट को नहीं भुला पाई थी। एंजल को जब भी उसकी याद आती थी तो वह अपना छोटा सा लकड़ी का बॉक्स खोलती थी जिसके अंदर चमकीले पत्थर और उसके बचपन की पायल रखी हुई थी, जो विराट ने उसे दी थी। एंजल जब भी वह बॉक्स को खोलती तो उसके आँखों में आँसू आ जाते थे। वह अकेले में आईने के सामने खड़े होकर खुद से बाते किया करती कहती, "विराट को मेरी याद आती होगी या नहीं, या वह सब कुछ भूल गया होगा?"

इस दुनिया में हर शख्स सुनहरी यादें बनाना चाहता है पर जब उसे यह पता चलता है कि वह वक्त अब कभी लौटकर वापस नहीं आ सकता तो वही सुनहरी यादें उसके लिए उम्र भर के लिए ज़हरीली यादों में तब्दील हो जाती है।

एंजल के पास उन सुनहरी यादों को याद करके उनपर आँसू बहाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं बचा था।

* * *

अचानक से वक्त बदल गया और विराट की रूह ने देखा कि एंजल अब अठारह साल की हो गयी थी पर जैसे ही वह अठारह साल की हुई, उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगा।

एंजल कॉलेज में थी और उसकी टीचर उसे पढ़ा रही थी। क्लास में करीब पचास स्टूडेंस बैठे हुए थे। वहीं पर एंजल भी बैठी हुई थी।

टीचर ने एंजल से एक सवाल पूछा, "बताओ एंजल, डाटा बैलेंस शीट कैसे बनाई जाती है?"

एंजल अपनी जगह पर खड़ी हो गयी पर उसने कुछ जवाब नहीं दिया।

"बताओ एंजल, मैं तुमसे कुछ पूछ रही हूँ। अभी थोड़ी देर पहले ही मैंने बताया था कि कैसे बनाते हैं बैलेंस शीट।

एंजल को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उसका ध्यान क्लास में नहीं था। वह कुछ और ही सोच रही थी।

"जल्दी बताओ, एंजल।" टीचर ने एंजल पर दबाव बनाते हुए कहा।

एंजल ने फिर कोई जवाब नहीं दिया।

"यहाँ मेरे पास आओ! इसके लिए तुम्हें सजा तो देनी ही पड़ेगी, पता नहीं कहाँ ध्यान लगता है तुम्हारा आज कल... जल्दी से मेरे पास आओ!"

एंजल धीरे-धीरे टीचर के पास जाने लगी और टीचर के सामने जाकर खड़ी हो गयी।

"तो तुम्हें नहीं पता कि डाटा शीट कैसे बनाई जाती है?" टीचर ने एंजल पर चिल्लाते हुए कहा।

टीचर को खुद पर चिल्लाता हुआ देखकर एंजल को गुस्सा आ गया और उसने फटाक से टीचर को पूरी क्लास के सामने जोर से एक तमाचा खींचकर मार दिया। तमाचे की गूँज क्लास रूम में गूँजने लगी। उस टीचर का गाल लाल हो गया था और एंजल का हाथ उसके चेहरे पर छप गया था।

जब रविशंकर जवलाया को इस बात का पता चला तो वह बहुत हैरान हो गये। वे सोचने लगे कि जो एंजल सबसे अच्छे से बात करती है, वह ऐसा बर्ताव कैसे कर सकती है?

विराट की रूह ने देखा कि एंजल को अब छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आने लगा था। यदि उसे अपनी मन चाही चीज नहीं मिलती तो वह अपनी ज़िद पर अड़ जाती और अपनी बात मनाकर ही मानती थी। धीरे-धीरे एंजल के व्यवहार में बहुत बदलाव आने लगे थे।

एंजल के दिल की धड़कनों के साथ जुड़ने के कारण विराट की रूह उसका सपना भी देख पा रही थी।

एक रात एंजल ने एक सपना देखा। एंजल के सपने में एक अघोरी था जिसका चेहरा एंजल को नहीं दिख रहा था। वह अघोरी उसी पीपल के पेड़ के पास खड़ा हुआ था जहाँ पर डॉक्टर साहब की लाश उल्टी टंगी हुई मिली थी। वह अघोरी अपने खून से एंजल के सफेद शूट पर एक वूडू बना रहा था। जब उस अघोरी का एंजल के शूट पर वूडू बनाकर हो गया, तो वह अजीब-अजीब से मंत्र पढ़ने लगा। तभी पता नहीं उस अघोरी को क्या हुआ, ऐसा लग रहा था जैसे उसे पता चल गया कि कोई उसे देख रहा है। वह मंत्र पढ़ते-पढ़ते रुक गया। वह अघोरी अपनी जगह से उठा और जाकर पीपल के पेड़ के ऊपर चढ़ गया। उसने वहाँ से कुदककर अपनी जान दे दी। यह खौफनाक मंजर देखकर एंजल डर गयी और चिल्लाते हुए अपने सपने में से बाहर आ गयी।

अगली सुबह जब एंजल उठी और उसने अपना सफेद शूट ढूँढ़ा तो वह उसे कहीं नहीं मिला। जब एंजल जंगल में गयी तो उसने देखा पीपल के पेड़ के ऊपर उसका शूट

उल्टा लटका हुआ था। उसके शूट के ऊपर किसी के खून के निशान भी थे।

उसी दिन से एंजल की तबीयत खराब होने लगी। वह हमेशा डरी-डरी रहने लगी थी। वह कहती रहती, "वह मुझे मार देगा! वह मुझे नहीं छोड़ेगा!"

पता नहीं वह किसकी बातें किया करती थी और किससे इतना डरा करती थी। रविशंकर जवलाया समझ नहीं पा रहे थे कि एंजल को क्या हुआ था। उन्होंने कई डॉक्टरों को दिखाया पर कोई भी डॉक्टर एंजल का इलाज नहीं कर पा रहे थे और न ही उसकी बीमारी का पता लगा पा रहे थे।

एंजल के दुर्व्यवहार के कारण उसे कॉलेज से भी निकाल दिया गया था।

तारीख 07 फरवरी 2016,

एंजल अब दिन भर घर में ही रहती थी। रविशंकर जवलाया को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। कुछ लोगों ने उनसे कहा भी कि एंजल के ऊपर किसी प्रेत आत्मा का साया है पर रविशंकर जी इस बात को मानने को तैयार ही नहीं थे। एंजल न ही किसी से बात करती थी और न ही खाना खाती थी, बस दिन भर बिस्तर पर पड़ी रहती थी। एंजल की हालत दिन-ब-दिन और खराब होती जा रही थी।

रविशंकर जी के एक परिचित थे, उन्होंने एक पुजारी के बारे में बताया, जिनका नाम था स्वामी कृष्णानन। जब रविशंकर जी के पास कोई और रास्ता नहीं बचा तो वह स्वामी कृष्णानन के पास चले गये। रविशंकर जी के पीछे -पीछे विराट की रूह भी चली गयी। रविशंकर जी अभी भी इन सब बातों को अंधविश्वास समझते थे और इन पर भरोसा नहीं करते थे।

स्वामी कृष्णानन ने उनसे कहा, "दैवीय शक्ति उन्हीं की मदद करती है जो इन सब पर भरोसा करते हैं। यदि तुम्हें अपनी बेटी को बचाना है तो सबसे पहले तुम्हें यकीन करना होगा कि तुम्हारी बेटी के अंदर किसी प्रेत आत्मा ने अपना वास बना लिया है।"

रविशंकर जी ने कहा, "जो चीज दिखाई नहीं देती उस पर विश्वास कैसे कर लूँ?"

स्वामी कृष्णानन ने रविशंकर जी को एक दीया और चंदन देते हुए कहा, "यह दीया लो और इसे जिस बिस्तर पर तुम्हारी बेटी सोती है, उसके नीचे जलाकर एक कोने में रख देना और यह चंदन भी मिला देना, यदि अगले दिन दीये का तेल जम जाए, चंदन काला पड़ जाए और इसमें से किसी मरे हुए इंसान की बदबू आने लगे तो समझ जाना, तुम्हारी बेटी के अंदर किसी प्रेत आत्मा ने अपना वास बना लिया है।"

विराट की रूह ने देखा कि स्वामी कृष्णानन ने जैसा कहा था रविशंकर जी ने वैसा ही किया। जैसा स्वामी कृष्णानन ने कहा था वैसा ही हुआ। उस चंदन में से मरे हुए इंसान की बदबू आने लगी थी और दीये का तेल जमकर काला पड़ गया था। रविशंकर जी को अब यकीन हो गया था कि एंजल के अंदर किसी प्रेत आत्मा का वास था।

अगले दिन जब रविशंकर जी, स्वामी कृष्णानन जी के पास पहुँचे तो स्वामी कृष्णानन ने उन्हें दो शेषनाग रुद्राक्ष की माला दी और कहा, "इसमें से एक माला तुम अपने गले में और दूसरी माला अपनी बेटी के गले में डाल देना। अभी वह बेगानी रूह पूरी तरह से एंजल पर हावी नहीं हुई है। इससे वह रूह एंजल के अंदर से निकल जाएगी। वह अभी एंजल को उस बंगले से बाहर नहीं ले जा सकती, न ही खुद निकल सकती है। तुम कहीं दूर ले जाओ अपनी बेटी को उस रूह से, पर याद रखना, बेगानी रूहें कभी पीछा नहीं छोड़ती,

जब तक उनका मकसद पूरा नहीं हो जाता। वह एक न एक दिन उस बंगले से बाहर निकलेगी और हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हारी बेटी को अपनी दुनिया में ले जाएगी क्योंकि वह एक बेगानी रूह है।”

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 09 फरवरी 2016, रात 11:00 बजे

रविशंकर जी रुद्राक्ष की माला लेकर बंगले में पहुँच गये और एंजल के कमरे में जाने लगे। रविशंकर जी जाने से पहले एंजल को उसके बेड पर बाँधकर गये थे पर अब एंजल वहाँ पर नहीं थी। सारी रस्सियाँ खुली पड़ी थी। रविशंकर जी एंजल को हर जगह ढूँढ़ने लगे पर वह उन्हें कहीं नहीं मिली। रविशंकर जी एंजल को ढूँढ़ने बंगले से बाहर जा ही रहे थे तभी उन्हें याद आया कि स्वामी कृष्णानन ने कहा था कि वह रूह बंगले से बाहर नहीं जा सकती, इसका मतलब यह था कि एंजल अभी भी बंगले के अंदर ही थी। रविशंकर जी वापस एंजल के कमरे में चले गये और उसे ढूँढ़ने लगे।

"बाबा, मैं यहाँ हूँ। बाबा, यहाँ पर आइए न।" एंजल की सीढ़ियों के पास से आवाज सुनाई दी।

रविशंकर जी भागते-भागते सीढ़ियों के पास जाने लगे। जब वे वहाँ पर पहुँचे तो उन्होंने देखा एंजल सीढ़ियों के ऊपर बैठी हुई थी। एंजल के बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए थे जिस कारण एंजल का चेहरा नहीं दिख रहा था।

"बाबा, मुझे बचा लीजिए... वरना यह शैतान मुझे मार देगा।" एंजल ने रोते हुए कहा।

"कौन बेटा, कौन तुम्हें मार देगा, बताओ मुझे?" रविशंकर जी ने घबराते हुए कहा।

"देखिए न बाबा, यह मेरे सिर के ऊपर बैठा हुआ है। कहता है, मुझे अपनी दुनिया में ले जाएगा। यह मुझे बहुत मारता है, देखिए इसने मेरा हाथ भी खरोंच दिया।" एंजल ने अपना हाथ दिखाते हुए कहा।

एंजल का हाथ खुरेंचा हुआ था। उसके हाथ को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे किसी जानवर ने खरोंचा था। अचानक से एंजल सीढ़ियों से नीचे गिर गयी और उसके सिर से खून बहने लगा।

रविशंकर जी भागते हुए एंजल के पास गये और उसे उठाते हुए कहने लगे, "तुम ठीक तो होना बेटा?"

एंजल पेट के बल गिरी हुई थी। तभी वह एकदम से पीछे मुड़ी और रविशंकर जी का गला पकड़कर कहने लगी, "तू दूर करेगा, मुझे मेरी एंजल से! तेरी यह मजाल।"

रविशंकर जी एंजल का भयानक रुप देखकर डर गये थे। एंजल की आवाज बदली हुई थी। रविशंकर जी ने अपनी पेंट की जेब में से रुद्राक्ष की माला निकाली और एंजल के गले में डालने लगे पर उससे पहले ही एंजल ने अपने एक हाथ से रविशंकर जी

को धक्का दे दिया, जिस कारण वह माला रविशंकर जी के हाथ से छूटकर पंखे पर लटक गयी।

एंजल जोर-जोर से हँसने लगे। एंजल ने रविशंकर जी का गला छोड़ दिया और पागलों की तरह ऊपर हाथ करके नाचने लगे। उसको देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उसने बहुत बड़ी जीत हासिल कर ली थी।

"तू बचाएगा एंजल को... पहले अपनी जान तो बचा ले बुड्ढे!" एंजल ने आदमी की आवाज में कहा।

एंजल ने अपना एक हाथ लम्बा किया और रसोई घर में से चाकू उठाने लगे। रविशंकर जी जमीन पर ही लेटे हुए थे। रविशंकर जी के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह अपनी बेटी एंजल की जान कैसे बचाए?

"अब कोई रास्ता नहीं बचा है... भले ही मेरी जान चले जाए पर मैं अपनी बेटी को उस बेगानी रूह के हाथों मरने नहीं दूँगा।" इतना कहकर रविशंकर जी अपने गले में से रुद्राक्ष की माला निकालने लगे जो स्वामी कृष्णानन ने उस बेगानी रूह से बचने के लिए उन्हें पहनाई थी।

रविशंकर जी अपनी माला एंजल को पहनाने ही वाले थे पर उससे पहले ही एंजल ने चाकू उठा लिया और रविशंकर जी के पेट में घोंप दिया। उनके हाथ से रुद्राक्ष की वह माला जमीन पर गिरकर टूटकर बिखर गयी। पेट में चाकू लगने के कारण रविशंकर जी के पेट से खून निकलने लगा था और वह धीरे-धीरे दर्द के मारे मरने लगे थे।

एंजल हँसने लगी और कहने लगी, "एंजल सिर्फ मेरी है! कोई भी उसे मुझसे अलग नहीं कर सकता है। एंजल पर सिर्फ मेरा हक है... हा हा हा।"

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 20 अगस्त 2017, रात 09:10 बजे

विराट और नित्या का हाथ जिस कलावे के साथ बंधा हुआ था, वह कलावा काला होने लगा था। सौम्या अभी भी कोशिश कर रही थी कि वह विराट को नित्या के अतीत में ही रखे पर वह ऐसा नहीं कर पा रही थी क्योंकि पिछले दो दिन से विराट, नित्या के अतीत में ही था।

नित्या के अतीत में जाने के कारण विराट का दायां हाथ जो नित्या के हाथ के साथ बंधा हुआ था वह काला पड़ने लगा था। सौम्या समझ गयी थी कि उस दुनिया में जाने के कारण वहाँ की प्रेत आत्माएँ विराट के हाथ को नुकसान पहुँचा रही थी। इससे पहले की विराट का सारा शरीर काला पड़ जाता, सौम्या ने सारी मोमबत्तियाँ बुझा दी। विराट की रूह वापस से अपनी असली दुनिया में लौट आयी थी।

विराट ने जब अपनी आँखें खोली तो उसका सिर घुमने लगा। उसे चक्कर आने लगे थे। सौम्या ने अपना हाथ उठाया और विराट के सिर पर रख दिया। विराट ने धीरे से अपनी आँखें बंद कर ली। सौम्या ने मंत्र पढ़ना शुरु कर दिया। जब सौम्या ने विराट के सिर पर अपना हाथ रखा तो उसे सब पता चल गया कि विराट ने नित्या के अतीत में क्या-क्या देखा था।

कुछ देर बाद विराट ने अपनी आँखें धीरे से खोल दी। अब उसका सिर नहीं घूम रहा था। नित्या अभी भी बेहोश थी और उसका हाथ विराट के हाथ के साथ बँधा हुआ था। विराट का दायां हाथ जो नित्या के हाथ के साथ बंधा हुआ था, उस हाथ ने काम करना बंद कर दिया था।

“मुझे फिर पता नहीं चल पाया कि नित्या के अंदर किसकी रूह है। आखिर कौन है वह बेगानी रूह जो मेरी नित्या के पीछे पड़ी है?” विराट ने गुस्से से कहा।

“विराट, कुछ सवालों के जवाब ऐसे होते जो सही वक्त आने पर खुद अपने आप हमारे सामने आ जाते हैं।” सौम्या ने विराट को समझाते हुए कहा।

“आप कहना क्या चाहती है?” विराट ने हैरानी के साथ पूछा।

“मैं बस यही कहना चाहती हूँ विराट, तुम नित्या को इस बंगले से जितना दूर ले जा सकते हो ले जाओ। पांच घण्टे बाद अमावस्या है और फिर वह बेगानी रूह फिर से नित्या के शरीर में घूस जाएगी और उसे हमेशा-हमेशा के लिए अपनी दुनिया में ले जायेगी।”

“पर मैं कहाँ ले जाऊँ नित्या को?”

"मुझे नहीं पता, पर यहाँ से जितना दूर ले जा सकते हो ले जाओ। जैसे-जैसे अमावस्या करीब आ रही है उस बेगानी रूह की ताकत बढ़ते जा रही है... वह रूह तुम्हें इतनी आसानी से नित्या को यहाँ से ले जाने नहीं देगी। वह तुम्हारे रास्ते में अड़चन जरूर डालेगी, पर तबतक मैं उसे अपनी शक्तियों से रोकूँगी।"

"नहीं सौम्या जी, मैं आपको अकेला नहीं छोड़ सकता, आपको भी हमारे साथ चलना पड़ेगा।"

"मुझे मत रोको, विराट। अब यही आखिरी रास्ता बचा हुआ है, मुझे ऐसा करना ही होगा। तुम्हें नित्या को यहाँ से दूर लेकर जाना होगा, विराट। तुम्हें पता करना होगा की वह बेगानी रूह कौन है और उसने मेरे परिवार को क्यों मारा? मेरी आँखें चले जाने की वजह भी वही है विराट। अभी बहुत सारे सवालों के जवाब पता करना बाकी है। विराट, जाओ यहाँ से, चले जाओ...! तुम्हें मेरी कसम।"

"नहीं, मैं नहीं जा सकता सौम्या जी, आप मुझ बेगाने के लिए अपनी जान खतरे में क्यों डाल रही है?"

"क्या कहा, बेगाने! तुमने भी तो एक बेगानी लड़की के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया था, और तुम अब बेगाने थोड़ी हो मेरे अपने बन चुके हो, भाई हो तुम मेरे। एक बहन अपने भाई के लिए भगवान से भी लड़ सकती है और यह तो सिर्फ एक बेगानी रूह है।"

"ठीक है सौम्या जी, मैं नित्या को यहाँ से बहुत दूर ले जाऊँगा।"

"मेरी एक बात हमेशा याद रखना विराट, जो कहानी जहाँ से शुरु होती है वहीं पर खत्म होती है।"

विराट ने नित्या को उसी कंधे पर उठा रखा था जो हाथ उसका काम नहीं कर रहा था। विराट लड़खड़ाते हुए नित्या को वहाँ से लेकर बाहर जाने लगा।

सौम्या ने मंत्र पढ़ना शुरु कर दिया। सौम्या लगातार एक ही एक मंत्र पढ़े जा रही थी,

"ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती सा।

बलादाकृष्य मोहाय, महामाया प्रयच्छति।"

बंगले की सारी खिड़कियाँ बंद थी। अचानक से खिड़की के काँच तोड़कर एक काला साया बंगले के अंदर आया और सौम्या के अंदर घुस गया।

सौम्या के बाल अपने आप खुल गये। उसकी आँखों की पुतली गायब हो गयी थी और उसके होंठ सूख गये। वह बहुत डरावनी दिखने लगी थी।

उस बेगानी रूह ने सौम्या के अंदर प्रवेश कर लिया था। सौम्या खुद से बाते करने लगी।

“बचाना चाहती है एंजल को... कभी नहीं बचा पायेगी! वह सिर्फ मेरी है, उसपर सिर्फ मेरा हक है।” सौम्या ने आदमी की आवाज में कहा।

“नहीं, तुम उसे कभी नहीं पा सकोगे क्योंकि नित्या, विराट से प्यार करती है, जब-जब तुमने नित्या को विराट से दूर किया है वह दोनों दोबारा मिले हैं। इसे ही प्यार की ताकत कहते हैं; सच्चे प्यार की ताकत। तुम क्या जानो प्यार क्या होता है? तुमने तो हमेशा उसके जिस्म को चाहा है। अगर रूह को चाहा होता तो नित्या हमेशा तुम्हारे साथ रहती।” सौम्या ने अपनी आवाज में कहा।

अचानक वह बेगानी रूह सौम्या के बाल खींचने लगी। सौम्या जोर-जोर से चिल्लाने लगे थी। सौम्या एक ही वक्त में दो आवाजों में बात कर रही थी।

विराट ने नित्या को कार में बैठाया और उसे बंगले से दूर ले जाने लगा। विराट को नहीं पता था कि वह नित्या को कहाँ ले जा रहा था। विराट कार को फुल स्पीड में चला रहा था। विराट, नित्या को उस बेगानी रूह से बहुत दूर ले जाना चाहता था। विराट की आँखों में बस आँसू थे, उसे खुद नहीं पता था कि वह नित्या की जान कैसे बचाएगा, उसे तो अभी तक यह भी पता नहीं चला था कि नित्या के अंदर किसकी रूह थी?

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 20 अगस्त 2017, रात 11:58 बजे

सौम्या उस बेगानी रूह को अभी भी अपने अंदर रोके हुई थी पर अब वह कमजोर होने लगी थी। उसकी आँखों में से धीरे-धीरे खून निकलने लगा था। सौम्या समझ गयी थी कि किसी भी वक्त बारह बजने वाले थे।

"कौन हो तुम?" सौम्या ने खुद से कहा।

"मैं हूँ उसका पुराना आशिक..." सौम्या के अंदर की बेगानी रूह ने कहा।

उस रूह ने इतना ही कहा था, तभी बारह बज गये और अगले ही पल उस बेगानी रूह ने अपनी शक्ति के प्रयोग से सौम्या के शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े करने लगा। सौम्या के शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े हवा में उड़ने लगे और बंगले की दीवार से जाकर चिपक गये। चारों तरफ खून ही खून बिखर गया था।

विराट पिछले तीन घंटे से लगातार तेज रफ्तार में कार भगाये जा रहा था। वह करीब दो सौ किलोमीटर दूर आ गया था। नित्या अभी भी बेहोश थी। नित्या ने अपना चेहरा खिड़की की तरफ किया हुआ था। विराट एक हाथ से कार चला रहा था क्योंकि उसका दायाँ हाथ काम नहीं कर रहा था, उसका दायाँ हाथ अभी भी नित्या के बाएं हाथ के साथ कलावे से बंधा हुआ था। वह धीरे-धीरे होश में आने लगी थी। नित्या, विराट की तरफ देखने लगी और विराट भी नित्या की तरफ देखने लगा।

"आपको होश आ गया नित्या?" विराट ने कहा।

"हाँ कुंदरू... मुझे सब कुछ याद आ गया, कुंदरू... तुम मेरे राज हो न?"

"हाँ निमू, मैं ही तुम्हारा राज हूँ।"

विराट, नित्या को पहले की तरह ठीक देखकर अपने आप को रोक नहीं पाया और भूल गया कि वह कार चला रहा था। विराट ने अपना हाथ कार के स्टेयरिंग से हटाया और नित्या के चेहरे पर रख दिया। नित्या की आँखों से आँसू निकलने लग गये थे। विराट अपने हाथ से उन आँसूओं को पोंछने लगा।

तभी अचानक से नित्या ने विराट का गला पकड़ लिया और हँसते हुए कहा, "दर्द हो रहा है... मेरे प्यारे कुंदरू।" नित्या ने आदमी की आवाज में कहा।

नित्या का पूरा चेहरा बदलने लगा। जिस चेहरे पर थोड़ी देर पहले प्यार था अब उस चेहरे पर नफरत थी। नित्या के बाल बिखर गये, उसकी आँखें लाल हो गयी, उसके होंठ सुखकर काले पड़ गये थे। विराट, नित्या का यह रूप देखकर डर गया था।

विराट समझ गया था कि बारह बज गये थे और नित्या के अंदर वह बेगानी रूह घुस गयी थी। विराट एक हाथ से नित्या से अपना गला छुड़ाने की कोशिश करने लगा। तभी उनकी कार का एक्सीडेंट हो गया।

उनकी कार एक पुरानी इमारत से जाकर टकरा गयी थी। वह दोनों कार से बाहर निकलकर अलग-अलग जगह नीचे गिर गये।

दोनों को काफी चोट लगी थी। उनके हाथ पैरो से खून निकलने लगा था। विराट का चश्मा नीचे गिर गया जिससे उसे सब धुँधला दिखाई देने लगा था।

विराट को एक नदी की आवाज सुनाई देने लगी। यह वही नदी थी जिसके पास वह और नित्या(एंजल) बचपन में खेला करते थे। विराट और नित्या दोनों हेमतपूर गाँव के पास आ पहुँचे थे, जहाँ पर वह दोनों बचपन में रहा करते थे। अब यह गाँव पूरी तरह से बर्बाद हो चुका था।

विराट धीरे-धीरे बेहोश हो गया।

नित्या के हाथ-पैरों से खून निकलने लगा था। कुछ ही पल बाद नित्या के शरीर के सामने एक काला साया आकर खड़ा हो गया। वह काला साया कोई और नहीं, बल्कि वही बेगानी रूह का था, जो उसके शरीर के अंदर घूसा हुआ था। बेगानी रूह नित्या के शरीर से निकल गयी थी।

बेगानी रूह सोचने लगी कि नित्या की रूह को अपनी काली दुनिया में ले जाने से पहले मैं विराट की रूह को उसके अतीत में कैद कर देता हूँ। जिससे जब वह नित्या की रूह को अपनी काली दुनिया में ले जाए तो विराट कोई समस्या खड़ी न करें।

बेगानी रूह ने विराट के हाथ की हथेली में से निकल रहे खून की बूँद को अपनी शक्तियों से हवा में उड़ाया और देखते ही देखते उस खून की बूँद के अंदर घूस गया। जैसे ही वह बेगानी रूह उस खून की बूँद के अंदर घुसी, उस खून की लाल बूँद के अंदर एक छोटा सा काले रंग का गोला दिखाई देने लगा।

बेगानी रूह और विराट की रूह के साथ-साथ नित्या की रूह भी उनके साथ अतीत में जाने लगी थी क्योंकि जब कार का एक्सीडेंट हुआ था तो नित्या के हाथ-पैरो से भी खून निकलने लगा था। नित्या के खून की कुछ बूँदें विराट की हथेली पर लग गयी थी और उसके खून के साथ मिल गयी थी। बेगानी रूह को यह बात पता नहीं चल पायी थी। बेगानी रूह को लग रहा था कि वह सिर्फ विराट के खून की बूँद के अंदर घूसा था पर विराट के खून की बूँद के साथ नित्या का खून भी मिला हुआ था।

नित्या के हाथ में कलावा बँधा होने के कारण उसकी रूह के पास कुछ शक्तियाँ भी थी जिससे नित्या की रूह ने बेगानी रूह को वर्तमान और अतीत के समय के बीच ही कैद कर दिया और विराट की रूह को उस बेगानी रूह के अतीत में भेज दिया।

नित्या की रूह के पास ज्यादा वक्त नहीं था। जैसे-जैसे विराट के खून की बूँद का रंग लाल से काला होते जाएगा, बेगानी रूह की ताकत बढ़ती जाएगी। यदि विराट की खून की बूँद पूरी तरह से काली हो गयी तो नित्या और विराट, दोनों की रूह जिस वक्त में है वहीं पर कैद हो जाएगी।

तारीख 22 मई 1996,

विराट की रूह संकरा अस्पताल में थी जहाँ पर उसका और एंजल का जन्म हुआ था। विराट की रूह ने देखा कि जिस दिन उसका और एंजल का जन्म हुआ था, उस दिन अस्पताल में दो नहीं बल्कि तीन बच्चों का जन्म हुआ था। विराट, एंजल और एक और बच्चा। वह बच्चा था तांत्रिक का था, जो कि नित्या और विराट के गाँव में ही रहता था। जब बच्चा पैदा हुआ था वह मरा हुआ था, उसका दिल नहीं धड़क रहा था। खून जमने के कारण उसका दिल काला पड़ गया था। बच्चे को जन्म देते-देते उसकी माँ की भी मृत्यु हो गयी थी। वह तांत्रिक कैसे भी करके अपने बेटे को जिन्दा करना चाहता था। उसने काले जादू में इतनी सिद्धि हासिल कर ली थी कि वह मरे हुए को भी जिन्दा कर सकता था।

तांत्रिक ने अपने दाहिने हाथ की दो उंगलियाँ काट ली और उससे प्लस का चिन्ह बनाकर सुई धागे से सिल दिया। तांत्रिक के हाथ से खून बहता जा रहा था पर फिर भी उसे दर्द महसूस नहीं हो रहा था क्योंकि उसपर अपने बेटे को जिन्दा करने की धून सवार थी। तांत्रिक ने अपने सिर के कुछ बाल निकाले और उन उंगलियों के साथ जोड़ दिया। उसने अपना काला कुर्ता फाड़ा और उसे उन उंगलियों पर लपेट दिया जिनसे उसने प्लस का चिन्ह बनाया था। उसने अपने शरीर के अंगों का प्रयोग करके एक वूडू बना दिया। फिर तांत्रिक ने मंत्र पढ़ना शुरु कर दिया।

विराट की रूह ने देखा कि उस तांत्रिक के पास काले जादू की एक किताब थी जिसमें देख-देखकर वह मंत्र पढ़ रहा था। उस किताब के अनुसार इस प्रकृति का एक नियम है, यदि हमें किसी को जिन्दा करना है तो हमें उसे अपनी आयु देनी पड़ती है। तांत्रिक ने अपने बेटे को जिन्दा करने के लिए अपनी आयु उसे दे दी। तांत्रिक चालीस साल का था। उसे अपनी दैत्य शक्तियों से पता चल गया था कि वह सिर्फ पचहत्तर साल तक ही जी सकता था इसलिए उसने अपनी इक्कीस वर्ष की आयु अपने बेटे को दे दी और चौदह वर्ष तक वह उसकी देखभाल करना चाहता था।

तांत्रिक का बेटा ज़िन्दा तो हो गया पर वह बोल नहीं सकता था न ही उसका दिल धड़कता था। इसी वजह से तांत्रिक ने अपने बेटे को पूरी दुनिया से छुपाकर रखा था। उसने अपने बेटे का नाम वैश्यन रखा। तांत्रिक, वैश्यन को घर में बंद करके रखता था। वह नहीं चाहता था वैश्यन के बारे में किसी को भी कुछ पता चले। तांत्रिक, वैश्यन को बचपन से ही काला जादू सिखाता था।

इक्कीस वर्ष बाद वैश्यन अपने आप मर जाता पर तांत्रिक नहीं चाहता था उसके बेटे को कुछ हो इसलिए वह अमरवती विद्या प्राप्त करने के लिए अघोरियों के पास चला गया। क्योंकि अमरवती विद्या सिर्फ अघोरियों को ही पता थी और इसके लिए उसका

अघोरी बनना बहुत जरूरी था। अमरवती विद्या सीखने के बाद तांत्रिक अपने बेटे को अमर कर सकता था।

जब तांत्रिक अघोरी बनने चला गया तो वैश्यन दिन भर घर से बाहर रहने लगा। पिछले दस साल से वह एक कमरे में बंद था जहाँ पर वह सिर्फ एक खिड़की से बाहर की दुनिया देखता था। अब उसको आजादी मिल गयी थी।

वैश्यन ग्यारह साल का हो गया था। जब उसने पहली बार एंजल को देखा था, वह उसे देखते ही उसकी खूबसूरती का दीवाना हो गया। वैश्यन कैसे भी करके एंजल को पाना चाहता था। उसे अपना बनाना चाहता था पर उसे डर लगता था कि यदि वह एंजल के पास गया तो सबको पता चल जाएगा कि वह मरा हुआ है। वैश्यन चुपके-चुपके एंजल का पीछा किया करता था।

जब वैश्यन, एंजल को विराट के साथ देखता था तो वह जल जाता था। वैश्यन को विराट से बहुत नफरत थी इसलिए वैश्यन ने अपने काले जादू से विराट का एक्सीडेंट करवा दिया था।

वैश्यन बहुत खुश था यह जानकर कि अब विराट नहीं बचेगा पर जब उसे पता चला कि एंजल ने अपना दिल देकर विराट की जान बचा ली है तो वैश्यन यह सदमा सह नहीं पाया और उसने आत्महत्या कर ली।

वे लोग जिनकी दुर्घटना में या आकस्मिक मौत होती है और जो अधूरी ख्वाहिशों के साथ मरते है, उनकी आत्माएं भटकने लगती है। अधूरी ख्वाहिशों के साथ मरने के कारण वैश्यन की रूह भटकने लगी।

विराट की रूह ने देखा, वैश्यन के पिता(तांत्रिक) अघोरी बनकर तो आ गये थे पर जब उन्हें पता चला कि वैश्यन ने आत्महत्या कर ली तो तांत्रिक ने अपनी शक्तियों के प्रयोग से वैश्यन की रूह को बुलाया और उसकी आखिरी ख्वाहिश जानी। वैश्यन की आखिरी ख्वाहिश यह थी कि वह एंजल की रूह को अपनी दुनिया(काली दुनिया) में ले जाना चाहता था।

तांत्रिक कुछ भी करके वैश्यन की आखिरी ख्वाहिश पूरी करना चाहता था इसलिए उसने शंकर भगवान के पास जाकर अपनी बली दे दी। तांत्रिक की सारी शक्तियाँ वैश्यन की रूह को मिल गयी।

वैश्यन की रूह अब अघोरिय प्रवृत्ति की रूह बन गयी थी। उसके पास चुड़ैल, पिशाच, दैत्य, प्रेत, ब्रह्मराक्षस, सबकी ताकत आ गयी थी। वैश्यन ने अपने पिता की लाश जंगल में जो पीपल का पेड़ था उसी के पास दफन कर दी थी। अघोरी होने के कारण

तांत्रिक की लाश में से राख अपने आप निकलती रहती थी। यही वह तीसरी लाश थी जो विराट को पीपल के पेड़ के पास मिली थी।

वैश्यन की रूह एंजल की परछाई की तरह हमेशा उसके साथ रहती थी। हर वक्त उसका पीछा करती रहती थी, जब उसे पता चला कि एंजल के पिता रविशंकर जी सारी पुश्तैनी जमीन बेचकर शहर जाने वाले है तो उसे लगा वह एंजल से दूर हो जाएगा इसलिए उसने एक ऐसा बंगला ढूँढ़ा जहाँ पर वह एंजल को आसानी से अपने वश में कर सकता था, जहाँ पर आस-पास कोई नहीं रहता हो।

अपनी दैत्य शक्तियों से वैश्यन की रूह को वह बंगला मिल गया और वह बंगला किसी और का नहीं बल्कि सौम्या का था। वैश्यन ने उस बंगले को खाली करवाने के लिए सौम्या के माँ-बाप और उसके छोटे भाई को मार दिया था और जब सौम्या अपने मामा, दादी के साथ उस बंगले पर आयी तो उन दोनों पर भी हमला कर उन्हें मार दिया। उसी हादसे में सौम्या की आँखों की रोशनी चले गयी थी।

वैश्यन की रूह ने अपने काले जादू की शक्तियों से एंजल के पिता रविशंकर जी को वही बंगला खरीदवाया जो सौम्या का था। वैश्यन की रूह एंजल को अपने वश में करना चाहती थी पर नहीं कर पा रही थी क्योंकि एंजल अभी बालिग़ नहीं थी।

जब एंजल अठारह साल की हुई तो वैश्यन की रूह ने एंजल के शरीर में प्रवेश कर लिया। वैश्यन, एंजल के शरीर पर एक दम से पूरी तरह हावी नहीं हो सकता था इसलिए उसने धीरे-धीरे एंजल को अपने वश में करना शुरु कर दिया। उन्नीस साल की होने पर वैश्यन, एंजल की रूह को अपनी दुनिया में ले जा सकता था। वैश्यन की रूह इंतजार कर रही थी कि कब एंजल उन्नीस साल की हो और कब वह उसे अपनी दुनिया में ले जाए।

जिस वक्त का इंतजार वैश्यन की रूह कर रही थी वह वक्त आ गया था, एंजल उन्नीस साल की हो गयी थी और अब वैश्यन एंजल को अपने साथ अपनी दुनिया में ले जा सकता था।

वैश्यन की रूह एंजल को अपनी दुनिया में ले जा पाती और उस पर पूरी तरह से हावी हो पाती, उससे पहले ही रविशंकर जी को पता चल गया कि एंजल के ऊपर किसी बुरी रूह का साया मंडरा रहा था।

रविशंकर जी, स्वामी कृष्णानन के पास गये थे और उन्होंने उन्हें दो शेषनाग रुद्राक्ष की माला दी थी। जिसमें से दूसरी रुद्राक्ष की माला एंजल के हाथ मारने के कारण जमीन पर गिरकर टूट गयी थी और पहली रुद्राक्ष की माला पंखे के ऊपर लटक गयी थी। जब वैश्यन की रूह ने रविशंकर जी के पेट में चाकू घोंप दिया था तो मरते वक्त रविशंकर जी ने पंखे का बटन दबा दिया था। जिस कारण जब पंखा घूमा तो रुद्राक्ष की माला सीधे एंजल

के गले में जाकर गिर गयी। जैसे ही रुद्राक्ष की माला एंजल के गले में गिरी, वैश्यन की रूह उसके अंदर से निकल गयी। रविशंकर जी की साँसे उस वक्त चल रही थी।

“बेटा, भाग जा यहाँ से। जितनी दूर जा सकती है चले जा... तू मेरी फिक्र मत कर।” रविशंकर जी ने एंजल से कहा।

एंजल बहुत डर गयी थी, उसके कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें। एंजल उस बंगले से भाग गयी और भागते-भागते विराट की कार से टकरा गयी। विराट, एंजल को अपने घर ले गया था। सिर पर चोट लग जाने के कारण एंजल अपनी याददाश्त खो चुकी थी और विराट के घर को ही अपना घर समझने लगी थी। एंजल ने विराट के साथ एक नयी जिन्दगी शुरु कर दी थी। विराट ने उसे नयी जिन्दगी के साथ एक नया नाम दिया था, नित्या। इस बीच वैश्यन की रूह बार-बार एंजल को अपने वश में करने की कोशिश कर रही थी पर गले में रुद्राक्ष की माला होने के कारण नहीं कर पा रही थी।

जिस दिन विराट, नित्या(एंजल) से अपनी मोहब्बत का इज़हार करने वाला था उसके चार दिन पहले ही नहाते वक्त रुद्राक्ष की माला नित्या के गले से टूट गयी थी जिस कारण वैश्यन की रूह ने वापस नित्या को धीरे-धीरे अपने वश में करना शुरू कर दिया और चौदह फरवरी को वैश्यन की रूह नित्या को वापस काँची जंगल के बंगले में ले गयी।

वैश्यन की रूह नित्या को हर दिन सताती थी। दो महीने तक वैश्यन की रूह उसे सताती रही, मारती रही। हर वह दर्द पहुँचाती रही जो वैश्यन उसे जीते जी पहुँचाना चाहता था।

वैश्यन की रूह अब वर्षा ऋतु की आखिरी अमावस्या का इंतजार कर रही थी। वर्षा ऋतु की आखिरी अमावस्या को वैश्यन की रूह, नित्या की रूह को हमेशा-हमेशा के लिए अपने साथ अपनी काली दुनिया में ले जाने वाली थी पर वर्षा ऋतु की आखिरी अमावस्या के आने से पहले ही जो दूसरी रुद्राक्ष की माला टूटी थी उसका एक रुद्राक्ष नित्या के पाव में आ गया जिस कारण वैश्यन की रूह नित्या के शरीर से निकल गयी।

नित्या ने उस रुद्राक्ष को उठाया और वहाँ से भागने लगी। भागते-भागते फिर एक बार विराट की कार से टकरा गयी पर इस बार उसकी जान बचाने की जगह विराट खुद उसे नर्क में ले गया। वह वापस से नित्या को उसी बंगले में ले गया था जहाँ से नित्या अपनी जान बचाकर भागी थी।

कार से टकरा जाने के कारण नित्या के दोनों पैर पैरालाइज हो गये थे और उसने फिर से अपनी याददाश्त खो दी थी। कोई भी रूह एक दम से किसी के शरीर में प्रवेश नहीं कर सकती इसलिए वैश्यन की रूह ने वापस से धीरे-धीरे नित्या के ऊपर हावी होना शुरू कर दिया।

उस रात करण से झगड़ा करने के बाद डॉक्टर साहब को अपने ऊपर बहुत पछतावा हुआ। उन्हें एहसास हो गया कि उन्होंने नित्या और विराट के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया इसलिए वह रात में ही माफी माँगने विराट और नित्या के पास आ रहे थे पर जंगल के बीच में ही डॉक्टर साहब को नित्या दिख गयी।

नित्या पीपल के पेड़ के पास बैठी हुई थी। उसके बाल खुले और बिखरे हुए थे। उसके बालो ने उसके चेहरे को पूरी तरह ढक लिया था। वह पीपल के पेड़ की तरफ मुंह करके बैठी हुई थी।

“तुम इतनी रात में यहाँ पर क्या कर रही हो?” डॉक्टर साहब ने नित्या के पास जाते हुए पूछा।

नित्या ने डॉक्टर साहब के सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया। नित्या शक्ति-शक्ति फुसफुसाए जा रही थी। उस वक्त नित्या, नित्या नहीं थी, उसके अंदर वैश्यन की रूह ने प्रवेश कर लिया था।

“चलो नित्या, घर चलें। रात बहुत हो चुकी है, इतनी रात में तुम्हें यहाँ पर नहीं रहना चाहिए।” डॉक्टर साहब ने नित्या को हाथ लगाते हुए कहा।

“तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरी एंजल को हाथ लगाने की हरामजादे?” नित्या ने गुस्से से कहा।

“ये तुम क्या कह रही हो नित्या!” डॉक्टर साहब ने घबराते हुए कहा।

“हरामजादे, तू ही था न जिसने विराट से कहा था कि तू मेरी एंजल के साथ सोना चाहता है, और क्या कहा था तुने, वही दिला दो जो तुम्हें मिल रहा है।”

“नित्या, उसी के लिए तो मैं तुमसे माफी माँगने आया हूँ। प्लीज, मुझे माफ कर दो, सॉरी।”

“सॉरी नहीं हरामजादे, आज तुझे मौत मिलेगी... मौत! तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरी एंजल के बारे में ऐसा कहने की।” नित्या ने चीखते हुए कहा।

गुस्से के कारण नित्या के हाथ-पैर फूलने लगे थे। उसके हाथ की नस दिखने लगी थी। डॉक्टर साहब के बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था कि नित्या किस एंजल की बात कर रही थी। डॉक्टर साहब इस बारे में सोच ही रहे थे कि तभी एक तेज हवा का झोंका आया और नित्या के बाल उसके चेहरे पर से उड़ने लगे।

जब डॉक्टर साहब ने नित्या का चेहरा देखा तो उनके रोंगटे खड़े हो गये। डर के कारण उनके हाथ पैर कंपकंपाने लग गये।

नित्या के आँख की पुतली गायब हो गयी थी। उसकी आँखों के नीचे काले-काले निशान पड़ गये थे। डॉक्टर साहब नित्या का यह रूप देखकर बहुत डर गये और वहाँ से भागने लग गये।

नित्या अभी भी पीपल के पेड़ के पास चुपचाप बैठी हुई थी। नित्या के हाथ में एक नींबू था और वह उस नींबू को अपने हाथ में घुमाए जा रही थी, वह बस शक्ति-शक्ति फुसफुसा रही थी।

डॉक्टर साहब भागते-भागते बंगले तक पहुँचने ही वाले थे तभी अचानक से वह अपने आप उल्टे होकर पीपल के पेड़ के पास जाने लगे। डॉक्टर साहब बचाओ-बचाओ चिल्ला रहे थे। नित्या अभी भी पीपल के पेड़ के पास ही बैठी हुई थी और शक्ति-शक्ति फुसफुसा रही थी।

नित्या के हाथ में जो नींबू था वह उसने बीच में से तोड़ दिया। उस नींबू में से खून निकलने लगा। जैसे ही नित्या ने वह नींबू तोड़ा डॉक्टर साहब की गर्दन अपने आप मुड़ गयी और उनकी गर्दन में से भी खून निकलने लगा। जब नित्या ने वह नींबू पीपल के पेड़ के ऊपर फेंका तो डॉक्टर साहब अपने आप पीपल के पेड़ के ऊपर उल्टे लटक गये। उनकी गर्दन में से खून नीचे टपकने लगा था और वह तड़प-तड़प के मर गये। डॉक्टर साहब ने जैसे ही अपना दम तोड़ा, नित्या अपनी जगह से उठी और शक्ति-शक्ति फुसफुसाते हुए बंगले की तरफ जाने लगी।

* * *

विराट के खून की बूँद कुछ ही देर में अब पूरी तरह से काली होने वाली थी और नित्या की रूह को इसका एहसास हो गया था क्योंकि अब वह वैश्यन की रूह को अतीत और वर्तमान के समय के बीच में कैद नहीं कर पा रही थी। वैश्यन की रूह नित्या की रूह को लेकर उसी वक्त में आ गयी, जहाँ पर विराट की रूह थी। तभी वैश्यन को याद आया कि यदि विराट की खून की बूँद पूरी तरह से काली हो गयी तो विराट की रूह के साथ-साथ नित्या की रूह भी अतीत में कैद हो जाएगी और वह नित्या की रूह को कभी भी अपनी काली दुनिया में नहीं ले जा पायेगा इसलिए वैश्यन की रूह ने नित्या की रूह का हाथ पकड़ा और उसको लेकर वर्तमान समय में आ गया।

वैश्यन की रूह को फिर लगा था कि वह सिर्फ नित्या की रूह को वर्तमान समय में लेकर आया है और उसने विराट की रूह को अतीत में कैद कर दिया पर नित्या की रूह के साथ-साथ विराट की रूह भी वर्तमान समय में आ गयी थी क्योंकि नित्या की रूह ने जाते वक्त विराट की रूह का हाथ पकड़ लिया था।

👻 👻 👻 👻 👻

तारीख 20 अगस्त 2017, रात 01:40 बजे

विराट को यह तो पता चल गया था कि वह बेगानी रूह वैश्यन की थी पर यह नहीं पता चला था कि वैश्यन की रूह को मुक्ति कैसे मिलेगी? आज वर्षा ऋतु की आखिरी अमावस्या थी और इसी अमावस्या का इंतजार वैश्यन की रूह कर रही थी। दो बजकर बीस मिनट पर वैश्यन की रूह हमेशा-हमेशा के लिए नित्या को अपनी दुनिया में ले जाने वाली थी।

जिस इमारत से विराट की कार टकराई थी, वह इमारत संकरा अस्पताल की थी जहाँ पर उसका, एंजल का और वैश्यन का जन्म हुआ था। गाँव के साथ-साथ संकरा अस्पताल भी बर्बाद हो गया था। संकरा अस्पताल एक खंडर में तब्दील हो गया था।

विराट अपनी जगह से उठा और नित्या को ढूँढ़ने लगा। उसका चश्मा टूट चुका था जिस कारण उसे सब धुँधला दिखाई दे रहा था। वह अंधों की तरह कभी दायीं तरफ तो कभी बायीं तरफ अपने हाथ फेंक रहा था। विराट पागलों की तरह नित्या को ढूँढ़ ही रहा था। तभी वह चलते-चलते गिर गया और उसके कपड़े मिट्टी से मैले हो गये।

जमीन पर गिरने के कारण उसके हाथ में कंकड़ गड़ गये थे। विराट अपने हाथ साफ करने लगा। वह अपने हाथ साफ कर ही रहा था तभी उसका हाथ किसी चीज से टकरा गया। जब उसने उस चीज पर हाथ फेरा तो उसे महसूस हुआ कि वह किसी का चेहरा था। विराट बार-बार उस चेहरे पर हाथ फेरने लग गया और उसे एहसास हुआ कि वह चेहरा किसी और का नहीं बल्कि नित्या का था।

“उठो नित्या, उठो...! तुम्हें कुछ नहीं हो सकता, उठो नित्या।” विराट ने अपने बायें हाथ से नित्या को हिलाते हुए कहा।

नित्या ने विराट के सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया। नित्या ऐसी लेटी हुई थी जैसे उसके शरीर में जान ही न हो। विराट, नित्या के पास बैठकर रोने लगा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे।

“प्लीज नित्या, आँखें खोलो...! तुम्हें कुछ नहीं हो सकता। नित्या, प्लीज मेरे लिए आँखें खोलो... अपने कुंदरू के लिए। देखो, तुम्हारा कुंदरू तुम्हारे सामने है नित्या।” विराट ने रोते हुए कहा।

जो कलावा विराट के हाथ में बंधा हुआ था वह उसके हाथ से खुल गया था पर नित्या के हाथ में अभी भी बंधा हुआ था। नित्या की साँसे नहीं चल रही थी। विराट ने रोते-रोते नित्या का सिर अपने सीने से लगा लिया।

“प्लीज नित्या उठो... तुम्हें कुछ नहीं हो सकता... तुम्हें जीना होगा नित्या, मेरे लिए... उठो नित्या!”

विराट बार-बार नित्या को उठा रहा था पर वह नहीं उठ रही थी। विराट, नित्या को अपने सीने से लगाकर रो ही रहा था तभी नित्या की साँसे चलने लगी। नित्या ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोली और विराट की आँखों में देखने लगी। नित्या को जिन्दा देखकर विराट ने उसको अपनी बांहों में भर लिया।

“तुम ठीक तो होना, नित्या?” विराट ने रोते हुए कहा।

नित्या ने कुछ जवाब नहीं दिया।

“तुम ठीक होना... कुछ तो बोलो... कुछ तो बोलो नित्या?”

नित्या ने फिर कुछ जवाब नहीं दिया।

कुछ देर रुककर नित्या ने विराट के कान में आदमी की आवाज में कहा, “नित्या नहीं... एंजल है यह मेरी... हा हा हा।”

नित्या की आवाज सुनकर विराट घबरा गया। वह समझ गया कि वैश्यन की रूह नित्या के अंदर घुस गयी थी।

विराट अब चाहकर भी वैश्यन की रूह को नहीं रोक सकता था। अब वैश्यन की रूह को कोई दैवीय शक्ति भी नहीं रोक सकती थी। विराट को कुछ पता नहीं था कि वह वैश्यन की रूह को कैसे मुक्ति दिलाएगा। अगर वह वैश्यन की आखिरी ख़्वाहिश को पूरा करना भी चाहे तो कैसे करता क्योंकि वैश्यन की आखिरी ख़्वाहिश तो नित्या को अपनी दुनिया में ले जाना था।

विराट ने अभी भी नित्या को अपनी बाँहों में पकड़कर रखा था। तभी नित्या अपने हाथ कसकर दबाने लग गयी जिस कारण विराट का दम घुटने लग गया।

विराट खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था पर नहीं छुड़ा पा रहा था।

“शुक्रिया विराट, एंजल को यहाँ लाने के लिए वरना मैं कभी उसे अपनी दुनिया में नहीं ले जा पाता। तुझे तो पता ही है मेरा, तेरा और एंजल का जन्म इसी अस्पताल में हुआ था और आज यहीं तुम दोनों की मौत भी होगी।” नित्या ने आदमी की आवाज में कहा।

“मैं तुम्हें ऐसा कभी नहीं करने दूँगा, वैश्यन। नित्या मेरी है और हमेशा मेरी ही रहेगी। तुमने जब-जब कोशिश की है हमें अलग करने की प्रकृति ने उतनी ही कोशिश की है हमें मिलाने की। तुम्हारी काली शक्तियाँ भी हमें नहीं रोक पाई।”

नित्या को विराट की बात सुनकर गुस्सा आ गया और उसने विराट को उठाकर हवा में फेंक दिया। विराट दूर जाकर गिरा।

“एंजल सिर्फ मेरे लिए ही बनी है विराट, एंजल को अपनी दुनिया में ले जाने से पहले मैं तुझे इस दुनिया से दूर भेज दूँगा।”

इतना कहकर नित्या, विराट के पास जाने लगी। नित्या को अपने पास आता हुआ देखकर विराट वहाँ से भागने लगा और भागते-भागते अस्पताल के अंदर घुस गया।

जब विराट अस्पताल के अंदर घुसा तो उसने देखा वहाँ पर सब जगह अंधेरा छाया हुआ था। अस्पताल की दीवारों में दरारें पड़ गयी थी। ऐसा लग रहा था जैसे यह दीवारें किसी भी वक्त गिर सकती थी। विराट के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह नित्या की जान कैसे बचाए?

विराट भागते हुए एक कमरे में घुस गया और वहाँ पर रखे मरीज के बेड के नीचे छुप गया। नित्या, विराट को उसी कमरे में ढूँढ़ रही थी जहाँ पर वह छुपा हुआ था।

नित्या ने विराट को ढूँढ़ते हुए प्यार से कहा, “कहाँ हो मेरे कुंदरू। मेरे प्यारे कुंदरू। यही कहती है न एंजल तुम्हें प्यार से।” इतना कहकर नित्या जोर-जोर से हँसने लगी।

“ये प्यार भी कितना अजीब होता है न कुंदरू, हमें इतनी तकलीफ़ देता है फिर भी हम चाहते हैं कि कोई हमसे प्यार कर ले।”

कमरे के अंदर अंधेरा था इसी वजह से विराट को बस नित्या के पैरो के चलने की आवाज सुनाई दे रही थी। विराट डर के मारे काँप रहा था। तभी अचानक से उसे ऐसा लगा कि किसी ने पीछे से उसके कंधे पर हाथ रखा हो। जब वह डर-डर के पीछे मुड़ा तो उसे वहाँ पर कोई दिखाई नहीं दिया और जब विराट वापस से आगे पलटा तो अचानक से उसके चेहरे के सामने नित्या का चेहरा आ गया। विराट, नित्या का चेहरा देखकर डर गया और बेड के नीचे से बाहर निकलकर भागने लगा।

“बड़ा मजा आ रहा है इस आशिक को सताने में। कहाँ तक भागोगे कुंदरू... अपनी नित्या को नहीं बचाओगे?” नित्या ने आदमी की आवाज में कहा।

विराट भागते-भागते दीवार से टकराकर गिर गया। विराट यही सोच रहा था कि वह नित्या की जान कैसे बचाए? उसे नहीं पता था कि वैश्यन की रूह को कैसे मुक्ति मिलेगी? तभी उसे सौम्या की वह बात याद आयी जो जाते वक्त सौम्या ने उससे कही थी, ‘जो कहानी जहाँ से शुरु होती है, वहीं पर खत्म होती है।’

विराट के दिमाग में बस यही बात बार-बार घूम रही थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि सौम्या ने जाते वक्त उससे ऐसा क्यों कहा था? तभी विराट के दिमाग में कुछ दृश्य घूमने

लग गये।

विराट के दिमाग में इसी अस्पताल का एक दृश्य चल रहा था। उसने देखा कि जब उसका और नित्या का जन्म हुआ था तो उन्हें सबसे पहले झूले में रखा गया था। जब भी कोई बच्चा पैदा होता है तो उसे सबसे पहले बच्चों के झूले में रखा जाता है। तभी उसे याद आया कि तांत्रिक ने वैश्यन को ज़िन्दा करने के लिए एक वूडू बनाया था और उसे वैश्यन के झूले में टांगा था। विराट समझ गया कि यदि उसे वैश्यन की रूह को मुक्ति दिलानी थी तो उस झूले और उसके वूडू को जलाना था। यह कहानी झूले और वूडू से शुरू हुई थी और उसी पर खत्म होनी थी।

विराट अस्पताल में बच्चों के झूले वाला कमरा ढूंढने लगा। वह अस्पताल के हर कमरे का दरवाज़ा खोलने लगा और झूला ढूँढ़ने लगा।

विराट, बच्चों के झूले वाला कमरा ढूँढ़ ही रहा था कि तभी अचानक उसके सामने नित्या आ गयी और कहने लगी, "क्या ढूँढ़ रहे हो कुंदरू... मुझे नहीं बताओगे कुंदरू, बताओ न, मैं तुम्हारी मदद कर देता हूँ।"

इतना कहकर नित्या जोर-जोर से आदमियों की आवाज़ में हँसने लगी। नित्या ने विराट को अपने एक हाथ से उठाकर दूर फेंक दिया। विराट जाकर एक दरवाज़े से टकरा गया। जिस दरवाज़े से विराट टकराया था वह दरवाज़ा बंद था। उस पर ताला लगा हुआ था। वह दरवाज़ा लकड़ी का था उसकी हालत बहुत खराब थी, उसमें दीमक लगी हुई।

"तू कैसे बचाएगा कुंदरू अपनी नित्या की जान... तू तो खुद अपनी जान नहीं बचा पा रहा..." नित्या ने अपनी बात को आगे जारी रखते हुए कहा, "बस दस मिनट और फिर एंजल को मैं अपनी दुनिया में ले जाऊँगा।"

नित्या ने वापस विराट का गला पकड़ लिया और विराट को बार-बार दरवाज़े से ठोकने लगी। दरवाज़ा लकड़ी का बना हुआ था जिस कारण नित्या के बार-बार विराट को दरवाज़े पर ठोकने से वह दरवाज़ा टूट गया। विराट की पीठ से खून निकलने लगा था, उसकी सफेद शर्ट पूरी खून से लाल हो गयी थी। विराट दर्द के मारे तड़पने लगा।

जिस कमरे का दरवाज़ा टूटा था वह कमरा वही था जिसे विराट ढूँढ़ रहा था। उस कमरे में छोटे बच्चों के बहुत सारे झूले रखे हुए थे। उस कमरे में लगभग तीस से ज्यादा झूले रखे हुए थे। विराट को यह तो पता था कि जिस झूले पर वूडू टंगा होगा वह झूला वैश्यन का होगा, पर विराट के पास इतना वक्त नहीं था कि वह एक-एक झूले के पास जाए और देखे कि किस झूले पर वूडू टंगा होगा।

“तू कभी नहीं बचा पाएगा एंजल को, विराट। एंजल मेरी थी, मेरी है और हमेशा मेरी ही रहेगी।”

इतना कहकर नित्या ने अपना हाथ चाकू की तरह पैना कर लिया और अपना दूसरा हाथ काटने लगी।

विराट अपनी आँखों के सामने अपने प्यार को मरते हुए देख रहा था। विराट, नित्या को बचाना चाहता था पर नहीं बचा पा रहा था। वह नित्या को अपने आप से दूर जाते हुए देख रहा था।

“हे ऊपर वाले, यदि मेरा प्यार सच्चा है तो मुझे वह दिलवा दो... मेरे दोस्त को तो मुझसे छीन ही चुके हो आप, अब मेरी मोहब्बत को मुझसे मत छीनो, यदि प्यार करने वालों को अलग करना ही होता है तो उन्हें आप मिलाते ही क्यों हो?” विराट ने ऊपर वाले से गुहार लगाई।

उस कमरे में बहुत सारी खिड़कियाँ थी जो खुली हुई थी, तभी तेज हवाओं के झोंके कमरे के अंदर आने लगे। तेज हवाओं के साथ मिट्टी की धूल भी कमरे के अंदर आ गयी और नित्या की आँखों में घूस गयी। नित्या अपनी आँखें मलने लगी।

सभी झूले तेज हवाओं के कारण हिलने लगे थे। विराट ने देखा कि सभी झूले हिल रहे थे सिवाए एक झूले के। विराट समझ गया कि वही झूला वैश्यन का था क्योंकि वह मरा हुआ पैदा हुआ था। विराट उस झूले की तरफ भागने लग और उसे उठा लिया। विराट ने झूला अपने एक हाथ में पकड़कर रखा था।

“ये तुम क्या कर रहे हो, कुंदरू? रुक जाओ!” नित्या ने अपनी असली आवाज में रोते हुए कहा।

विराट, नित्या की आवाज सुनकर भावुक होकर रुक गया।

“उस झूले को वहीं नीचे रख दो कुंदरू, वरना वैश्यन की रूह मुझे मार देगी।” नित्या ने रोते-रोते कहा।

विराट ने उस झूले को अभी भी अपने हाथ में पकड़कर रखा हुआ था। वह बस नित्या को देखे जा रहा था।

नित्या बार-बार यही कह रही थी, “वह झूला नीचे रख दो कुंदरू... वह झूला नीचे रख दो।”

विराट नित्या की बात नहीं मान रहा था।

नित्या को गुस्सा आ गया और वह चिल्लाकर आदमी की आवाज में कहने लगी, “मैंने कहा न तुझे, नीचे रख झूला, हरामजादे!”

विराट खिड़की के पास खड़ा था। जब उसे भागने का कोई रास्ता नज़र नहीं आया तो वह झूला लेकर खिड़की से नीचे कूद गया। उसके पैर में चोट लग गयी। नित्या भी विराट के पीछे-पीछे खिड़की से नीचे कूद गयी पर उसे कोई चोट नहीं लगी थी।

कार का एक्सीडेंट होने के कारण कार से पेट्रोल लीक हो रहा था, जिस कारण उसमें हल्की आग लगी हुई थी।

“नित्या तुम्हारी नहीं, मेरी हैं वैश्यन, और हमेशा मेरी ही रहेगी। वैश्यन, तुम चाहकर भी हम दोनों को कभी अलग नहीं कर पाए क्योंकि हम दोनों एक दूसरे के लिए ही बने है। मैंने हमेशा नित्या की रूह को चाहा है और रूह को चाहने वाले कभी जुदा नहीं होते। तुम दो बजकर बीस मिनट पर नित्या को अपनी दुनिया में ले जाने वाले थे न, अभी भी पांच मिनट बचे है पर उससे पहले मैं, तुम्हारी रूह को वापस तुम्हारी काली दुनिया में भेज दूँगा।”

इतना कहकर विराट ने वह झूला कार के अंदर फेंक दिया। तभी कार में लगी आग तेज हो गयी और कार के साथ वह झूला जलने लगा। कुछ ही पल बाद कार में छोटा-सा धमाका हुआ।

नित्या जोर-जोर से चीखने चिल्लाने लगी, “नहीं... नहीं... नहीं आअअ!”

नित्या के अंदर से वैश्यन की रूह निकल गयी और वह बेहोश होकर नीचे गिर गयी। विराट को बहुत चोटें आई थी पर वह खुश था यह सोचकर की उसने नित्या की जान बचा ली थी।

विराट धीरे-धीरे नित्या के पास जा रहा था यह देखने कि नित्या ठीक तो है, तभी उसे पीछे से किसी की आवाज आयी, “कुंदरू… मेरे कुंदरू... मेरे प्यारे कुंदरू...”

यह आवाज, ठीक वैसी ही आ रही थी जैसी तब आती थी जब वैश्यन की रूह नित्या के अंदर थी। जब विराट पीछे मुड़ा तो उसके होश उड़ गये। उसे साँप सूँघ गया था।

विराट के सामने सौम्या खड़ी हुई थी। सौम्या के बाल खुले और बिखरे हुए थे। जिस कारण विराट को सौम्या का चेहरा अच्छे से दिखाई नहीं दे रहा था।

“सौम्या जी, आप!” विराट ने हैरानी के साथ कहा।

“हाँ विराट मैं, वैश्यन की रूह को अभी मुक्ति नहीं मिली है विराट। उसकी रूह को मुक्ति दिलाने के लिए हमें नित्या को मारना होगा।” सौम्या ने विराट से कहा।

“ये आप क्या बोल रही हो सौम्या जी?”

“हाँ विराट, मैं सच बोल रही हूँ। मेरी बात पर यकीन करो। जब वैश्यन की रूह नित्या के शरीर में घुसी थी तो उस रूह ने नित्या के शरीर में अपना निवास बना लिया था और बेगानी रूह को तभी मुक्ति मिलती है जब हम उसके निवास को खत्म करते हैं इसलिए तुम्हें नित्या को मारना होगा।”

“पर ऐसा करने से तो नित्या भी मर जाएगी सौम्या जी!”

“नहीं विराट, मैं नित्या को मरने नहीं दूँगी। मैं अपने मंत्रों की शक्ति से नित्या को बचा लूँगी और वैश्यन की रूह को मार दूँगी।”

विराट को सौम्या पर शक हुआ और सोचने लगा कि सौम्या को कैसे पता कि नित्या के अंदर वैश्यन की रूह है, उसने यह बात तो उसे बताई ही नहीं थी।

“कौन से मंत्रों की शक्ति से सौम्या जी?” विराट ने सौम्या की आँखों में देखते हुए पूछा।

“मतलब?” सौम्या ने धीरे कहा।

“मतलब यह कि आप कौन से मंत्रों की शक्ति से नित्या को बचाओगी।”

विराट की बात सुनकर सौम्या चुप हो गयी। वह सोचने लगी, विराट उससे इतने सवाल क्यों पूछ रहा है।

“बताइए सौम्या जी, कौन से मंत्रों की शक्ति से।” विराट ने फिर सौम्या से पूछा।

“दैवीय या दैत्य?” विराट ने कुछ देर रुककर कहा।

सौम्या चुप खड़ी थी और विराट को घूरे जा रही थी। कोई भी रूह अपने मुँह से दैवीय शक्ति का नाम नहीं ले सकती थी और यह बात विराट जानता था। उसने इसी बात का फायदा उठाया था और सौम्या से ऐसा सवाल पूछा था।

“बोलिए सौम्या जी, मैं कुछ पूछ रहा हूँ, दैवीय या दैत्य।” विराट ने सौम्या पर दबाव बनाते हुए उससे पूछा।

अचानक से सौम्या के हाथ पैर के छोटे-छोटे टुकड़े होने लगे। सौम्या के बाल उसके चेहरे पर से हट गये। उसके चेहरे के भी छोटे-छोटे टुकड़े हो गये थे। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने टुकड़े जोड़-जोड़कर उसका चेहरा बनाया था। सौम्या के शरीर पर उसके शरीर के टुकड़ों के जुड़े होने की दरारें नज़र आने लगी थी।

विराट, सौम्या का यह रूप देखकर समझ गया था कि वैश्यन की रूह ने सौम्या को मार दिया था। यह वैश्यन की रूह थी जो उसके सामने खड़ी थी, जो सौम्या के शरीर के अंदर घुस कर आई थी।

"दैत्य मंत्रों से हरामजादे... आज मैं, तुझे और एंजल दोनों को खत्म कर दूँगा। तुझे क्या लगा था तू मुझे एंजल से अलग कर देगा। मैं एंजल से कभी अलग नहीं होऊँगा। उसके जिस्म पर सिर्फ मेरा हक है, समझा तू! मैं उसे अपने से कभी दूर नहीं होने दूँगा।" सौम्या ने विराट से आदमी की आवाज में कहा।

विराट कुछ कर पाता, उससे पहले ही सौम्या झट से विराट के पास पहुँच गयी और उसका गला पकड़कर दबाने लगी। विराट के गले पर सौम्या के हाथ के निशान छप गये थे।

विराट खुद को छुड़ाने की कोशिश करने लगा था पर नहीं छुड़ा पा रहा था। उसके गले के पास उसका खून जमने लगा। उसका चेहरा लाल होने लगा। वह दर्द के मारे तड़प रहा था। कुछ ही पल में विराट की साँसे थमने वाली थी।

नित्या धीरे-धीरे होश में आने लगी थी। नित्या ने अपनी आँखें खोली तो देखा, सौम्या विराट का बड़ी बेरहमी से गला दबाए जा रही थी। जब नित्या ने अपना हाथ, अपने बायें हाथ में बँधे कलावे पर रखा तो उसे सब याद आ गया। उसे सब पता चल गया था कि उसके साथ क्या-क्या हुआ था।

"कहा था न तुम दोनों को अलग कर दूँगा।" सौम्या ने कहा।

नित्या लड़खड़ाते-लड़खड़ाते खड़ी हुई, "अलग तो तब होगे न, जब हम दो हो! हम दोनों तो दो जिस्म एक जान है। भले ही हमारे जिस्मों का मिलाप कभी नहीं हुआ हो पर हमारी रूहों का मिलाप हर रोज होता है। मेरा दिल हमेशा विराट के दिल में धड़कता है वैश्यन और यही हमारे प्यार की ताकत है।"

"क्या कहा, ताकत? तो फिर देख उस प्यार की ताकत को अपने सामने मरते हुए।"

इतना कहकर सौम्या, विराट का और कसकर गला दबाने लगी। नित्या के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे विराट की जान बचाए। तभी नित्या, विराट की तरफ भागने लगी और अपने हाथ का कलावा निकालकर सौम्या के हाथ में बाँधने लगी।

नित्या ने सौम्या के हाथ में उस कलावे से सात गठान बाँध दी थी जिससे सौम्या तड़पने लग गयी थी और कहने लगी, "छोड़... छोड़ मेरा हाथ। तुझे क्या लगता है यह कलावा तुझे बचा लेगा, बिल्कुल नहीं... सब मरोगे! देख लेना।"

नित्या के समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे वैश्यन की रूह को मुक्ति दिलाए। विराट ने तो झूला भी जला दिया था तब भी वैश्यन की रूह को मुक्ति नहीं मिली थी।

नित्या कुछ सोच पाती उससे पहले ही विराट को झूले में लगा वूडू दिखाई दिया जो कि जमीन पर पड़ा हुआ था तब विराट को याद आया उसके झूला फेंकते वक्त वह वूडू झूले से अलग होकर नीचे जमीन पर गिर गया था।

"नित्या, वह वूडू उठाओ और उसे जला दो।" विराट ने नित्या से कहा।

नित्या लड़खड़ाते हुए उस वूडू के पास गयी और उसे उठाने लगी पर जैसे ही वह उस वूडू को उठाने लगी, उस वूडू में जान आ गयी और वह वूडू वहाँ से भागने लगा।

"नित्या, जाओ उस वूडू का पीछा करो, उसे जलाना बहुत जरूरी है वरना वैश्यन की रूह को कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। जाओ, उसका पीछा करो। तब तक मैं सौम्या को यहीं पर रोके रहूँगा जब तक यह कलावे की सातों गाँठ नहीं खुल जाएगी वैश्यन की रूह मुझे नुकसान नहीं पहुँचा पायेगी। जाओ नित्या, तुम यहाँ से जाओ और उस वूडू को जलाओ। जाओ नित्या... वूडू को जलाओ।" विराट ने चिल्लाते हुए नित्या से कहा।

नित्या ने आस-पास से लकड़ी का एक टुकड़ा ढूँढ़ा और जलती हुई कार से उसे जला लिया, जो उसके लिए मशाल का काम करने वाली थी।

वह वूडू हेमतपुर गाँव की तरफ गया था, नित्या भी उसी रास्ते पर जाने लगी।

"शक्ति... शक्ति... शक्ति।" सौम्या पागलों की तरह चिल्लाने लगी।

* * *

वूडू का पीछा करते-करते नित्य ठीक उसी जगह पहुँच गयी थी जहाँ पर उसका और विराट का बचपन में घर था। नित्या उस वूडू का पीछाकर ही रही थी कि तभी वह वूडू उसके घर के सामने वाले मकान के अंदर घुस गया। नित्या भी उस मकान के अंदर घुस गयी है। जैसे ही उसने मकान के अंदर कदम रखा, मकान का दरवाज़ा अपने आप बंद हो गया।

मकान के अंदर बिल्कुल भी उजाला नहीं था, चारों तरफ अंधेरा छाया हुआ था। मकान लकड़ी का बना हुआ था और अंदर से बहुत बड़ा था।

सौम्या के हाथ में बंधे कलावे की तीन गठान अपने आप खुल गयी थी। अब बस चार गठान बची हुई थी और उसके बाद वैश्यन की रूह विराट को मारने वाली थी।

नित्या अपने हाथ में मशाल लिए उस मकान के अंदर वूडू ढूँढ़े जा रही थी। जैसे ही उसे वह वूडू दिखता था, वह अपनी मशाल से उस वूडू पर हमला करती, पर वह वूडू वहाँ से

बच निकलता। नित्या के दिल की धड़कने तेज-तेज चलने लगी। भागते-भागते नित्या की साँसे फूलने लगी थी और उसका गला प्यास के कारण सूखने लगा था। अपनी तरफ से पूरी कोशिश करने के बावजूद भी नित्या उस वूडू को नहीं पकड़ पा रही थी।

वूडू का पीछा करते-करते नित्या मकान के एक ऐसे कमरे में पहुँच गयी जिसमें बहुत सारे वैसे ही वूडू रखे हुए थे, जैसे वूडू का वह पीछा कर रही थी। नित्या का सिर इतने सारे वूडूओं को देखकर चकरा गया था। उसके समझ नहीं आ रहा था कि इतने सारे वूडू इस मकान में क्या कर रहे थे।

सौम्या पाँच गठान खोल चुकी थी और अब बस दो गठान बची हुई थी। दो गठान खुलने के बाद वैश्यन की रूह सबसे पहले विराट को मारने वाली थी और उसके बाद नित्या की रूह को हमेशा-हमेशा के लिए अपनी दुनिया में ले जाने वाली थी।

नित्या के कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? वूडू का पीछा करते-करते वह बहुत थक गई थी। नित्या अब बहुत तंग आ गयी थी क्योंकि उसके लाख कोशिश करने के बाद भी वह वूडू उसके हाथ में नहीं लग पा रहा था। नित्या के वार करने की रफ्तार से वूडू के भागने की रफ्तार काफी तेज थी।

नित्या को पता था कि उसके पास अब ज्यादा वक्त नहीं बचा था। वैश्यन की रूह कभी भी सात गठाने खोलकर विराट को मार सकती थी। नित्या ने अपनी तरफ से एक आखिरी कोशिश की, उस वूडू को ढूँढ़ने की और वह उसे मिल भी गया पर जैसे ही उसने मशाल से वूडू पर हमला किया, वह वूडू फिर वहाँ से भाग गया।

सौम्या के हाथ में अब बस एक गठान बची हुई थी और वह भी कुछ ही देर में खुलने वाली थी।

नित्या फिर से उस वूडू का पीछा करने लगी और पीछा करते-करते एक दीवार से जाकर टकरा गयी। नित्या नीचे जमीन पर गिर गयी थी और उसके हाथ से वह मशाल भी छूट गयी थी। उसके सिर से खून निकल रहा था।

नित्या की आँखों से आँसू गिरने लगे। वह सोचने लगी, 'मैं विराट को नहीं बचा पाई। आज दैत्य शक्तिओं के सामने दैवीय शक्ति हार गयी। भगवान, आप ऐसा कैसे होने दे सकते हो, अधर्म की धर्म पर विजय कैसे होने दे सकते हो।'

सौम्या के हाथ में जो एक आखिरी गठान बची हुई थी, वह भी अब खुलने लगी थी।

नित्या जमीन पर पड़ी हुई थी, वह समझ गयी थी कि वह वूडू को कभी नहीं पकड़ पाएगी और वैश्यन की रूह विराट को मार देगी। यही सोचकर नित्या रोने लगी। नित्या की

आँखों में से आँसू बहने लगे थे जो सीधे फर्स के अंदर जा रहे थे।

"मुझे माफ कर देना विराट, मैं तुम्हारी जान नहीं बचा पाई। तुमने मेरी दो बार जान बचाई पर मैं तुम्हारी एक बार भी जान नहीं बचा पाई। तुमने मेरी हर वक्त मदद की और आज मैं ही तुम्हारी मौत का कारण बन गयी। पर इससे पहले की वैश्यन की रूह तुम्हें मारे, मैं अपने आप को मार दूँगी।" नित्या ने खुद से कहा।

नित्या मशाल से अपने आपको आग लगाने का सोचने लगी। नित्या अपनी जगह पर खड़ी हो गयी और मशाल उठाकर अपने आपको आग लगाने ही वाली थी कि तभी उसे विराट की बात याद आने लगी। विराट ने उससे कहा था, "वह वूडू जला दो तभी वैश्यन की रूह को मुक्ति मिलेगी, वूडू जला दो।"

नित्या को विराट की बस एक यही बात बार-बार याद आ रही थी। नित्या ने देखा कि जिस घर में वह खड़ी थी वह घर पूरा लकड़ी से बना हुआ था।

"न रहेगा घर, न रहेगा वूडू!" नित्या ने खुद से कहा।

नित्या घर के हर कोने में आग लगाते हुए घर से बाहर निकलने लगी। उस घर में आग लगनी शुरू हो गयी थी। नित्या जैसे ही घर से बाहर निकली वह घर पूरा जल गया। उस घर के साथ-साथ वह वूडू भी जल गया था।

जैसे ही वह वूडू जला, उसके अंदर से एक काला साया निकला और जल रहे घर के धुएँ के साथ मिल गया।

सौम्या जोर-जोर से चीखने चिल्लाने लगी थी। वैश्यन की रूह तड़पने लगी थी। सौम्या के शरीर के अंदर से वैश्यन की रूह का काला साया निकला और आसमान में जाकर काले बादलों के साथ कहीं गायब हो गया।

नित्या लड़खड़ाते-लड़खड़ाते वापस से विराट के पास पहुँची और उसे अपनी बाँहों में भर लिया।

👻 👻 👻 👻 👻

"यह है हमारी कहानी। विराट, एक ऐसी बेगानी लड़की की मदद करता है जिसे वह जानता तक नहीं था पर उसे क्या पता था जिस बेगानी लड़की की वह मदद कर रहा है, वह कोई और नहीं बल्कि उसके बचपन का प्यार थी। उस बेगानी लड़की ने तो बचपन में ही विराट की जान बचाने के लिए अपना दिल उसे दे दिया था और वह बेगानी लड़की कोई और नहीं, इस वक्त मेरे बगल में बैठी है।" विराट ने नित्या की तरफ इशारा करते हुए कहा।

सभी प्रेस वाले नित्या और विराट की किताब "बेगानी रूह... एक बेगानी प्रेम कथा" के साथ फोटो खींचने लगे।

👻 👻 **समाप्त** 👻 👻